

कवि-श्री माला

• तेलुगु •

कवि

तिरुपति-वैकट कवुलु

सम्पादक—अनुवादक

भीमसेन निर्मल

(प्रा. भण्डारम भीमसेन जोस्युलु)



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक

मोहनलाल बट्ट

मन्वी

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

दिल्लीमनर, बर्मा

● ● ●

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण—१ ●

मई, १९६२

मूल्य—र २/-

● ● ●

मुद्रक

मोहनलाल बट्ट

राष्ट्रभाषा प्रेस

दिल्लीमनर, बर्मा

● ● ●

इसका विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्षों पहले कार्य करके २५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मन्त्रालयों के रक्त-जयन्ती महोत्सवोंके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके महान्य कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट कव्यका परिचय 'कवि-जी मन्त्र' की पन्ध्रवीं पुस्तकमें हिन्दी-गद्यरूपमें सज्जित प्रकाशित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पठकोंके समेत आ रहा है।

यद्यपि किसी भी भाषाके सर्वश्रेष्ठ कव्य-सर्जकका निरूपण करना एक कठिन कार्य है फिर भी अपनी सीमाओंके ध्यानमें रखते हुए गण्यमान्य उन-उन भाषाओंके विद्वानोंकी रायसे ही पुस्तकका कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कवियोंके रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यका परिचय और कवि विशेषका परिचय दिया गया है। जिस भाषाके दो कवियोंका चयन किया गया है उनका चयन करते समय सन् १९२० से पूर्वका साहित्य और १९२० से बादका साहित्य—इस तरहसे एक विभाजन रखा ध्यानमें रखा गया है। इसका कारण यह है कि लगभग सन् १९२० के पूर्वके तथा १९२० के बादके साहित्यमें प्रचलित विचार-धाराएँ एक विशेष प्रकारका अलग-अलग प्रायः आती हैं।

श्री श्रीमती श्री 'निर्मल' ने प्रस्तुत पुस्तकमें संकलित साहित्यके चयन, व्यवस्थापन सम्बन्धित तथा अनुवाद का सबी सामग्रीके इस रूपमें प्रस्तुत करनेमें सहयोग दिया है। पुस्तकमें संकलित विद्वानोंके अतिरिक्त कवि श्री कादूरि वेंकटेश्वररावजीके संप्रदायोंके फलदायक 'त्रिभुवनी' कार्यालय मद्रासके सहयोगसे उपलब्ध हुआ है। संकलन आवरण डिजाइन्सके बन्धन देनमें श्री श्री एन. अश्वरथी (डीन सर जे. वे. इन्स्टीट्यूट आफ् अप्पारेंट आर्ट, बामबई) का उत्तम सहयोग मिला है उसके लिए समिति सारीकी आभारी है।

इसके अतिरिक्त कवि तथा अनुवाद्य दृष्टियोंसे विन-विश्व प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है, उनके प्रति श्री समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है प्रस्तुत संग्रह पठकोंके रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

K. Narayan

मन्त्री

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, बर्मा

अनुक्रमणिका

	पृष्ठांक
तमिळ-साहित्य-परिचय [प्रारम्भ से १९२० तक]	१
कवि-परिचय	२५
काव्य-सञ्चय	४१

[कवि-धी भासा—तेलुगु]



तिरुपति-वैफट कवुलु

अनुक्रमणिका

	पृष्ठांक
तमिस-साहित्य-परिचय [प्रारम्भ से १९२० तक]	१
कवि-परिचय	२५
काव्य-सुश्रवण	४१



तिरुपति-वेङ्कट कवुलु

तेलुगु साहित्य परिचय

[प्रारम्भ से १९२० तक]

तेलुगु भाषा

और

उसका साहित्य

• • •

भाष्य तेलुगु तेलुगु नामसे अभिहित भाषा मेक ही है। यह भाषा संस्कृत-प्राकृत-व्याप्य है या इतिहास परिवारसे सम्बन्ध हमपर विज्ञानोंमें काफी मतभेद रहा है और अब भी है। अधिकांश विद्वानोंका मत तेलुगु भाषाकी मूल इतिहास परिवारसे सम्बन्ध मालु-परिवारसे अन्य भाषाओंकी अपेक्षा दूरीयुक्त और संस्कृत प्राकृतसे व्यापक प्रमाणित माननेकी ओर है। परन्तु शैला कब हुआ और तत्पश्चात् विकासका क्रम कैसा रहा इन बातोंका परिचय प्राप्त करनेक लिख माघन नहींक बताकर है। ११ वीं शती तक की कोई सिपिबद्ध रचना नहीं मिलनी है। परन्तु कुछ शोधकर्तों व सिमाभक्तों द्वारा तेलुगु भाषाक स्वतन्त्रता बोधा-बहुत परिचय मिलता है।

शैलाकी छठी शतीके अन्तिम शतकोंमें तेलुगुमें लिखा गया एकद्वय लिखा मेक मिलता है। उन युगकी संस्कृत एवं प्राकृत भाषाओंमें प्रयुक्त कुछ तेलुगु पद्य भाषाके विकास-परिचयपर कुछ प्रकाश डालते है। इन प्रमाणों द्वारा कुछ तेलुगु विद्वान हम निष्कर्षपर पहुँचे है कि ईसाकी प्रारंभिक शताब्दियोंमें ही यह भाषा अत्यन्त-व्यवहारका साधन बनी हुई थी।

अध्ययनकी सुविधाके लिये तेसगु साहित्यको छ' रूपमें विभाजित किया जाता है। (१) अज्ञात युग या प्राइनप्रययुग (२) पुराण युग या अनुबाह युग (३) काव्य युग या शीनाह युग (४) प्रबन्ध युग या राजस युग (५) इतिहास्य युग (६) आधुनिक युग। यह विभाजन काव्यके अनुसार या विसिष्ट काव्यशैलियोंके आधारपर किया गया है।

प्राइनप्रयय युग (सन् १०३० से पूर्व)

आदिकवि नम्रय मट्टसे पूर्वके तेसुमु भाषा और साहित्यके स्वरूपका प्रमाणित आधार उपलब्ध न होनेके कारण जिस युगको अज्ञात युग कहते हैं। जिस अज्ञात युगकी भाषा और साहित्यपर प्रमाणरूपसे (एकैक रूपसे भी) प्रकाश डालनवासे साधन हैं उपलब्ध दिखाकेल और लोक मीत जो परवर्ती कवियोंसे सुन्वित है। दिखाकेल साहित्यका कम पर भाषा और देशी छन्दके स्वरूपका ही अधिक ज्ञान कराते हैं।' जिनमें सामोके नाम प्रतिप्रहीताओके नाम कुछ छन्द प्रत्यय इतिया और विधि-विशु-मात्र परिलक्षित होते हैं जिनका सम्बन्ध इतिहास परिवारसे और निधयकर तेसुमुसे पीड़ा जाता है। इसकी छट्टी छठीके बाद रैनाटि जोछ राजाओं और पूर्वी बाल्कन्य राजाओं द्वारा बुरबाह गये दिखाकेलमें तेसुमु भाषाका स्वरूप स्पष्ट बन गया। ये दिखाकेल ही तेसुमु भाषाके लिखित रूपके सर्वप्रथम प्रमाण हैं। जिनमें कुछ केवल पद्यमें ही तो कुछ पद्यमें और कुछ गद्यपद्यमिश्रित हैं। इस प्रकार इन दिखाकेलके अध्ययनसे इस बातका पता चलता है कि इनमें पहले-पहल कुछ तेसुमु नाम और छन्द और बादमें तेसुमु वाक्योंने स्वान प्राप्त कर लिया और अन्तमें पूरा दिखाकेल ही तेसुमुमें लिखा जान लगा। पद्यमय दिखाकेलमें कुछ देशी छन्दोका भी प्रयोग हुआ है। देशी कविता या लोकगीत तो उपलब्ध नहीं है पर परवर्ती कवियोंके सन्धियों द्वारा यह निरूपण किया जा सकता है कि कुछ विशिष्ट लोकगीत प्रकारमें थे।

अज्ञातयुगमें उपलब्ध सामग्री भाषा-विज्ञानके क्षेत्रकी है। विषय प्रधान दिखाकेल और संक्षिप्त लोकगीत साहित्यके इतिहासमें विशेष योग नहीं देते।

पुराण या अनुबाह युग (सन् १०३०-१४०० तक)

आदि कवि' नम्रयके बाद अगमग तीन छठियों तक कई कवियोंने संस्कृतके पुराणों और इतिहासोंका अनुबाह किया है। तीन कवियोंने यद्यपि कुछ मौखिक

१ ये दिखाकेल प्राकृत और संस्कृतकी राजभाषा माननवासे सतवाहन इन्द्रादु बृहत्सामयन विष्णुशुद्धिन आदि राजवंशोके समयके हैं। बाल्कनोके समयसे ही (७ वीं छठी) तेसुमुको बाहर प्राप्त हो सका है।

२ मुख्यरचित भाषामें (जो आजतक स्टैबर्ड माना जाता है) देशी और मार्य शैलियों में एक उदात्त महाकाव्य रचना करनेसे नम्रय आदि कवि कृतसाए।

काव्योंकी रचना की है तथापि इनकी अधिकतर रचनाएँ अनुरित ही हैं। अतः इस युगको अनुवाद-युग कहा जाता है। इस युगमें पुराणोंका अनुवाद अधिक हुआ है अथवा इसे पुण्य-युग भी कहते हैं।

बीरबारी हीरस्य राजमहोदयकी राजधानी बनाकर, आन्ध्रदेशपर राज्य करनेवाले पूर्व-बाल्मुक्य बक्षीय राजा राजराजनरेंद्र (१०१२-१०६३) की सभामें नम्रय भट्ट नामक एक महापुरुष थे। य राजवंशके कुल-गुरु थे। यामु स्वभाववाले और वैदिक धर्ममें निष्ठा इस महापुरुषने वैदिक धर्मके प्रचारके लिए 'पञ्चमवेद' महामाण्डके अनुवाद कार्यको सम्भाला। नम्रयने अपनी पूर्ववर्ती भाषा एवं काव्य रचना शैलीको सुम्भरविषय रूप लेकर आन्ध्र-बाणभुजासक की उपाधिको सारक बनाया। जन सामान्यमें प्रचलित सभी शब्दोंका अनुसीलन एवं परिष्कार कर, संस्कृत काव्योंकी शैलीमें प्रयोग करनेकी एक सुनिश्चित पद्धतिको निर्देश कर, धारा मुक्त संस्कृत बर्णवृत्तोंको अपनाकर, उस समय तक ही उत्तम काव्य ग्रन्थोंके सम्पन्न कन्नड-साहित्यसे समुचित प्रमाण ग्रहणकर, नम्रयने शैलीमें उत्तम काव्य रचनाका मार्ग प्रशस्त किया। (डा दिवाकरसे बेंगलूरवासी।)

अपने प्रभु और निज राजराजकी प्रेरणासे महामाण्डके डारि पर्व तक ही रचना कर पाए कि काठ पुस्यने इनकी सेवनी रोक दी। अरब्य पर्वमें १४२ वाँ पद्य जो नम्रयका अन्तिम पद्य माना जाता है इस प्रकार है—

“भारत राजकुलम्बत स्वयत्तर तारक हार बन्धुतन्
 वाचतर्मुक्त्ये विकलम्बत केरव गेय बाम्पुरी
 वार स्मीर हीरममुवाक्विष सुषामु विकीर्णमाच
 कर्नूर पराग पांडुबिपुरमुच बरिपुरित्तमुक्त्ये।”

(यारक अनुकी घरे उज्ज्वल और भयंकर तारक-हार पक्षियोंसे सुन्दरतर हुई। नवविकसित केरव पुष्पोंकी सुगन्धसे घाटान्वित होनेवाले समीरके धीरमसे और पत्रके बिहारे किरण स्त्री कर्नूर-परागकी श्वेत-शबियोंसे परिपूर्ण बनीं वे चरें।)

नम्रयकी रचनाका दृष्टिकोण काव्य परक है और उनके अनुवादकी शैली स्वच्छन्द है। अतः उन्होंने मूक इतिवृत्तको काव्य-रचनाके अनुकूल नहीं बनाकर नहीं बढ़ाकर, जीवित्यकी दृष्टिसे कुछ परिवर्तन कर, मौखिक काव्यके रूपमें प्रस्तुत किया है। नम्रयकी कविता प्रसन्न-कथा-कल्पितार्थ भूषित अत्रर-रम्यता

माना उचितार्थ भूषित आदि विविधताओंसे सम्पन्न तथा संस्कृत-धारा-बहुधा हीनपर भी अनन्य-मुक्तम होकर, परवर्ती कवियोंके लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुई। यद्यपि (गद्य) रचनामें भी नम्रयकी शैली आदर्श है। उनके लिए नाट्यरंगके समान नम्रयके सहयोगी नारायण भट्ट नामक एक उद्भट पंडित थे।

१ शैलीके काव्योंमें प्रारम्भसे ही प्रवाह मुक्त बचन-रचना होती थी।

शामुद्रिका विद्यास आन्ध्र राज्य विन्तामनि इन्द्र विजय सम्मन-
सार आदि ग्रन्थ भी नन्नयके लिख मान जाते हैं। आन्ध्र राज्य विन्तामनि तैत्तिरीया
पहला व्याकरण है जिसमें संस्कृत ध्रुवोंमें तैत्तिरीयके व्याकरण नियमोंका विवरण है।
पर नन्नयकी कीटिका वास्तविक मूल तो महाभारतकी रचना ही है।

राजराजनेरैयकी मृत्युके बाद बेसकी राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियोंके
कारण महाभारत की पूर्णिका कार्य रका-सा रहा। रचनामेंकि न भिन्नपर भी
इस समय एक प्रसिद्ध कवि हैं—वेमुलवाड भीमकवि। प्राप्त मुक्तकसि ही प्रतीत
होता है कि ये कवि ही पंडित कवि और छापागुण्ड समर्थ न। पातुनूरि मत्स्यन
संस्कृतमें भीरुचार्मि द्वारा लिखे गए गणितशास्त्रका पद्यानुवाद किया है।

नन्नयके समय बड़ ही साक्ष्य बाद कविद्वारा विक्रमन (१२१०-१२९)
विपट-मर्षि लेकर छेप १५ पर्वाकी रचना की। विक्रमन पहले निर्बचनोत्तर
रामायण की रचना की सकुपरांत यत्रकर सोमयाधि बन। तब हरिहर-अद्वैत-
भाव की प्रतिपादित करते हुये महाभारतकी रचना कर उसे आपने इष्ट मनवान
हरिहरनाथको ही समर्पित किया। विक्रमन मत्स्य के राजा मनुमसिधिके मन्त्री
तथा राजकवि थे।

अनुवादमें विक्रमने नाटकीय शैलीका प्रयोग किया। जीवनके स्वाभाविक
प्रसंगोंकी उद्भावना कर, जन-जन पात्रोंके बर्ताव्य एवं विकास-क्रम द्वारा उनकी
मानसिक प्रकृतियोंका विश्लेषण करते हुए, विलक्षणियोंके परिचय एवं परिष्कारका
विवर्धन कराना ही काव्यमें नाटकीय शैलीका प्रधान लक्षण है। रसानुभूति द्वारा
वाक्यके विलसो परिष्कृत करनेका यह श्रेष्ठ-मार्ग है। कौशल वत्र इस दृष्टिकोणसे
अत्युत्तम उदाहरण है इसमें कविने कथाको एक नाटकके रूपमें प्रस्तुत किया है।
उपरोक्त पर्वमें राजनीतिक दृष्टि-से-सौभाग्य अद्वैत-विषय है। पात्रोंका इतना सुस्पष्ट
विश्लेषण और निराली काव्यमें नहीं मिलता। युद्ध वर्णनमें तो बृहद वर्णन बलविश्व की
तरह प्रतिमान बन पड़ है। वर्णनात्मक न होकर, संसार शैलीमें काव्य रचनामें विक्रमन
अत्यन्त सफल हुए हैं। कम्ब-कम्बे समासोंका अमान शैली सध्योंका—ठेठ तैत्तिरीय
सध्योंका—मुन्दर प्रयोग वे विक्रमकी रचनाओं मुन्दर बनाते हैं। संस्कृत-भारती
सोनेवा डेर है। उसमेंसे समुचित भाषामें स्वर्ध लेकर, स्वर्धकारकी कुशलताके साक्ष्य
बनाया गया स्वर्ध-क्रमक है तैत्तिरीय-भारत।”

अरव्य पर्वके छाप भाषकी पूर्ण नन्नयके नामपर ही करनेवाले हैं पूर्णप्रगड
(१२८०-१३५)। इन्होंने नन्नयकी शैली पर रचनाका प्रारम्भ करके उसे
विक्रमकी शैलीपर ला लड़ा किया। इससे एमा रूपता है मार्गों व नन्नय और
विक्रमकी रचनाओंकी भिन्नताबाधे सन्धि-मत्र है।

‘स्फुरत्कव्यामु रागवधि बौपिरि बोधि निरस्त नीरवा
 वरगमुर्तं वरत्कमल बेमव बुम्भनमु स्फुसिस्फनु
 डरतर हुस तारस महुवत निस्वनमुष सेमपवा
 गरमुवेत्तिनो वासरमुषंबुतु शारववेक बुडगन् ।

(घरद् शत्रुके दिनोंमें प्रकाममान मूर्धकी अन्धमा बट गई । नीरव

मावरममे मुक्त ही कमलोंके बेमव-विक्रामके नष्ट होनेपर, हुस चारस बीर मधुप्रदों
 (धमरों) के स्वरोके मुखरित होनेपर, घरदके दिन प्रकाशित होने कम ।)

मन्त्रय मट्टके पद्यम इसकी पुसता बरलपर स्पष्ट रूपमे भासूम होना है
 कि मन्त्रयकी शैलीमे इनकी शैलीका कितना साम्य है । अरभ्यपर्वके पद्य मामकी
 रचनाके अतिरिक्त एराप्रमद्वन गुसिह पुराण रामायण हरिबंश आदि
 काव्योंकी रचना की है ।

मन्त्रय तिककन और एराप्रमद्व इन तीन कवियोंको कवित्रय कहते हैं ।
 इन तीनों महाकवियोंमें अनुवाचकी औचित्यकी दृष्टिसे छठ सेसुनु मधिमें आसकर
 एक नूतन काव्यकी ही रचना की है जिसे किमी मौखिक काव्यसे कम गौरव प्राप्त
 नहीं है । कवित्रयके हाथोंमें पढ़कर महाभारत म सेसुनु जन-जनके हृदयमें भर
 कर लिया है । कवित्रय की रचना शैली ही परबर्ती कवियोंके लिए मार्गदर्शक
 बनी रही ।

इस युगके अन्य कवियोंमें केवल मारण गोल बुडा रेडई। हृदयिक भास्कर
 पेहन नाचन लीमनाच प्रमुख हैं । केवलने बड़ीहन हम कुमार चरित को चम्पू
 काव्यके रूपमें अनुदित कर, तिक्कनके करकमलोंमें समर्पित किया । विज्ञान
 स्वरीयनु (धार्मिक ग्रन्थ) और मान्य भाषा भूपजनु (व्याकरण ग्रन्थ) इनकी
 अन्य रचनाएँ हैं । तिक्कनके शिष्य मारणन मार्कंडेय पुराण का अनुवाच किया
 है । गोल बुड रेडईने अपन पिताके नामपर, रामायणकी द्विपद-छन्दमें रचा है ।
 एक प्रवाद है कि रंगनाच नामक किमी कविने इसकी रचना की है । बीमे पद काव्य
 रंमनाच रामायणम् के नामसे ही प्रसिद्ध है । इस काव्यमें अनुमाति कालनेमि
 सती सुभोचना आदि अथास्मीर्तीय प्रमय है जो मूककपाक मीन्दर्यमें पाए जाते लमान है ।
 एमा प्रसंग होना है कि य उपकथाएँ शायद आश्रम लोचर्गतोंके प्रभावसे काव्यमें
 आई हैं । इस काव्यके वर्णन बड़ ही गम्भीर, पात्रोंका चरित्रचित्रण सुन्दर और
 शैली मय बन पाई है ।

भास्कर रामायण क वर्ता हृदयिक भास्कर उनके पुत्र मस्तिवायुन
 मट्ट शिष्य कुमार उरवेव मित्र अय्यनार्य भन जने है । स्वाभाविक प्रभावमे
 बुक्त होनेपर भी काव्यमें अनेक कर्तृत्वक कारण मभव ग्रन्थमें मकनी
 नहीं है । शैलीकी शिखता स्पष्ट परिलक्षित होती है ।

बिहारीलाल नेहरू के काव्यालंकार बुद्धामणि में साहित्यिक विषयोंके साथ-साथ व्याकरण और कवियों की रचनाओं की रचना है। राजशेखर कविके विद्वत्ता-प्रशिक्षण के आधारपर मचनने 'क्यूरवाहु कविप्रभु' की रचना की। 'नाचम दीनमाच' का उत्तर हरिबंधन ही उपलब्ध है। इस एक काव्यके आधारपर ही इन्होंने कविप्रभु के कवियोंके समकक्ष माना जाता है। वस्तु की एकता रखपीयथ नूतन प्रबंधोंकी कल्पना और निबन्ध, माच पंडित्य भादि कई गुणोंसे युक्त यह काव्य प्रबन्ध युगकी रचनाओंका मार्गदर्शक है।

भाचार्य अक्षयचर्ककी गणना इस युगके पंडित कवियोंमें की जा सकती है। इनका जिला महाराष्ट्र उपलब्ध नहीं है। अक्षयचर्ककारिकावलि के नामसे तेजगु व्याकरण संस्कृत श्लोकोंमें जिला है।

बहुमका प्रतिष्ठार मुक्तावलि अमरेश्वरका विक्रमसेन काव्यमु निपुरास्तकका निपुरास्तकोदाहरणम् इस युगके अन्य काव्य है। जराहरण काव्यों में निपुरास्तकोदाहरणम् का शीर्ष स्वान है।

इस युगमें ही कवियोंका अपना विधिष्ट महत्त्व है। ईशाकी लगभग ११-१२ वीं शतीमें कर्नाटक प्रांतमें बसवेश्वर द्वारा संस्थापित और हीन संप्रदाय ने ब्राह्मणोंको बुरा प्रभावित किया। उन विद्वानोंके प्रचारके विषय अनेक कवियोंने कवच उठाई। देवी इतिवृत्त देवी कल्प और देवी धापा—इन्होंने धावन बनाकर बीरवी कवियोंके बन्धनों को धारणके माच फेंकाए। इन कवियोंने धापा और माचके क्षेत्रमें अत्यधिक स्वच्छन्दता दिखाई है। सचमुच इन्होंने जन-कवि बने चले हैं।

इन ही कवियोंमें राजकवि गणेशचंद्र का नाम सर्वप्रथम लिखा जाता है। इनके समयके बारेमें काशी मतमत्र रखा है। कविपत्र सिद्धामणि की उपाधिते घोषित नसेचौडन कुमारसम्भवम् नामक उत्तम प्रबन्ध काव्य की रचना कर अपने गुरु अक्षय मल्लिकार्जुनको समर्पित किया। काव्यके प्रारम्भमें काव्यशास्त्र उद्घाटन नामक दो संस्कृत कवियोंके उल्लेख हुआपर भी यह काव्य किसीका अनुवाद नहीं है। इन काव्यके वर्णन संस्कृत सुन्दर और हीनी यम्भीर है। रचनाधीकीके कारण इन काव्यको तेजगुका पहला प्रबन्ध काव्य माना जा सकता है।

मल्लिकार्जुन पंडिताराध्यके सिद्ध अनेक काव्योंमेंसे चिकित्साचार्य ही उपलब्ध है। इसमें शिवा! अजा! खा! महीषा! के सम्बोधनारम्भ मुकुटों

४ एक विधिष्ट प्रकारका काव्यबद्ध है जिसमें विभक्तिपूर्वक क्रमसे पद्य होते हैं।

५ उत्तममें सभी पद्योंके अन्तमें संबोधन एक वैया होता है।

पर सीकड़ों पर है। यह ठेसुगुका पहला शतक है। इस प्रथम पाकुपत शैल सिद्धान्त और शिबरीसाका विस्तारपूर्वक वर्णन है।

द्विपद रचनामें जनय और शिबकविचमूहके शिरोमणि पारुक्कुरिकि सोमनाथने भाण्ड्य सस्तुय और कदक भाषाओंमें जनक प्रथम किये हैं। इनमेंसे बसव पुराणम् पंडिताराध्य चरित्रम् सोमनाथस्तव अनुभवसार बुपाधिप सतकम् और बसवोवाहरणम् अपेक्षाकृत प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। शिबपारम्यको सिद्ध करनबासी जनक प्रसिद्ध कयाएँ इन ग्रन्थोंमें हैं। सोमनाथकी कवितामें अद्वितीय प्रवाह है जिसकी तुलना बिरिजदी (अक्षप्रपाठ) से की गई है। द्विपद छन्दको लोकप्रिय बनानबाके और शैल शैलके सिद्धान्तोंको जनता तक पहुँचानबाओंमें सोमनाथ ही सर्व प्रथम है।

इस युगमें ही जिसे प्रारम्भिक (आदि) युग कहा जाता है—'मार्ग कविता' और बेधी कविता के ऐसे उत्कृष्ट उदाहरण मिलते हैं कि इस युगको साहित्यकी प्रारम्भिक कहा माना नहीं जा सकता। एकाध बेधी रचनाको छोड़ अन्य सभी अनुबाव ही हैं पर य अनुबाव औरत न होकर, मौलिक रचनाओं जैसे लगते हैं। बोबावटी तीरस्व राजमहेडीमें उद्भूत भाण्ड्य कविताकी अवस्थि नस्तूरु बरयल बहुकि आदि स्वानोंमें फँक पड़ी और समग्र भाण्ड्य प्रान्तको अपनी निर्मल धाराओंसे तुष्ट करन लगी।

श्रीनाथयुग या काव्य युग (सन् १४००—१५०० तक)

एराग्रगके बाद पुराणोंके अनुबावकी औरसे ध्यान हटकर काव्य रचना मयाकरा मौलिक काव्य रचना की ओर रुष्टि गई। १५ वीं शतीसे १७ वीं शती तक भाण्ड्य साहित्यका स्वर्णयुग माना जाता है। १५ वीं शतीको प्रबन्ध 'पूर्व युग' कहते हैं या श्रीनाथ युग। इस युगके साहित्यकासम भाण्ड्यस्यमान मूर्यके समान कवि सार्वभौम श्रीनाथ बिराजमान हैं तो भक्तिमाधुर्यकी शैलक ज्योत्सना बिसरनबासे सुधाकर हैं महाकवि पीतल। दोनोंन अपनी-अपनी रचनाओंसे प्रबन्ध युगके बीच बाएँ।

इस युगके युगपुरुष ह महाकवि श्रीनाथ। इस कवि सार्वभौमका जीवन काल ई सन् १३८०-१४६ तक माना जाता है। य अपने सोकहूवे साकसे ही लिखन समय गए और मृत्युपर्यंत लिखते ही रहे। अत्यन्त विमर्सी और वैभवघासी जीवन बितानके बाद इनके जीवनक अन्तिम दिन दुखर रहे।

श्रीनाथकी रचनाओंमेंसे अमार नैपथ श्रीमसह कासी-सह हर विमर्स श्रीनाथियम पस्नाटि शैल चरित्र आदि रचनाएँ प्राप्त हैं मरत्तराद् चरित्र शाकिबाहन सप्तधति और पंडिताराध्य चरित्र आदि

रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं। स्वच्छन्द प्रकृतिके इस महाकविने अपना रचनाक्षेत्रमें अप्रतिम प्रतिष्ठाका प्रदर्शन किया है। अनुवादोंमें भी मूल इतिवृत्तको एसा चमका दिया है कि वे मौलिक-वाक्यसे कमने लग हैं। पाश्चित्यपूर्व प्रौढ़ वीरोंके साह-साह देखीं रचनामें भी आप सिद्धहस्त हैं। विद्वद्दीर्घ्य मान गए नैयद्य और अय पिय माने गए बाघी लख की रचना करनेवाले इस कविबल द्विपद नामक ऐसी बेब छन्दमें पल्लाटि और जरिज की रचना की। छीसमू नामक ऐसी छन्दके आप मास्टर माने गए हैं। विभिन्न अक्षरोंपर कहे गए इनके मुक्तक बहुत प्रसिद्ध हैं। एक उदाहरण लीजिए —

तिरियलखानिनि जेतुमु
 लखमुक बरियाबरेक बपबेडलाडम्
 तिरियेमुन किहुराङ्गा
 परमेष्ठा । बंबाविडुनु पार्वति चालम् ।'

(सुन्दर जिल्लेके पल्लाडु इलाकेके बाई पार्नेका अत्यन्त अभाव है जाते हुए श्रीनाथने कहा—श्री संपत्तिवालेका १६ सौ स्त्रियोंके बिबाह कर केना समुचित है। पर बिबारीके दो दो स्त्रियाँ क्यों?—हे धंकर। तुम्हारे लिए पार्वती बस है बगावो जोर दो न।)

इस महाकविने आन्ध्र देशके प्रत्येक राज दरबारमें अनन्ध गौरवकी प्राप्ति किया। मही नहीं बल्कि रेड्डी राजाओंके यहाँ था। इनका कनकामियक भी हुआ था। ठेकुमु साहित्यके इतिहासमें इतना बियासी और वैभववाली व्यक्तित्व किसी बूढ़े कविका नहीं हुआ। श्रीनाथकी कविता हरके बटाजूटसे विनिर्गत गंगा-तरंगेकी भाँति अचिरस बेय तथा पवित्र वाक्यारा लिए हुए है जिसमें अन्वगाहन करनेपर पाठकका मन परिमृप्त हो जाता है।

महान् भक्त और महाकवि चम्पैर पोतन्न श्रीनाथके सम सामयिक ही नहीं रिस्तेमें वाले माने जाते हैं। इन रिस्तेपर आधारित कई पापारुँ छोड़-मचारमें हैं। पोतन्न अम्बुमागवतके अतिरिक्त घोविनी बंधकमु और श्रीराम विजयमु नामक दो अन्य काव्योंकी भी रचा है। संस्कृतमें २ हजार श्लोकोंमें परिष्पाट महाभावकल पुराणको पोतन्न ३ हजार पद्योंके महाकाव्यके रूपमें बाधा है और श्रीरामचन्द्रजीके चरण कमलोंमें समर्पित किया है। निम्नवार सुनोहर पोपप के लिए अपनी काव्य कन्याका अन्नम बरेयोंके हाथ न बचकर य महारामा बँधनमर हक बलाते रहे। एक बार इन्होंने कहा —

बालरत्नलताक लक्ष्यस्त्रम कीमल काव्य कव्यकम्
 कूलकम्मि यण्डुनु मुहु मुविचुट संदे

सत्त्वबुल हाकिमुर्मन नेमि ? पहलातर लीनल कन्वमूलकी
हाकिमुर्मन नेमि ? निजबारमुसेबर पोवचार्यने ।

(बाहरनाल (आग्र) बूयके नव पन्सवनी कोमल काष्प-कन्व्याको
नीचके हाव बंधकर, (वेष्पावृत्ति-सी) उम भाऊगदी कालकी अपेसा धपन बास-
बन्धोके पेट भग्नके सिध, सत्कवि क्लिशन बनें ठी क्या हुआ ? जंगलाने कबमूल
बोर में ठी क्या हुआ ?)

आन्ध्र महाभागवन भक्ति मीर माधुपका भातर है । माहिरियक
महलके साप ओकमियवार्ने भी इस काष्पका सानी लही है । जनम्य भक्तिका निजपव
करनबाबा बहु पय ऐसे पद्योमेसे एक है जो सामान्य जनताकी बबानगर है ।

बंधार मकरंभ माधुपंभुल हेतु
मधुपंभु बीभुल यवतनुलकु ?
निर्मल रंभाकिनी बीचिकल कु
रार्थव बननें तरोगिगुलकु ?
समित रसाळ वस्तव्य बाधिरी बीचकु
कोपिल सेधने कुटजमुलकु ?
पुनें कुं चंद्रिका स्फुरित बकीरंभ
बन्वनें साह मीहारमुलकु ?
बंधुबोबर दिग्ग पवारंभिर
चित्तनामुल पाल बिधेय मत
चित्तमेगैति नितरंभु पेरलकुं
चिनुतनुचशील ! पञ्चकुबेपुनेंल ?

(बंधार पुष्पके मकरंभके माधुपका प्वाव लेनबाका अमर नीमने पेड़ीकी
मीर आग्रमा ? (कभी लही) । मन्दाकिनीकी निर्मल रंभाकिनीकेपर बोलन
बासा राजहंस कम छोट लही-जामोमें बाएमा ? कामल आग्र-वत्सलकेपर मूग्ध
होनबासी कोयल क्या माधुर्म बूबोके पाम बाएमा ? पूबिजाके उज्ज्वल चन्द्रकी
सीलम किन्बोकी लालबासा बकीर क्या आमनें बहोपर रंजिमा ? इर्मा प्रकार
यी दिग्गु भगवानके चरन-कमलोकीं मुभाके पाजने मत-नित्त कुमरे विपयोपर कैने
बासकन लीमा ?)

हुठ बारागोमि वीनलके भागवतके कुछ भाव लल हों गए । उम भाषोको
एर्बूरि सिगन गंगन बीर बक्तिगल्ल माग्ग न पूरा किया ।

इम मुयमें इन दोनों मूर्धन्य बदिभाके बार विस्तकमरि पिन बीरकमल
स्वान है । इनके किने काष्प-कन्वोमें मृंगार माकुल्लममु मीर बीमिनी भागतमु

(बर्ही (हिमालय पर) जाकर, जावागको भूमतवासे विलरोसे निगुण मरनाके समूहने षषल तरंगाके रायदाको मुरंवे स्वर माग पंग फीकाकर नाचनवासे मयुराके समूहस मुकन और पवतोंमें विचरनवासे हबिनियोके सुंसे दिलाए जाने वासे बुद्धीवासे धीठाचसका उस बाह्यगने देना ।)

भुवन विजयके साठ प्रसिद्ध कवियोग (अष्टविगय) देहूत छत्रमुष देहूत बड़ माग जाग हूँ । रामकुने इनका बीसा सम्मान किवा बीसा सम्मान सत्तारके पापय ही दिखी और कवि को भिला ही ।

भादव्यागारि मस्तनवा राजयत्तर चरिचमु नरिदिम्मतवा पारिवाता-पहरणमु पूर्वदि कविका काळहरिताहात्म्यमु और वाळहृस्तीस्वर छत्रकमु नृसिंह कविका कविकर्भरतायनमु तास्वपाक विभसना परमयोगिविलासमु और तथा परिचयमु अयत्तराजु रामभर कविका 'रामाभ्युचवमु तेनाति रामकल्पना पांडुरंग माहात्म्यमु आदि प्रसिद्ध काव्य हूँ ।

कहते हूँ नासिकापर लिखें नए मिय किचित पुन्कर नयके कारण नरिदिम्म मुकट्ट (माक) लिम्मा के नामसे प्रख्यात हुए ।

“नानातुलवितान वातवज्ज नामदिचु तारंपणे
 ज्ञानप्रोत्पन्नवदंभु संवकलि क्ककाळं वषंबंदियो
 वा नासाहसि भूमि सर्वनुमनस्तौरभ्य संवातरी
 पुणे केकवमासिका ममुकरीपुंअमुविर्वकळन् ।

(विभिन्न पुण्योकी सुपधियोसे प्रसन्न होनेवाला घमर मुस क्यों गही चाहता ? इस बीजके मारे बोर तप कर, जपा पुप्य स्वीकी नासिका बन गया । तब तब प्रकारके पुमनोके छौरमके योग्य बन जयने बीक्षणमासिकाकपी ममुकरीसनुहको अपने दोनों तरफ रखलिया ।)

नरिदिम्मके पारिवातापहरण काव्यमें भीहृत्पाकी महिपी छत्यभामाके प्रणय-भातका हृदयवम वर्धन किया गया है । भीहृत्पपर नुठ होकर सरया उन्हें काठ मारठी है तो कवि कहता है—

अलमस्तागत वासवादि नुरपुजा नाअर्नर्बं तन
 र्भुलनस्तायुधु पक्तांदि गिरमज्जो वामपार्वजुतन्
 तोलप्योते स्थापि म्दुलयु वाचुत् नेरमुस्सेय वे
 रलुकन् बोरिनयहि कास्तकुचित ध्यापारमुस्नेतुरि ?

(बह्या इन्द्र भादि देवताओंसे पूजित मन्मथके अलक (वीहृत्प) वार्से परस डबक दिया । बीसा होता स्वाभाविक ही है क्योंकि कारण कउ ह्मवाकी प्रियाको 'उचिन-अनुचितका

दिमभि मूकम इस युगके अलम्ब प्रनिमानादी बनमु और प्रमावीनपद्युम्नमु नामक दो प्रबन्ध

नामक इयबि काव्यकी रचना की है। कठपूर्णादियम् कबिजी भाबुक वस्वना और अद्भुत-कमा-निर्वाह-कीनसका उल्लसत प्रमाण है। मातों यह एक पद्यात्मक उपन्यास ही है। राजबपाइबीयम् में समग्र काव्यक प्रत्येक पद्यमें रामायणपरक तथा भारतपरक शानों और सगनबासे बर्न मिलने ह। दाह्यमेय और बर्नलेयक महारे, दो मिश्र कयामोंका निर्वाह करना कबि की बौद्धिक प्रतिभा तथा उद्भ्रम पांडित्यका प्रमाण है।

सचमुच ही कृष्णवेशरायका युग आन्ध्रपरस्वराजे काव्यके अनुकूल लग रहा है। महापराक्रमी एवं कभी भी पराजित न हुनवाक उक्त महाराजन काव्यकवनीकी अपेसा माहित्यसम्मीकी ही बर्नता की है।

रामराजभूपयवबि श्रीकृष्णवेशरायके रामाह रामराज (तस्किकोट सन् १५६४-१५५६ के युद्धक प्रसिद्धवीर) के दरबारमें ब। इन्होंने सचमुचिच नामक श्लेष-काव्य हरिवचन्द्र मत्तोपास्मानम् नामक इयबि काव्य और नरस भूपासीयम् नामक कवय प्रत्येकी रचना की है। रामराज-भूपय कबि उक्त कौटिके कबि पंडित और आचार्य ब।

तेसुनु माहित्यकी सबप्रथम कबयित्री आत्मकूरिमास्त भी इसी युगमें हुई। आत्मकूरिमोस्तन रामायण की रचना कर, आन्ध्रमाहित्यमें अपन छिजे यमर स्थान बना दिया है। मोस्तक रामायणकी धर्म प्रौढ़ है प्रबंधमें किय यय बचन मनोहराई बन पड़ है। विमम्ब नामक एक कबयित्री न सुभद्राजस्याजम् नामक द्विपर काव्यकी रचना की है।

तिरुपति बंकास्वर (बाकाबी) क मन्दिरमें सञ्जीवन करनवाक महामन्त्र ब्रह्मसाचार्यका उल्लसत रूपर हों चुका है। पेर तिरुमसाचार्य विभक्त बिन तिरुमसाचार्य और तिरुवेण्ण्ड्य आदि इन्हीके परिवारके सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। तिरुवेण्ण्ड्यने काव्य प्रवाचिका और 'ममरकोय' की टीकार्य लिखी है। वेसमपुडि बेंगयामात्यने श्रीकृष्णकर्ममूठ का सुन्दर पद्यानुबाह किया है।

इस युगमें ऐतिहासिक महत्त्वक कुछ काव्य लिख गए हैं। इनमें कासे सर्व्वय का काफनाय राजबंभाबळि (बरगलके प्रतापरदरकी दासा) अनुकूल वेदव्यका 'नरसतिविजयम् (विजयनगरके आबीगी राजात्रावा इतिहास) और कुमार पूर्व्वटिका कृष्णराय विजयम् (श्रीकृष्णवेशरायके जीवनम संबंधित) मुख्य है। य काव्यग्रन्थ कस्तूरकी राजउत्तीर्णकी आन्ध्रपर सित गय है। काव्य होनपर भी इनमें कई ऐतिहासिक मत्स्य भरे पड़ हैं।

विजयनगरके पडनके पाद रक्षिकके बहमनी राजबंभक मुमसमान आरसाहों म भी नेस्यु माहित्यकी श्रीकृष्णमें प्रसंगनीय योग दिया है। कंतुकूरि ररकबिन निरतुपोवाक्यानम् बनावनाल्लयम् मुपीब विजयम् की रचना की है।

वंशान्तरके बाद मधुरा और पुनर्नकोट राज्य पच्छिमों और कवियोंके आश्रय स्थापन हुए। मधुराके नायक राजाओंके सम्मम कई पद्य-ग्रन्थोंका प्रणयन हुआ है जिनमें समुद्रम् बेकट इच्छ्य नायकका जैमिनी मारुतम् कुबुति बेकटाचलपठिका मारुत भागवत बचनम् तुपाकुल अगन्त मृपालका विष्णु पुराणम् सुन्दर काण्ड और भगवद्गीता आदि उल्लेखनीय हैं। पद्य-काव्योंमें कामेश्वर कवि द्वारा सत्यभामा सारत्वनम् बेकटइच्छ्य नायकके अहस्या सचदनीयम् पश्चिका सारत्वनम् शयम् बेकट पतिक्य शाप शशाक विजयम् मुद्गुफ्टनि (कृष्मिनी) का पश्चिका सारत्वनम् प्रसिद्ध है। ये सभी उल्लेख शृंगारके काव्य हैं। इनमें शाप शशाक विजयम् से ही बसलीक शृंगारकी हद कर दी गई है। एतिहासिक बचन (मद्य) ग्रन्थोंमें रायबाचकम् प्रमुख है।

पुनर्नकोटके कवियोंमें गुरुरपादि बेकनका नाम सर्वप्रथम सिमा जाता है। इन्होंने आन्ध्र भाषापर्यन्त नामक शब्दकोश तथा मम्मू पुराण रचनाधीयम् रायबाच प्रदक्षि आदि ग्रन्थोंकी रचना की। राय रचनाय नायकने (१७६९-१७८९) पार्सी परिणयम् नामक प्रीति काव्यकी रचना की। ये एक उच्चमट पश्चित्त प।

मैसूर राज्यके आन्ध्र कवियोंमें पारुवेकरि कदिरिपति प्रमुख है। इन्होंने मुरुसपति नामक काव्य-ग्रन्थ की रचना की है। इस काव्यमें उस समयकी सामाजिक परिस्थितियोंका धर्मीय चित्रण मिलता है। गद्य-काव्योंमें बल्लुने बीरराजुका 'बचन मारुतम्' प्रसिद्ध है। मञ्जराजुका 'हालास्य माहात्म्यम्' भी एक सुन्दर रचना है।

यह न समझना चाहिए कि इस युगमें केवल दक्षिणी आन्ध्र देशमें ही साहित्य-रचना होती रही यद्यपि मध्य आन्ध्र और तेलंगानामें भी उच्च कोटिके साहित्यकी सृष्टि हुई है।

१८ वीं शतीके मध्य आन्ध्रके कवियोंमें शार्ले बेकट नायक कविचार्वरीयम कृष्मिनीय तिम्यकवि जलकवि आदिषुम् सूरकवि कंकडि पापराजु, बिट्टकवि नापयल कवि प्रमुख हैं। तिम्यकविक अन्धतेनुम् रामायणम् (टेठ तेनुम्) और ठठ तेनुम् ही लिप्या मया नीला सुन्दरी परिणयम् आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। एतन्म लक्ष्मण कवि एलकृष्ण बाकसरस्वती (पुरय ही है!) और पुष्यगिरि तिम्यमने मगूरिके मुभापितोषय पद्यानुवाद किया है। इन तीनोंमेंसे लक्ष्मण कविकी रचनाका ही अधिक प्रचार हुआ। मञ्जरीयिरी आन्ध्र कवि और पित्रडि एल्लनायक वेदास्तारार और पोथ्य अरिणम् नामक दो काव्य लिखे हैं जो ईसाई-धर्ममें सम्बन्धित हैं।

१९ वीं शतीके कवियोंमें शिल्पु इच्छ्यमूर्ति शास्त्री मञ्जराक पार्सीस्वर शास्त्री मोरिनायम् बेकटकवि विद्यय रूपसे उल्लेख्य हैं। इच्छ्यमूर्ति शास्त्रीने सर्व कामरा परिणयम् पञ्चनयन आदि काव्योंके अतिरिक्त संस्कृतमें हरिकारिचार्द

मानसे एक आन्ध्र व्याकरणकी रचना की है। पार्वतीस्वर धाम्नीन कनकग बन्धी प्रन्व सिद्ध है जिनमें राधाकृष्ण सम्बाधम् अधिक प्रसिद्ध है। वेदक कविने जिघृषाक बध' और 'बाम्नीके राधायक'का सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत किया है।

इस युगकी कवयित्रियोंमें हरियोज्ज बेंकमान्त्र नामक कवयित्री प्रमुख है। इन्होंने वेदकबल महात्म्यम् ज्ञान वासिष्ठ राधायधम् और राधायपसारम् नामक ग्रन्थ लिखे हैं।

इसी समयके उत्तमानक कवियोंमें सुप्रसिद्ध माधवरायम्, परदुरामपल्लव विषमूर्ति, मरियञ्जि कवि उल्लेख योग्य है। माधवरायम् जटप्रौष्ठ रियासतके साधक थे। उन्होंने बन्धिका परिणयम् की रचना की जिसमें श्लेष यमक आदि शब्दात्मकरोका सुन्दर निर्वाह किया गया है। कियमूर्तिन यौवनक विलोमें रति मन्थन विद्यामम् नामक प्रबन्धकी रचना की। बुद्धावस्थामें आपन सीतारामान्जनय सम्बाधम् नामसे अद्वितीय वेदान्त-ग्रन्थ की रचना की। आपके पुत्र राममूर्तिने गुण चरित नामसे एक वेदान्त-ग्रन्थकी रचना की है।

राज्ययुगमें शूवार रमका जो प्रवाह उमड़ा उमन अपनी रस-धारसे धार युमका आप्लावित कर दिया। यह प्रवृत्ति अस्पर्शताकी ओर अधिक मुकी हुई थी। राजाओंमें जा निष्कम्पता और विलासिता फैल रहा थी उसीक प्रतिबिम्बि य य शृंगार-काव्य। काव्योंमें हृदयपथकी खसा बुद्धिपथ ही विरप प्रबल था। जन धार पथकी अपेक्षा कलापस ही अधिक निखर उठ्य था। परिणाम-स्वरूप सभी रचनाओंका एकमात्र लक्ष्य पाणिन्य प्रदशन ही रह गया था। यह युग यमकाव्य-साहित्य के लिए स्वर्ण युग है। बीहियोंकी संख्यामें यद्यमान लिख गए। इसी समय गद्य-साहित्यका भी प्रारम्भ हुआ।

प्रान्त तो तमिल था और राजा महाराष्ट्रीय दासक ब फिर भी इस कासमें आन्ध्र-साहित्यकी अपूर्व योद्धि हुई।

तथाऊर, मध्य यज्ञक विजयनगर, बीहियोंकी बेंकमिरि धारिके अति लिका मन्थ देमके सभी छोट-मोट राज्य-रियासत कवित्तके क्षय बन गए।

आधुनिक युग (१८७५ से १९२० तक)

मनु सत्तावतता स्वतन्त्रता-मुक्त भारतीय साहित्यमें ही सब जापरणका सन्देग लाया हो एकी बात नहीं है बल्कि इसके परिणामस्वरूप पारचाय्य सम्प्रदायकी बहाबोधसे मूर्ख फरकर भारतीय स्वदेश और स्वभाषाकी ओर ध्यान देन मग। ममय राज्यमें उद्बुद्ध यह नवीन बनना राजनीतिक धार्मिक सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्रोंमें अभिप्लवण होन लगी। राजनीतिक क्षेत्रमें क्रांतिवाद रूपमें धार्मिक क्षेत्रमें जाय ममाजके रूपमें सामाजिक क्षेत्रमें ब्राह्म समाजके रूपमें व्यक्त हुई। विचारोंकी अभिप्लवितता माधन साहित्य ही है। अतः सब जापरणका मुख्य प्रभाव यथाके

प्रत्येक प्रान्तके भाषा-साहित्यमें परिचलित होने लया। एक ही तरहके भाषाको मिल-मिल भाषाका नामा पहनाकर व्यक्त किया जान लया।

आधुनिक युगी सभी प्रवृत्तियों एवं आन्दोलनोंका सम्यक प्रभाव तेलुगु साहित्यपर पड़ा।

तेलुगुके आधुनिक साहित्यसे परिचय प्राप्त करनेमें पहले दो ऐसे अंग्रेज महानु भाषाके नामोंका उल्लेख होना चाहिए, जिनका मान्य शिर शशी है। सर सी पी. ब्राउन महाशयन जबक परिचय कर तेलुगुकी अनेक अप्रकाशित एवं जीर्ण प्राय पुस्तकोंका पुनरुद्धार किया तेलुगुका एक व्याकरण बनाया और अंग्रेजी-तेलुगु, तेलुगु-अंग्रेजीके सम्बन्धोंसे तैयार किए। दूसरे महानुभाव हैं कर्नल वॉलिन मैकन्नी जिन्होंने नाँव-नाँव बूमकर प्राचीन पुस्तकोंका उद्धार किया मुष्ट इतिहासपर प्रकाश डाला और कवियोंकी मुष्ट रचनाओंको प्रकाशमें लानका महान कार्य किया।

आधुनिक युगके प्रारम्भमें ही विजयपुरि (१८०९-१८१२) नामक एक बड़े विद्वान्ने बाष्प-व्याकरणम् की रचना की जो इस भाषाका परिनिष्ठित (स्टैण्डर्ड) व्याकरण माना जाता है। उस व्याकरणके लक्ष्यके रूपमें नीति चमिका (परुषतण्म) नामक पुस्तकको लक्ष्यमें लिखा।

१९ वीं शतीके शुरुं चरणका आरम्भ ही आधुनिक युगका उष काल है। पाश्चात्य प्रभावसे तब चेन्नानी जो लखर उमड़ पड़ी उसके परिणामस्वरूप साहित्यमें विभिन्न शैलियों और शैलियोंका आरम्भ हुआ। तब साहित्यके लिए शीरेषात्मक और पद्य साहित्यके लिए विरपति-बैकट कविन युग पुस्त के रूपमें मदीन साहित्यका भीषणोद्य किया। तेलुगु कविताको पाश्चित्यके कठोरसे मुक्त कर, उसे जनसामान्य तक पहुँचाकर, फिरसे उसे तब जीवन देनेवाले इन महाकवियोंके दिव्य-मधिष्योति आधुनिक मान्य साहित्य पद्य पड़ा है।

मान्य साहित्यमें प्राचीन सम्प्रदायोंके अनुकूल भाषा और भाषाके कविता करनेवाले जात्र भी हैं। १९ वीं शतीके अन्तिम चरणमें और २ वीं शतीके प्रथम चरणमें इन प्राचीन सम्प्रदायवादी कवियोंकी संख्या अधिक थी। इनमें श्री श्रीपाद कृष्णमूर्ति धारसी (१८९६-१९९१) का विद्विष्ट स्थान है। धारसीजीने रामायण भारत और रामचर इन महाकाव्योंके अतिरिक्त ही से अधिक काव्योंकी रचना की है। आप राजमहेश्वरीमें रहते थे। आपकी कविता विषय और शैलीमें एकदम प्राचीन करे की है। शीर्ष समासेसे मरी हुई होलपर भी आपकी कविताओंमें अनुपम प्रवाह है। श्री बैकटधारसीजीके बाद आपको राजशिविके परपर नियुक्त कर मान्य सरकारल आपका सम्मान किया था।

प्राचीन सम्प्रदायवादी कवियोंमें श्री बाबिलकोल्लु मुम्बाराय जनमञ्चि शेपादि धर्मा कोककोण्डा वेनटण्णम् पन्नुकु, बड़्गारि मुम्बारायम्, वेदु वेकटण्ण धारसी वल्लारि भूर्गनायय धारसी वामु श्रीरामकु बारि मुख्य हैं। 'मान्य वास्मीकि'

के नामसे प्रसिद्ध बाबिककोठ्ठु मुञ्जापवने बास्मीकि-रामायण का यथामुक्त अनुबाव किया उनके बीबन काठमें ही इस अनुबावके चार संस्करण प्रकाशित हो गए थे। उसकी व्याख्याके रूपमें उन्होंने स्वयं गल्परामु नामक टीका भी लिखी है।

प्राचीन सम्प्रदायको न छोड़ते हुए नवीन भाषासे मुक्त कविता करनेवालोंमें श्री बैकट-गार्बतीरवर कवि-मुम्म प्रमुख हैं। इनकी एकान्त सेवा एक तरहसे मर्मकविता (रहस्यवादी कविता) का बीज बोनेवाली है।

बीरेसम्मिम पन्तुमुनीन श्री सुक-सुरूमें प्राचीन सम्प्रदायवादी रचनाएँ की थीं पर समाज-मुद्धारके लिए पद्यकी अपेक्षा गद्यको अधिक उपयुक्त मानकर बाबमे गद्यमें ही रचनाएँ करन लग गए। सुताम्ब-तिरोप्ट्य-निर्बचन-नैपद्यमु नामक काव्यमें आपने अपने पाश्चित्यका प्रदर्शन किया है। इस ग्रन्थको आपने ठठ ठेसुनुमें बिना झोठप बर्षाके और बचन (गद्य) में लिखा। उसके बाद 'मारव-सरस्वती सम्बावमु, में आपने निर्बीच-धी तेसुनु कविताकी दुर्बलाका हृदय विदारक चित्रण किया।

बीसवीं शतीके पहले इसकमें यद्यपि प्राचीन काव्यधाराका जोर रहा फिर भी नवीन कविता धीरे-धीरे अपनी जड़े जमाने लगी थी। नुरजाबा जप्पा राजकीन मुत्याब सरमुकु नामक नय कविताओंके एक सग्रहका प्रकाशन कर नव कविताका बीजलस किया। क्षेत्रपातब मेलु कसयिक कोम्मेसुनुड जिम्म (प्राचीन और नवीनके सुन्दर सम्मेलनसे नव आसोकको फैलाते) कविता करनेकी प्रतिज्ञा गूठन बस्तु, नए ऊनर और व्यावहारिक भाषाका प्रयोग करते हुए, सर्व मानव समत्व वैद्यभक्ति आदि भावोंसे भरी कविताएँ लिखीं। वैद्यमण्टे मट्टि काबोमि वैद्यमण्टे गनुपुकोमि (देवका बर्ष मिट्टी नहीं है देवसे मलम्व जनतासे है।) मञ्चि जसयि भाक यमिठे नेनुगूड मालनबुतानोमि [बर्दि जम्कार्द माला (हरिजन पञ्चम) है तो मैं भी बही बनूंगा।] आदि पंक्तिमोंका सुक्तिपोंके रूपोंमें उपयोग होता है।

श्री रामप्रोक्तु मुञ्जापवने प्राचीन बीरकका ध्यान करते हुए, राष्ट्रीयताके भावोंका प्रचार किया था। आपपर विश्वकवि मुन्देवका प्रभाव पड़ा था।

वेदशास्त्रकु वैसते निचबड

आरिकाव्यं बरुरे निचबड।

[वेदोंकी धारणाएँ फैल पड़ीं यहाँ आदि काव्य रथा गया यहाँपर।]

१९१३ में ही उन्होंने कविता तुपककबमु नामक लघु काव्योंकी रचना कर, भाव कविता (छायावादी कविता) के बीज बोए।

२ वीं शतीके दूसरे शतकमें स्वतन्त्रताका आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। सत्याग्रह-समरका सर्वप्रथम प्रारम्भ मुष्टूर जिलेमें हुआ था। साहसन कमीशन को पहली बार कासा सषा बिलानेबाबा और एक आन्ध ही था। उस बीरका नाम था श्री टंमुदुरि प्रकाशम पन्तुमु जो बादमें आन्ध-नेसरी कहलाया। समय वेराकी

स्वतन्त्रताकी पुकारके साथ प्रत्येक प्रांतकी मान भी आन्ध्रकी थी। इन दोनों भाषोंमें लिखकर देयके और विद्यपकर आन्ध्रकी प्राचीन गीतब पाषाण, वर्तमान दुर्दशा खादि पर प्रभाव वाली कविताएँ करनेकी प्रथा ही। भी बरिमेष्क सत्य गारायण कविने ब्रिटिश सरकारकी निर्दुसखताका बड़ा ही मामिक बर्नन करते हुए लिखा है —

मूठ मनुबदिवास्तु भोदिकि तगितिबि
माट लाडबहुंटाडु भम्म
पाड पाड बहुंटाडु टोपी
तांसि बोपुन बाहुताडु ।

[(बिन्धि सरकारका) बहु सिपाही हमारे मूँहपर १४४ बाण लगाकर हमें बोलनसे मना करता है। हमें अपना (घट्टीय) गीत तक गाने नहीं देता। (सिरपरसे) टोपी नीचे धँककर पीठपर प्रहार करता है।]

हूयी भवम् नामक कवितामें कोबालि सुम्बाराय प्राचीन आन्ध्रके गौरवका स्मरण कर और वर्तमानकी दुर्दशाको देखकर कराडु उठते हैं —

सितम् इतिबि प्दिवतबि,
बीर्भमूलनकि तुंगमद्रकोपल बुडियोपुरमूल
समास्वतुननबि बीडमुन्नु पुपुल्लु
वरिबकी मुभिविपोयितावात्रम वमुन्धराधिपोरुवत विजय
प्रताप रमसंशोक स्वप्न कथावसेवनी ।

[बिलारु भी विवक कर रो पड़ी। मन्दिर और मठक तुंगमद्रामें डूबकर लम्बहूरमें परिबलित हो गए। वे बन्दरोंके समास्वक बने हुए हैं। आन्ध्र राजाओंके उम्मेद प्रतापकी बहानी स्वप्न-कथा मात्र बनकर इतिहासमें लुप्त प्राप हो गई है।]

विजयनाथ सत्यनारायणने प्राचीन आन्ध्र बीमबकन बान करते हुए आन्ध्र-प्रसस्ति आन्ध्र-गीतब खादि कविताएँ लिखी हैं।

ब्रिटिश शासनकी बूटा और प्रभावताको देखकर कुछ मुद्रभार विद्वान अपने गीतोंमें छिपे-छिपे कुछ बुनपुनाने लये। प्रथम महापुत्रके बाद सारे देशमें निराशा-नी फैल गई थी। त्रिम प्रकारकी परिस्थितियोंमें हिन्दी लक्षमें छायाबाहका जन्म हुआ तैलामें उसके (छायाबाहके) समकक्ष धान-कविता पनप उठे और १९२ के बाद तैलामु कवितामें काव्यमिक प्रयोग आर्यामिष्यविन मायाकी बकना बलप्यता एवं प्रकृति-प्रम आदिकी धूम मच गई। रीति और नियमोंके स्वानपर बह भाव और कपका भावह बडन लया।

नाटक

वयागन देवी कपक है। ऐना माना जाता है कि इन सभी कपकोंको जीव संरहन कपकके लयबानुसार भी कोटाड रामचन्द्र सास्त्रीने 'मन्त्रवी अणुकीयमु

मामक पहला नाटक लिखा। उनके बाद कई प्रसिद्ध पण्डितों और कवियोंने संस्कृत में अंग्रेजी और अन्य भाषाओंके नाटकोंके सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत किए हैं। केवल अभिज्ञान साकुन्तलम् ही के लगभग बीस अनुवाद प्रकाशित हुए हैं।

आन्ध्र नाटक साहित्यकी विद्युत्पत्ता यह रही है कि यहाँके नाटक प्रारम्भसे ही रसस्वस्र को ध्यानमें रखकर लिख जाते थे। १८८ में धारवाड (महाराष्ट्र) से जो नाटक कम्पनियाँ आईं, उनके प्रभावसे कई नाटक मण्डलियाँ सुमी और अभिमयके लिए कई सुन्दर नाटक लिख गए। बस्कारिसे धर्मधरम् उपलब्धनामाधाम (१८८४) व कई मौलिक नाटक लिख और सरस बिनोद्विनी समाके सत्वावधानम य नाटक अभिनीत हुए। चिन्नकर्मति सस्मीनरसिद्धमञ्जीन गमातास्यानम् पारिवातापहरनम् आदि पौराणिक नाटक लिखे। तिरुपति-बेंकट कवियोंके पाण्डव उद्योग विजय नाटक बहुत प्रसिद्ध हैं।

१९ वीं शतीमें लिख गए नाटकोंमें विपार-सारगधर (प्रथम बुद्धात् नाटक) कुरजाडा अप्पारावका 'कन्या सुम्भम्' (प्रथम सामाजिक-व्यापारमक नाटक जो व्यावहारिक भाषामें लिखा गया है।) और वेदम् बेंकटराम धास्त्रीबीका 'प्रताप रक्षियम्' (प्राञ्चित भाषाका प्रयोग करतबाबा प्रथम नाटक) विद्यप रूपसे उल्लेखनीय हैं।

२ वीं शतीके प्रारम्भमें इसी प्रकारके पौराणिक इतिवृत्तपर आधारित नाटक हैं अधिक लिख गए। द्वितीय दशकमें सामाजिक नाटकोंकी रचना होन लगी।

अन्य साहित्यिक प्रख्यामोंके समान ही बीरेसम्मियमञ्जीन प्रहसनोंके रूपम एकांकीका प्रारम्भ किया है। उस समय कोलकोष्ठ बेंकटराम पन्तुलन नरकामुर विजय-व्यायोग का अनुवाद कर संस्कृतके एकांकीके स्वरूपका शिखरचंन करवा।

बीरेसम्मियम पन्तुलनकीका राज शालर चरित जो उस समयके समाजका वर्णन है ठेकनुका पहला उपन्यास माना जाता है। यह विकार थाप बैकपैरिड का छायानुसरण मान है। बुलीवरकी कहानियोंके समान उन्होंने सत्य राजा पूर्व बैच याभाएँ नामक पुस्तक भी रची है।

कोलकोष्ठ बेंकटराम पन्तुलन काश्मिरीका आधार लेकर सन् १८९४ में महाभेता नामक उपन्यास लिखा।

स्वयं लिखनकी अपेक्षा प्रतियोगिताएँ जमाकर बीरेसम्मियमञ्जीन कई उपन्यास लिखवाए। इनमें चिन्नकर्मति सस्मीनरसिद्धमञ्जीके 'रामचन्द्र विजयम्' हेमलता कर्तुलमञ्जरी महत्याबाई सौन्दर्यदिम्का मुख हैं। केनवणु बेंकटधास्त्री और भोयराडु नारायण मूर्तिन कई एतिहासिक उपन्यास लिखे हैं। भद्रवि बापिराजुके 'हिमविन्दु' 'गोत नगारेड्डी' आन्ध्रके इतिहाससे सम्बन्धित है। विश्वनाथ सत्यनायकञ्जीने भी कई उपन्यास लिखे हैं। इनमें सबसे छोटा उपन्यास एक बैरा है। यह उपन्यास रचना-कीदरमें अतिरिच है। आन्ध्र सबसे बड़ा उपन्यास बैमिपडगम् (हास पन) जो भारतीय सस्कृतिका मानों विश्वकीय ही है

सन् १८५ से ही संस्कृतकी कई क्लाजोंके अनुवाद और छायानुवाद होने शुरू हो गए थे। विभवयूटि, बीरेसमिन्तम पञ्चमु, बेंकटरलम पञ्चमु, बेंकटराय शास्त्रीने सिष्ट छापायें कई कहानियाँ लिखी हैं पर इन्हें आधुनिक कहानीकी परिभाषाकी नसौटीपर नहीं कहा जा सकता।

२ बी छठीके प्रारम्भमें कई पत्र-पत्रिकाओंमें संस्कृतके अतिरिक्त अंग्रेजी एक अरबी क्लासिकोंके अनुवाद प्रकाशित होते थे।

भी मुरजाबा अप्पाराबने सन् १९११में आजकी कहानी रचनाका बीपण्य किया। दिग्बादु (मूक-सुधार) बेमुड बेसिन मनुपुम्भारा (भगवानके बनाए हुए हे मानवो।) आदि कहानियाँ तेलुगुकी प्रारम्भिक कहानियाँ हैं। १९१५ में दैनिक आन्ध्र-पत्रिका के शुरू होते ही अधिक संख्यामें कहानियाँ लिखी जाने लगीं।

बिन्ता भीमसकरमूनीकी बालूची कहानियाँ कौडवटिपट्टि बेंकट मुख्याय की सामाजिक कहानियाँ बिन्ता बीसिलुलकी बालोपयोगी कथाएँ इसी युगकी हैं। मुनिमाबिन्तमतरसिंहाराव गृहस्थ बीबनने लिखित हास्यकी अभिव्यक्त करते हुए रचना करने लग गए।

१९२ में छाहिटी के प्रकाशनसे कहानी रचनाको और भी प्रोत्साहन मिला।

बालोचनात्मक साहित्यके जन्मदाता भी बीरेदालियम् ही हैं। आन्ध्र कन्नड चरित उनकी विशिष्ट कृति है। २० वीं शतीके प्रथम दशकमें सरसी आर. रेडडीका कवित्व उत्कृष्ट विचारम् आधुनिक (पारंपार्य विचार-आराधने प्रभावित) बालोचनाका प्रवर्द्धक प्रत्य है। इस समय तेलुगुमें बालोचनात्मक पुस्तके लिखी जा गईं, पर उनकी संख्या अधिक नहीं है।

लेखकोंकी संख्या रचनाओंकी संख्या और साहित्यके विभिन्न प्रकारोंके विस्तारकी दृष्टिसे भारतीय साहित्यके जन्ममें तेलुगु साहित्यका एक विशिष्ट स्थान है। कहा भी है कि आन्ध्रके प्रत्येक घरमें कम-से-कम एक कवि-है। इस विलुप्त साहित्यका भ्रिन बीड़से पृथीमें परिचय मात्र करानका यह अल्प प्रयास है।

[नोट—सन् १९२ से आजतकके तेलुगु साहित्यका अक्षिप्त परिचय कवि-भी माका ठम्मू—काटूरि बेन्टरवर और पिगलि लक्ष्मीकान्ठम्में दिया गया है।]

तिरुपति-चेंकट कवुलु

[कवि-परिचय]

तिरुपति-वेंकट कब्रिलु

“ दोसमदं चेरिगियुनु बुदुदुकोप्य बेंचिनार मी
मीसमु रेंदु वासलकु मेमे कवीरुलमंभु वेस्पया
रोधमु कस्मिगं पविचरल म्मु पेरुबुदु-येरिचरेनि यी
मीसमु तीति मी परसमीपमुलं वरुलंभि श्रीनकमे । ”

[यह जानकर भी कि मूँछ रहना रोप है अण्णड़ताक घाब मूँछ यह बतानके लिए बड़ा रली है कि दोनों भावाओंमें—आन्ध्र और संस्कृतमें—इम ही कवीन्द्र है। बिम्बे हन मूँछोंको देसकर रोप अस्ता हा वे हमे जीत के। यदि जीते तो हन मूँछोंको निकालकर, आपके चरणोंपर छिर न रखे ?]

इस प्रकारकी अपूर्व प्रतिज्ञा कर, एक बरतमती तक आन्ध्र-कविता-शास्त्राय्य पर निर्द्वन्द्व घाघन बलाननामे कवियुगमे कवि श्री तिरुपति और श्री वेंकट । उनके छिप्यों-प्रशिप्यों एवं एककथ्य छिप्योंके भण्य पड़ा है आधुनिक-आन्ध्र-श्रम्य जगत् ।

इम कवियुगमें पहले स्थिति श्री विपाकर्त्त विरुपति शास्त्री है दूसरे ह श्री वेण्णटपिळ्ळ वेंकट शास्त्री। विरुपति शास्त्रीजीका जन्म कुप्पा जिलेके एण्डयथि नामक ग्राममें सन् १८७१ में हुआ और मृत्यु सन् १९१९ में हुई। अस्ताका नाम शयम्मा और पिताका नाम वेंकटाशयामी था। वेंकट शास्त्रीजीका जन्म एनाम (भारतमें श्रीमीसी उपनिषत्)म हुआ पर निवासस्थान पश्चिम गोदावरी जिलेका कडियम नामक ग्राम था। इनका जन्म सन् १८७० में हुआ और मृत्यु सन् १९५० में। श्री वेण्णटशास्त्री-

तिरुपति-वेंकट कबुल्लु

• • •

“ सोसमत्तं केरिदियुनु कुंहुकुकोप्यग बोचिहार नी
मीसम्पु रेंहु वासलकु मेमे कवीहुल्लुवु देव्यदा
रोडम्पु क्लिगर्न वचिचरल मम्पु गेम्बुड-येन्किचेरिचि नी
मोत्तम्पु तीसि नी वदसमीपनुत्तं इल्लर्मेचि ओल्लुके । ”

[यह जानकर भी कि मूछ रत्ना शोप है मन्त्रकृपाके धाम मूछ यह जगत्के लिए बड़ा रबी है कि दोनों भाषाओंमें—आन्ध्र और संस्कृतमें—इस ही कवीन्द्र है। जिन्हें हम मूछोंको देव्यकर रोप आता हो वे हम शीत में। यदि बीते तो हम मूछीको निकालकर, आपके चरणोंपर सिर न रख दें ?]

इस प्रकारकी अपूर्व प्रतिज्ञा कर, एक अर्द्धशती तक आन्ध्र-कविता-शास्त्राख्य पर निर्द्वन्द्व शासन बलानवासे कविद्युग्मके कवि श्री तिरुपति और श्री वेंकट। उनके विषयों-प्रतिषेधों एवं एकलक्ष्य विषयोंसे भरा पड़ा है आधुनिक-आन्ध्र-काव्य वाग्लु।

इस कविद्युग्ममें पहले व्यक्ति श्री विद्यावर्धन तिरुपति वास्त्री हैं दूसरे हैं श्री वेङ्कटेश्वर वेंकट शास्त्री। तिरुपति शास्त्रीजीका जन्म हृत्वा विजये एन्डमण्डि नामक धाममें सन् १८०१ में हुआ और मृत्यु मन् १९१९ में हुई। माताका नाम शोपम्मा और पिताका नाम वेंकटाचारी था। वेंकट शास्त्रीजीका जन्म एनाम (भारतमें प्रसिद्धी उपनिवेश) में हुआ पर निवासस्थान परिवर्तन भोवाचरी विजये कविमन् नामक धाम था। इनका जन्म सन् १८०० में हुआ और मृत्यु मन् १९५० में। श्री वेङ्कटशास्त्री

की माताका नाम चन्द्रमा और पिताका नाम काम्य था। तिरुपति शास्त्री शिष्य चार-सम्पन्न पण्डित परिवारके थे। उनके पिता बारा-परबाबा वेदोंके प्रसिद्ध पण्डित थे। बेंकटशास्त्रीजी का परिवार नबिठाका आकर था। उनके परबाबा नरसम्पन्नके यानिनीपूर्वतिलक विद्यासमु और बेंकटेश्वर विद्यासमु नामक प्रबन्ध-श्यास्त्रीकी रचना की थी। इन दोनोंने प्रकाश विद्याम् भी बरुं ब्रह्म्य शास्त्रीजीके यहाँ व्याकरण शास्त्रका अध्ययन किया। संयोगसे छात्राभ्यासी बन और दोनों महानुभावोंका जीवन पर्यन्त अटूट सग बना रहा। ब्रह्म्य शास्त्रीजीके पास आनेसे पहले बेंकटशास्त्रीजील शोकी-बहुत श्रेष्ठरी लेख्यु माया और साहित्यका अध्ययन किया। उही समय वे बोडा-सा गाना-बजाना कुस्ती ककना तथा कविता करना भी सीख गए थे। श्री श्यापाद कुण्डमूर्ति शास्त्री* के पास आपन तीन महीने तक कुमार मम्मन के हाँसरी पढ़े। एनामके भगवान बेंकटेश्वर पर आपने एक पटक छिछना शुरू किया। उसमें प्रसन्नत कुछ व्याकरण विद्यका जबाब न वे सबलके कारण पाबिनीय व्याकरण पढ़नके लिए आप शारीको बरु पढ़े। मार्गमें राघवाचार्य अनन्ताचार्य और सूर्यके पास बोड़-बोड़ समय तक पढ़ते रहे। आँककी बीमारीके कारण कुछ समय तक आपकी पढ़ाई बन्द रही। अन्तमें आप ब्रह्म्य शास्त्रीजीके पास आए। उस समय तिरुपति शास्त्री ब्रह्म्यजीके पास अध्ययन कर रहे थे। बेंकटशास्त्रीजीमें हठ और बडा अधिक की पब कि तिरुपति शास्त्रीजी नई विषयोकी देखी-अपदेखी कर देते थे। इन दोनोंका मेरु लोनेमें गुगल-सा छिड़ हुआ। बेंकटशास्त्रीके सम्पर्कसे ही तिरुपति शास्त्रीजीकी कविता करनेका अभ्यास हो गया था। इसीलिए वे एक स्थानपर कहते हैं—

विततात्मीय अस्तावधान कविता विद्यापयोराहितं
 नृत शिष्यांबुध बन्धमयामुतरत प्रीताञ्जलान्ध जना
 भूत रज्यप्रतिकारतसङ्गत बधि लोभमाताविभू
 वितु नः बेंकटशास्त्री ने बोबडेदन् शिष्यस्वरूपम्मुनम् ।

[अपन महान अस्तावधान कविता रपी विद्याके लिए समूह समान सम्यक रूपसे सम्पन्न शिष्य मेवोके बाइमयवे अमृत रससे लक्ष्मण बन समग्र आत्मके प्रसन्न बने रतिक सेटो डाठ किए गए स्तोत्ररपी मानावसि विभूपित बेंकट शास्त्रीकी नै मिय स्वहपने स्तुति कहैमा।]

विद्याध्ययनके समयसे ही दोनोंने मिलकर कविता करना अभ्यास किया। माता-पिताके एक न होनेपर भी दोनों विद्याक कारण ही भाई-भाई बन और समस्त रचनाएँ मिलकर ही करन लग गए। जोसकर रचियिचिरेतिमुनु गावन

* आन्ध्रक पुनरे राजकवि हैं, जिनकी मरु ११ मे हुई। इन्होंने ही से अधिक पुस्तकें लिटी हैं।

तिरपति बैकटीयमी (कोई एक भी लिख तो वह रचना तिरपति-बैकटीय मानी जाएगी।) "युवकको उन्होंने जीवन पर्यन्त निभाया तिरपति घास्त्रीके स्वर्गवासके बाद कममग तीस वर्ष तक बैकट घास्त्री निरन्तर लिखते रहे पर न सारी रचनाएँ बोलोंके नामपर हैं। ऐसे उदाहरण संसारके इतिहासमें बिरेले ही मिलते हैं।

अध्यापनके समाप्त होनेपर कुछ समय तक इस कविपुग्गन समग्र आश्रम बेचक्री अपने अथवान-कविताके प्रवाहसे परिप्लावित कर दिया। कविताको पण्डितोंकी बहार बाबाठीस बाहर जाकर उसे बल-सामान्य तक पहुँचाया। अथवान कलाका प्रदर्शन करने हुए बैकटकिरि, मडाळ आत्मकूट, बनपति विजयनगर, किर्लपूठि मुविबीडु, बोम्बिडि आदि आन्ध्र देशके प्रसिद्ध संस्थानों (रियासतों) में जाकर, वहाँके घासकोंकी अपनी प्रतिभा-श्रुत्यपत्तिसे प्रभावित कर, उनसे पुरस्कार प्राप्त किए। उदुपराय मच्छनीपट्टमके नामरिकोंके निमन्त्रणपर, बैकटघास्त्री वहाँके हिन्दू हाइस्कूलमें कममग तेरह वर्ष तक तेसुमुके अध्यापकके रूपमें कार्य करते रहे। उस समय वह नगर आन्ध्रके राजनैतिक सामाजिक और साहित्यिक चापरनका केन्द्र बना हुआ था। इस हाइस्कूलमें काम करते हुए, भाषाकी शिक्षाकी अपेक्षा उन्होंने कविताकी शिक्षा बल ही। उनकी प्रेरणासे उदाह प्राप्त कर, कविके रूपमें प्रसिद्धि प्राप्त करनेवालोंमें विस्वनाथ सत्यनारायण वेदूरि प्रभाकर घास्त्री बेसूरि शिवराम घास्त्री कादूरि बैकटस्वरराज पिपकि लक्ष्मीकान्ठम आदि प्रमुख हैं। तिरपति घास्त्रीजी पोळवरमुके बर्मीदार भी लोन्नेबंकोट बैकट कृष्णाराज बहादुरजीके बरवारके विद्वान बन हुए थे। बैकट कृष्णाराजजी प्राण्य एवं पाश्चात्य भाषाओंके विद्वान थे। इस प्रकारका आदर-सम्मान वे जीड़े ही जिनों तक पा सके व कि काल पुरख उम्हें उठ्य के गया। बिबाकरके अस्तमत् होनेपर बैकट घास्त्री इस प्रकार बिबल उठे—

नाकम जीबलम्मुन
नेकाहु तनुबळमुन नेतयु हेचची
लोक्नतुमुडु तिरपति
नाकमगु मुमे वेदुलु नाकमु मुट्टेम् ।

[मेघाबळमें ही नहीं घाटीरिळ बळमें भी मुमसे बहीं शक्तिघासी हैं। नाकमे प्रगतिय तिरपति घास्त्री मुमसे प्ण्य ही जैसे स्वर्गकी पहुँच गए ।]

सन् १९१९ के बादसे सन् १९५० तक बैकट घास्त्रीजीकी कम्मसे लिखी गई सभी रचनाएँ बोलोंके नामपर ही प्रकाशित हैं।

सन् १९३३ में मच्छनीपट्टममें महात् वैभवके साथ ही बैकट घास्त्रीजीका पण्डित-महोत्सव मनाया गया। उनके बाद भी घास्त्रीजी कृष्ण मरीके दिनारे विजयवाडामें बल गए और अन्त तक बही रहे।

देशके स्वतन्त्र होनेपर हमारी सरकारने भारतकी श्रत्यक भाषाके लिए एक राजकीयकी नियुक्ति की। आन्ध्र देशमें सर्वप्रथम उस गौरवकी पानेवाले श्री बेकटशास्त्री ही ब। उन्हें पुरस्कृत करनेके लिए आन्ध्र और मद्रास सरकारने (तबतक मद्राससे आन्ध्र प्राप्त नहीं बना था।) विजयवाड़ामें उपस्थित ही उस महाकवि एवं शतावधानीका सम्कार कर अपनको धन्य माना।

सन् १९५० की फरवरीकी १५ तारीखकी विषयवृत्तिके पत्रपर बेंकट शास्त्रीजी कैलासवासी हो गए।

रायसु युगमें तन्त्रि मत्स्य और पण्डितसिध्द नामक दो कवियोंने मिलकर कविता की भी पर पता नहीं उन्होंने अबधान-विद्याका प्रवर्तन किया या नहीं। कहा जाता है कि बभुवरिकके कर्ता रामराजमय्यक एतदेसिनी इत्यस्यभान बालुपी युक्त ब। आधुनिक कालमें माडमूपि बेंकटाचार्य देवुत्तपत्तिबन्धु बेंकट रामकृष्ण कवि (अन्तिम हो कवियुग्म है) आदिने भी अबधान लिए ब। पर तिरपति बेंकटबन्धुके समान इस विद्याको विख्यात करनेवाले नहीं ब। जयवाडनरब कटावधान कविता सम्पत्ति से सम्पन्न कवियुग्म तिरपति-बेंकट कवि ही ब। प्रारम्भमें य तिरपति बेंकटरवर (बालाजी) ही के नामसे प्रसिद्ध हुए ब।

अष्टावधान और शतावधान की प्रक्रियाओंका यही बोधा परिचय दे देना असंगत नहीं होगा। शतावधान का अर्थ है सौ सौयोंको उनकी इच्छापर, (विषय और वृत्त) संस्कृतमें और तैलुयुगे अन्ते सौ भाषु पद्योंके प्रथम चरण मात्र सुनाना। सौ पद्योंको सुनानके बाद उसी संख्यामेंसे या श्लोकोंकी इच्छाके अनुसार फिर उन्ही पद्योंके पूरे चार चरण सुनाना पड़ता है। अष्टावधान में चार-पाँच सौयोंको भाषु कविता सुनाना—किसीको किसी विषयपर पद्य समस्यापूर्ति निषेधादृष्टी व्यस्तादृष्टी वत्तादृष्टी आदि प्रकारके पद्य शास्त्र-वर्षा या आकाश गुरुय कष्टियोंको विना एतदन्त आदि आठ कामोंमें चित्तको एक ही समयमें एकाग्र करना। अन्तमें फिरसे सभौ पद्य सुनाना। इस प्रकारके इन दो विद्याओंमें इस कवियुग्मने अपूर्व प्रतिभा दिखा प्रतिपक्षियोंसे भी प्रमत्ता पाई। तिरपति शास्त्रीका अग्रिम पविष्टय और बेंकट शास्त्रीकी असाधारण मेधा मित्यकर, इस कठिन कार्यको सुमम बना दिया। दिनकर, दिनापको इत्या कर दिनवाले शतावधान अष्टावधानमें लय रहकर, रातमें देर तक बिनोद कार्यवर्षोंमें भाव लेकर, मञ्जकी भीष सोकर, फिर हमारे दिन सबेरे, कुछ छाए बिना ही अबधानके राय भाषकी पूर्ति करनेके लिए तैयार रहनेवाले इस कवियुग्मको देस भोग कविता रह जाते ब। दोनोंक हृदय और मस्तिष्क एक-ठे काम करते ब। ग्रीड पविष्टों और प्रभुओंकी समाजोंमें ही नहीं बाक-वामर-योधिनमें भी अपनी कविता बालुपीसे प्रवर्ताने पाते ब। एक बार उन्होंने स्वर्न कहा है—

शतपटकवचनम्पु सप्तु संवत्तियञ्च
 परतत्तामसकाम्पु पारेभाङ्गु
 अष्टावधानकष्टावर्तवचनमस
 'नविकोव्य वंडनं' माङ्गु
 आमुधारा कवित्वाडंबर अम
 नरुंकेव पै वंडिनडक' माङ्गु
 सत्काम्य निर्मास आकचर्यवस
 पङ्गुसेतेत भोजनम्पु माङ्गु
 व्यर्बमपु बावमुलोनर्भूतहि वारि
 डंब मर्बर्बिष्टापीपार्बु माङ्गु
 बातराद्येप । कविसनुवायपेप ।
 पंडितविद्येप । रामभूपाकराय !

[श्री लेखिकोंको माय-भाव कविता कहना यह कार्य हमारे लिए इन्डा मरक (मुपम साम्य) है। अष्टावधान रुपी कविता कार्य हमारे लिए नविकोव्यके रूप के समान व्यपस है। आमुधारा कविता बहना (सोम इसे आम्बर मानते है) हमारे लिए हज्जीकरण मार्गिक कवनक समान है। सत्काम्य निर्मास (रचना) का कार्य हमारे लिए, पङ्गुसेतेत भोजनके समान है। मय हा बाद विचार करनवासके वर्षका वचन करना हमारे लिए आपोसनके समान है। हे धानराध्या ! कविसमुवायया ! पंडितविद्यया ! हे रामभूपाक राम ! (यह है हमारी कामर्ष्य।]

शोक करवर्ततु मरिपोवकहि लेनु मरोकडातडुनु
 सकल कवींसततुनु सम्मति से इतलूदि मेकवगा
 प्रकृततरतुपुवार बनरनु रचियिपपतनुमय्य ! नू
 दिकि शुकयय्य ! निरकमिदि डेवदिमातनु सेप्यनेदिकिन् ?

[एक शोक यह और एक शोक मी इन प्रकार सकल कवीओंकी प्रणसाओंके पाव हात हुए, प्रसिद्ध आमुधारा कविता कर सकते हैं। सी पद्यों तक कोई सज्जोष नहीं है, कहते पाईम हे राजन् ! यह ता सच है। हमार बातें क्यों कहे !]

गुरुकुलमे निकलने ही उन्होंने पहली बार काफ़िराडा नामक नगरमे श्री सुरिमेदि अपविगिरी राजकीय यज्ञ अष्टावधान किया। तब इनकी आयु केवल २० वर्षकी थी। श्री अपविगिरी राजकी इन युवकोंकी अत्यन्त प्रतिभा और मन्नासे कवित्त हो गए थे। तब इनकी मामर्ष्यकी और अधिक परीक्षा करनके लिए श्री बादम् बिकटरलमन मगावधान करनके लिए कहा। ये युवक मान गए। वृष्टरे दिन सभाका आयोजन किया गया। उद्योग नामकी होना निककर गौडक बाहुर मारियल के

बनमें गए और वहाँ शारियलके बूझोंको ही प्रश्नकर्ता मानकर उन्होंने वहाँ सत्ताबधान किया। इस सत्ताबधानके बाद उन्हें यह आत्मनिश्चाय हो गया कि सत्ताबधान तो क्या जब सहायबधान भी किया जा सकता है।

दूसरे दिन बहुत बड़ी सभा हुई। प्रश्न करनेवाले सौ पच्छिम सामने बैठे हुए थे और उनके पीछे सैकड़ोंकी संख्यामें जनता बैठी हुई थी। सौ विपयोंपर दो-दो चरम क्यूते-क्यूते शाय हो गईं। अब शेष दो चरणोंकी पूर्ति कैसे हो? कब्यपर यदि झोड़ दें तो ये कवि रातभरमें सोच मेंमें और कल कहेंगे अतः अबकाय नहीं देना चाहिए। तब सभी पच्छितोंने एक निर्णय किया कि सौ पद्योंको कह सुनानेकी आवश्यकता नहीं है कम झोड़कर किन्हीं दस पच्छितोंको उनके पद्य सुनाएँ तो ठीक रहेगा। उसके लिए भी ये मुश्किल तैयार हो गए और दस सौकड़, बत्तीस तीन सौ छप्पन इस तरह बिना किसी कमके ही पद्योंकी इन्होंने सहज ही में सुना दिया। इसे देखकर सभी सोम शय रह गए और देखके चारों कोनोंमें तिरपति बेकट-कवियोंकी अनुपम प्रतिभाकी बात फैल गई। अब बहसि जाग्र प्रवेशके सभी बड़े नपरोंमें सभी संस्मार्थमें इन कवियोंने अष्टाबधान और सत्ताबधान किए। वहाँ भी गए विजयपी इन्हींके पदले पड़ती थी। तिरपति शास्त्री अपने पाण्डित्य और प्रतिभासे विरोधियोंको निहत्तर कर बैठे तो बेकट शास्त्री उदरधृता और समवास्पृतिसे विरोधियोंको मूढ़-तोड़ बबाब बैठे। राजाओं और जमींदारोंने स्वागत-सत्कार किया है, चरम चार गाधियाँ देकर वे शेष बहसि चल बैठे।

एतन्मु मेखिकनाथ घरणीयिक ज्ञानकथनिखिकनाथ स
ग्यानमुर्खदिवाना बहुमानमुर्खप्रहृषिनार ले
ध्याननि लेखकपेटक विचारधरिभिवज्यबोमधि प्र
ज्ञानिमुर्खबु बेस्पोनिनारतु मीच कथित्वतंपरक ।

[कविता-सम्पत्तिके कारण आप (तिरपति-बेकट कविद्वय) ह्वासीपर बड़े घरणीपतियोंके वर पड़नेपर अकड़े बनेक सम्मान पाए, बनेक पुरस्कार प्राप्त किए, किसीकी परवाह न कर, निर्द्वन्द्व हो विभिन्नय कर आपने प्रशान्तिधि का नाम पाया।]

इसकी धारणाएतितसे अत्यधिक प्रशान्ति होकर श्रीमती एनी बीसेण्टने इस प्रकार लिखा है।

I have much pleasure in stating that I was present at the remarkable exhibition given by D Tirupti Shastry and Ch. Venkatasastri of the powers of memory they possess. It entirely excelled anything I should have thought possible. Judging by ordinary

standards and in addition to feats of memory the Shastrics showed great powers of improvising Verse in difficult metres and nimble wit in repartee.

(28th Dec, 1893 Adayard, Madras)

बाल्य विष्णुविद्यालयमें बेंकट शास्त्रीजीकी कलाप्रपूर्व की उपाधि प्रदानकर सम्मानित किया ।

इस प्रकार [अट्ट पञ्चातिदु वेत्तपट्टणमु मध्यम् कम्पु वेत्तम्पु] (अथर गशाकसं केकर इत्तर मद्रासके बीचके समय देघमें)] बूमकर, उड़ीसाके सीमावर्ती विजयनगर तक जाकर, कवितामिपचनेके समाजमें ऊसर बने बाल्य-साहित्य-सत्रको कविताकी अनूत-वर्षा-बापयोंसे पुस्तकित बना दिया हय भय बना दिया । अंग्रेजीके प्रभावसे और पश्चिमीकी पाश्चित्यपरिभासे पूंसी-सी बनी बाल्य-कविता-कन्याको इन कवी-वर्तोंमें मुबार बना दिया ।

इन अष्टावधान-सदाबधानोंके जनक प्रसर्पोपर होनेवाले शास्त्र-विचारोंने इनकी कीलिकी और भी फैलाया । ये अष्टावधान व घटानधान विस्मयति बेंकट कवियोंकी प्रतिभा-भ्युत्पत्तिके ज्वलन्त उदाहरण हैं । किसीने ठीक ही कहा है कि तिरपति-बेंकट कवियोंके काश्योंकी अपेक्षा उनसे घम्पु गायार् उनके मुक्तक उनकी बीरोफिया और अमत्कारपूर्ण सम्पादनके समूल ही देघमें रह जायें ।

विस्मयति-बेंकट कवियोंकी कविता प्राचीन कविताके लिए घटत कायम है जो मधीन कविताका जोड़ी-पाठ है । उनकी रचनाजोम प्राचीन कविताकी पाश्चित्य-परिभाके घाव मधीन कविताका प्रसार-गुणभूक्तता और सरभता इष्टियोचर होती है । पाश्चित्यकी बटवी (वन) से कविताका उद्यार कर, उसे जन सामान्य तक पहुँचानेवासे विस्मयति बेंकटस्वर ही है ।

विस्मयति कवियोंने काव्यके अतिरिक्त नाटक गद्य आकाशना और कवार्थ भी लिखी हैं ।

बुध परिचयम् 'सज्जना परिचयम्' 'एकामाहात्म्यम्' श्रीनिवास विद्यालयम् देवी चानक्यम् पठितता सुधीना पूर्वहरिचरणम् " विजयजीकार्य अथधान्यम् पाधिगुहीता नागायक समर्धनम् (मुक्तक संग्रह) चातिक चर्चा आदि काव्य इत्ये प्रसिद्ध हैं । कामेश्वरी छटक सुन्दर चक्ति छटक हैं ।

'पाश्चर्य जननम्' पाण्डवायणम् पाण्डव-अस्वयेधम् चान्दव-राजगूरम् 'चाण्डव विजयम्' 'पाण्डव प्रकाशम्' महाभारतके इतिवृत्त संम्बन्धित इन छह नाटकके अतिरिक्त मुद्रापीठत मुञ्जकटिक प्रभाकरी प्रमुन का सुन्दर अनुवाद किया है । बाल उपायनम् भी एक सुन्दर अनुवाद है । एवम्बई मद्रासविषयम्

व्यसन विजयम् इन्द्रधामनम् अलर्षराचवम् 'पश्चितराजम् इन कवियोंके अन्य नाटक हैं।

एष द्रव्णोंमें विक्रमांक देव चरित्रम् चन्द्र प्रभा चरित्रम् हर्ष चरित्रम् मुरत्यु है। व्यावहारिक (वाक्यात्मकी) भाषा * में लिख गए अनक संस्मरण कवच-गावक के नामसे प्रकाशित किए जा रहे हैं जिनके अबतक पाँच भाग प्रकाशमें आए हैं।

गीरतम् पृथ्वीरिषीम शृंगला तुर्णीकरणम् पश्यापुश्यां छनिग्रह जावि प्रतिपत्तिर्बोका लखन करते हुए लिख गए हैं। अतावधानोंमें—उक्त छमयमें कहे गए पद्योक्तो—भी कुछ का पुस्तक रूपमें प्रकाशन हुआ है।

पल्लेपूच्छ पट्टुवच्छम् (ग्रामीणोंके हठ) नामसे ग्रामोंमें प्रचलित कठियों और जन्म विश्वासोंका लखन करते हुए, व्यस्य प्रधान प्रहसन किया है।

इन ठेसुगु रचनाओंके अतिरिक्त विस्ववि-वेकट कवियोंने संस्कृतमें धातु रत्नाकर नामक छम कथा-काम्य शृंगार शृंगाटक नामक छोटा-सा बीबी-रपद काशी सहस्र नामक काम्य और कई लटक एवं स्तोत्र लिखे हैं।

श्री वैकट वास्तवीर्वाकी पश्चिपुति महोत्सवके उपसदयमें श्री कर्पूरि-वैकटेश्वर रावजीके सम्पादनमें विस्ववि-वैकट कवियों की अग्रभाग सभी रचनाएँ जाठ भाषोंमें प्रकाशित हुई थीं।

महात्मा बुद्धके जीवनपर आधाष्टि ओपवी काम्य है 'Light of Asia'। उसपर आधाष्टि बुद्ध चरित्रम् की रचना हुई जिसमें ६ ही पद्य हैं। परन्तु बाबमें जसबोधके बुद्ध चरित्र और अगेन्द्रकृत बुद्धजन्म में से कुछ श्लोकोंका अनुवादकर १ २ पद्योंका बुद्ध चरित्र नामक काम्य प्रकाशित हुआ। इस काम्यमें महात्माके जन्म तपस्या और धर्म प्रचारका छरछ वर्णन किया गया है। इस काम्यका निम्न पद्य सुप्रसिद्ध है —

अनन्यन्तु मरुतम् अतुबुल्लुन् स्वाधाविक म्मेरि के
लिखिअबोने सुखंभुलेनकडिधि तस्सी। ऐटिकेअविरी
ननु पालेनु प्रयोअङ्गुन् सुअनमगदरम्मु, वैहूत वा
निदि पुअनु विर्याअधि रायिकरणिन् बीविधि पिह्मंअने।

महापत्र बृहत्सेनकी पुत्री अजनाका मीकुण्डके साथ विवाहका वर्णन करलवाला काम्य है कलजा परिणयम्। इसमें तारक प्रसंग और कीरका उल्लेख

* व्याकरण-युक्त भाषाको प्रायिक (द्रव्णोंमें उन्मुक्त) भाषा और व्याकरण नियम रहित बोलवात्मकी भाषाको व्यावहारिक भाषा कहते हैं। आधुनिक बालमें आकर, व्यावहारिक भाषा की और मुकाब अधिक हो गया है।

मनोहर बन पड़ है। एकामाहात्म्य में एका नदीकी उत्पत्तिकारण स्वल्प एका नामक महामुनि और किन्मीर नामक राजसुकी तपस्याका वर्णन है। श्री निवास-विभाषण सस्कृतके उसी नामके चम्पू काव्यका अनुवाद ह जिसमें भगवान विष्णुके श्रीनिवास रूपमें अवतरित हो पद्मावती और अश्विनेशु मंगाक छाप विवाह कर छान पर्वतोंपर, बाकाबी बन रह जानकी कथा है। बेबी पायबतमु सस्कृतके बेबी पायकठ का अनुवाद है पर अनुवादके समय कवियोंन आन्ध्र महाभारत की शैलीको आदर्श मान रचना की है। पतिव्रता और सुवीर्या में दो पतिव्रता नाटियोंकी कथाएँ हैं। अथमानन्दमु और पाप्मिहृष्टिा में परोक्ष रूपसे बेस्वागमनकी किन्ना करते हुए, दो विवासी पुरोको जीवन-विषय प्रस्तुत किया गया है। भूषार रस प्रधान होते हुए भी नीति बोधकी रचनाएँ हैं। अथमानन्दमु का यह पद्य कलाकी बानपर है —

धनरा पोषुनु मानमा वेदुनु, निम्बा नति वी केरुनु लो
ननुमानितुव तस्मिन्सङ्गु, कुर्वन्वा वसेरुं वपु, नु
तन माधुनु पटिस्तु, वनुनुनु पस्तबोप्य निबिदुरो
मनमा ! शोभित माधुमाद विनुमा मरियाव पापाहुमा ।

[धन ठो पसा आया। मान ठा विपड़ बाणमा। सिरपर निम्बा नाच उठी। माता-पिता भी मनमें अन्देह करत रह्ये। कुल-मर्त्या बट आयी। गया आत्मस्य पीदा हो पाठा है। जान-बुझकर सम्बन्धीजन निम्बा करते हैं। रे मन ! मेरी बात सुना अब छोड़ दो इसे (बेस्वागमनको)। मेरी आज बचाओ।]

नाताराजसन्दर्शनमु और कल्मुरायम् (विधिषा) में समय-समयपर और राजसभाओंमें भ्रम गए और नहे गए पक्षोंका उपग्रह है। य पद्य कवियोंकी प्रतिभा और समस्यापुतिके ज्वलन्त उदाहरण है।

आत्मकथा लिखनकी प्रयाका प्रारम्भ पाश्चात्य प्रभावसे हुआ है। बीरेख-लिखमजीन गद्यमें अपनी आत्मकथा लिखकर इसका प्रारम्भ किया तो उनसे पहले ही बेंकट घास्त्रीजीने जातक चर्या नामसे अपनी जीवनीको काव्यके रूपमें लिख कर दिया है। वे प्राचीनता और नवीनताके सम्मिश्रण हैं। अठ स्वयं अपनी कथा न कहकर ज्योतिषके अनुषंग अपने जीवनकी बटनाओंका बयान करते गए। अन्नक समय घट-सम्पत्तिकी व्याख्याके रूपमें यह काव्य रचा गया है। एवरो प्राचिन रीति स्वयंपयमुनु जातकपुनिपन् घासंगु वा कवियमुट बकटदुष्ट [स्वयं कवि होनासे बेंकटघा (बेंकटमास्त्री) न जान ही विषयको जातक क समान एसा लिखार माली कोई हुएत लिख रहा हो।] यह काव्य पर्यन्त ज्योतिषका अतिशय प्रथम है और बेंकटघास्त्रीजीके ज्योतिष-शास्त्रक पाण्डित्यका अनुपम उदाहरण है।

कामेश्वरी राठकम् म समय-समयपर बेबीने प्रति कहे नए पद्योंका संकलन है। इसमें कविकी जनन्य पक्ति और अचञ्चल आत्मविश्वासके दर्शन होते हैं।

कमुत्तेजसम् जल्पेद् वैभवमोत्सवम् कैवो तच्छिष्यवर्ष
विभूतिम् परशियवो तनुजनुजर्मिषु वीतेयवो
विशिष्टवर्षम् लिखितिक नोकटे विश्वेशि । नी सन्निधिम्
पदिपा नुड ननुप्राहिपुमिरिये काम्यम् कामेश्वरी ।

[कवियौके जय ! जय ! करने योग्य वैभव दिया है। शिष्य समूहसे मुझे अनुसूहीठ किया है। सन्तान भी दे रकी है। विशिष्ट एवम् भी दिए है। हे माता ! कामेश्वरी ! भव मेरी इच्छा एक ही है। वह है तुम्हारे शिष्यममें कवि बना रहूँ। कृपा कर दो न माते !]

तिस्सति-बेंकट कवियोंकी रचनाओंमें वीरतम् एक विशिष्ट काव्य है। यह एक सुन्दर व्यंग्य (Satire) एवं मुक्तक रचना है। बेंकट शास्त्रीजीके किसी शिष्यके उन्हें गुरु न मानते हुए, उनकी निन्दा करनेपर वह काव्य रचा गया है। "अस्त्य प्रकापेति भी शास्त्रीजीके अत्यन्त क्रुद्ध होनेपर उस आनेणके कारण बतायास ही जमड़ी हुई वह 'वीरत' की कविता प्रायः तिस्सति-बेंकट-कवियोंकी रचनाओंमें विस्मयान बन जात्य प्राणीको अपूर्ण रूपसे बलकृत कर रही है।"

(भी काट्टि-बेकटेश्वरराज)

पद्यके नामकी परिभाषा देते हुए कवि कहते हैं—

वीरुवेतु रतास्ते वै वीरता परिकीर्तिता
तानुहिषयकृतम् काव्यवीरतम् परिचक्षते ॥

[विराजोंमें निनकी बाधित है उन्हें गीरत कहते हैं। उन सज्जनाको काव्यमें रचकर लिखा गया काव्य वीरत कहलाता है।]

वीरतम् में अधिक प्रसंगमल गुरु शक्तिना विद्वद्वाचकना लोकाभिप्रायमाम् नामक चार भाग हैं। महाभारत के अनुरूप पर्व-विभाग किया गया है। पद्योंका नामकरण विराला है। यथा मेकुविधिम् पर्वम् (बीने कसनेका पर्व) चण्डक पर्वम् (हाली बजानेका पर्व आदि।)

वीरतम् के समान ही गुप्तरिहीमा भी व्यंग्यारमक रचना है। वीर-तम्में रामकृष्ण कविदुम् * पर व्यंग्य किया गया है तो गुप्तरिहीमा में कोपरयु कविदुम्* पर। इन नाम्योंकी भाषा-शैली सरल और सरस हो बोलचालकी भाषाके समान ही है। कही-कही पाण्डित्य-अदर्शनके लिए प्रौढ़ शैलीमें लिखनेपर भी सहज

* बीकेटि बेंकटराम शास्त्री और वैकुण्ठ रामकृष्ण शास्त्री नामक ही कवि।

* कापरयु मुष्वाचक और पार्वतीधम।

सरलता इनकी कविताका विशिष्ट लक्षण है। सोडुल नाककलन आकुडुग जेसी [जगतकी भीमकी ही (बोलीको ही) रचनाका माध्यम बनाकर] किसनबासे इन कवियोंकी रीती सद्बुध और सरल न होनी तो कैसी होनी ?

कवियं पुट्टिनबाडबेकन [यह बेकन (बेकनसास्त्री) कवि होकर पैदा हुआ है।]* कहनेबासे इन कवियोंमें आत्मविश्वास और स्वाभिमानकी मात्रा कूट कूटकर मरी हुई थी। वे समझते थे कि हमारा जन्म ही कविताके लिए हुआ है —

कवनार्थं मुखयिचितित्
सुकविता कार्यमे वा कृतित्
मदम्ब मङ्गल वरित्तु,
तद्भवमद्भाग्यम् ।

[कविताके लिए ही मेरा जन्म हुआ है और सुकविता करना ही मेरा पेशा है। इसीलिए इस संसारसे ठर बाढेगा और उस लोभकी यात ? बहु तो मेरे कपुटकी बात है।]

इसी कारणसे किसी राजाकी सभामें रहना या किसी की नीकरी करना उन्हें बिलकुल पसन्द नहीं था —

कबुलमिप्पडि कसा (rules) कु कट्टु बडम्
धनुल पडितरामाडि कबुल कुम्
बोवल्मडिपोडुम्, वैचुल्लेन
तम्बपेट्टुम् माकु वस्तभुल लेव ।

[हम कवि हैं। आजकलके नियमोंसे न बँधकर, पण्डितराम आदिके मार्गपर विचरण करते हैं। भगवानकी भी परबाहू नहीं करते। हमारा कोई स्वामी नहीं है।]

देवी पूजा-निरत बेकनसास्त्रीजीन कहा —

गरनाभुल पल्लवडि मित्रुलपियुभं मागि तस्तभिचिन्
शिवरवासम्मोर्गडिन् पुनिकलु तारे यानु, भी बडि स
लकव्याप्रोक्तिति येंवया बेरियि बिद्याबुल्लुल्लेचि मे
बदस्तभिरयन्नु पोल्बुदोप्यगुने मंदा ! देवि ! कामेववरी !

[कई राजा मेरे मित्र हैं पर उनके यहाँ महाके लिए एह ज्ञानके प्रयत्न मुझसे नहीं होनेके। हे माता कामेवरी ! तुम जैसी करुणामयीके हाथों पल्लव, बड होकर, बिद्या-बुद्धि सीलकर सदा दूसरोंकी सेवा करते रहना कहाँ तक ठीक है ?]

* Poets are born not made.

अव्यक्त भाषा होनेके कारण ठेसु भाषामें सहज-भाभूर्ण है। इसीसे मुख होकर किसी बिदेसी यात्रीने इस भाषाको Italian of the East कहा है। ठेसु पद्य तो राग-रस सुन्दर हो मुखरमें याया जा शकता है। आनन्द बेगामें पद्य पठनकी एक विशिष्ट शैलीका प्रारम्भ किया तिलपति-बैकट कवियों। अवधानके समय अनाथाको मुख रक्षणका यह एक अच्छा साधन है। आजकल कवी पश्चित इसी शैलीका अनुकरण करते हैं। साठ साठके होनेपर भी बैकट शास्त्रीका न तो स्वर भाधुर्ण ही कम पड़ा और न कलम ही धीमी हुई। पठिपूर्ति महोत्सवके समयमें कविवर कस्मा भी (अध्यात्म पाय्यशास्त्रीजी) के पद्यमें यह भाव बड़ी सुन्दरताके साथ व्यक्त किया गया है :

सतमोदि बैकु कल पल्लववहुधि नाभि
 पल्लु कम्मदरनंशु पल्लववहु,
 नडकली बडबल्लु बोडतुपुने पाभि
 मुडुल्लो बडबादु मुडुदरादु
 घारीर पदिबंशु बाव बुमभि पाभि
 पारवापटिभंशु कारसेकु,
 ओडलिपै मुडुतल्लु बोडमुबुमभि नाभि
 कवित्तो मुडुतल्ल पाग बडकु,
 परप नोक्कोलक येकु पै बडुकोलभि
 नीकु बुडमुबुडपा नीकु कवित्त
 पंतकंतकु बसुपिक्कगुचुनुडे
 जिब्रजिबिपीर । लुक्कित्ताच्चिक्कार ।

[छिरेके बाळ पतले पड़ नए पर बोलीकी मिळस तो पठनी नहीं पड़ी। भाषमें लक्ष्मणशुट भा गई पर, बोलमें तो लक्ष्मणके नाम तक नहीं। शारीरिक कामर्ण्य कम हो रही है पर आरथा शक्ति डीली नहीं पड़ी है। शरीरपर सुरिया पड़ रही है पर कवितामें नहीं बल नहीं बीक रहे हैं। एक-एक छाल बढते जानपर, मुम्हारे बुड बनते समय मुम्हारी कविता तो दिन-दिन मुखरी बनती जा रही है। हे मुक्कविताके चिनेरे! यह कैसा विचित्र है?]

आधुनिक सम्प्रदा और अँग्रेजी शिक्षासे बैकट शास्त्रीको अत्यधिक दुःखा थी। आधुनिकतापर उन्होंने कई चुनते स्पष्ट किए हैं —

लक्ष्मणमुक् गोविन्दबुकोरुकरडा ! सम्पानुता ? काव;
 [सब बुड मुडपा लेते हैं पर संघासी तो नहीं है।]
 बोट्टापितेनिमु फातमोदिक्करैमो । मुडका ? काव '

[लम्हाट घावपर थोड़ा-सा भी ठिक्क धारण नहीं करते पर बिधवा तो नहीं है।]

तेसुमु देस एब तेसुमु भापाक प्रति अनन्य अनुराग प्रकट करते हुए बेकट शास्त्रीजी बेबीसे इस प्रकार बिनती करते ह —

बननामाबमनुषहिणु, मरि मी सनयमुकावेनि वी
बननर्मनुनु ना कोसंगुमैदुको संगीतसाहित्यमुल्
पनितेभीपुवरंगु बोपयकुनै भावांतरम्मूल

[हे माता! बन्न राहितमसे अनुगृहीत करो। वह तुमसे नहीं हो सके तो भयसे भयमें भी किसी तरह संगीत और साहित्य—य दो बिछाएँ दे दो। पेट भरल माकके किए हुए भापाएँ नहीं चाहिए।]

सन् १९३३ के मास मासके अपने सम्पादनक्रममें भारतीय (प्रसिद्ध तेसुगु साहित्यिक पत्र) ने इस प्रकार अपनी यज्ञाञ्जलि समर्पित की थी।

“१९ वीं शतीके अन्तिम चरणमें बीर्यप्राय बने आन्ध्र-कविता-साम्राज्यका उठार कर, देशभरमें अपनी विजय-पताकाओंको लहरावनासे परिश्रत और कवि सम्राट् हैं उतावधानी थीं तिस्मति-बैकट कवि। इनकी सरस रचना चातुर्यसे कविता कतापी मदीन असंकारसे विमूषित नूतन-जगसाहसे सम्मरित हो नूतन धीस्मियोसे सङ्घर्षोंकी ह्वम-रंयस्वत्त्वोंपर कास्य करन लयी। आन्ध्र देशके कई व्यक्ति इन महाम् विपुठियोंकी सेवा-सुकुपा कर, उनके अनुग्रहसे कवि और परिश्रत हो प्रसिद्ध बने हैं। आज इस देशमें भी महाभक्तानियंके शिष्यों एवं प्रशिष्योंकी संख्या बहुत अधिक है। इस प्रकार आन्ध्रबार्थीको पुष्ट] बना आन्ध्रोंको साहित्य और कविता-धी से सम्पन्न करनवासे मुनपुरप थी तिस्मति-बैकट कवियोंके पवित्र नाम आम्भोंके लिए निरन्तर मनन और स्मरणके योग्य है।”

आन्ध्र जनतान उन्हें बाल-कमानिधि विद्वत्कवि बाल-सरस्वति किङ्कीन्द्रवटा-यन्मानन [छोटे-बु, कवियाके गुरुगुरुहके लिए सिंह उमान] बाबि उपाधिमाँ देकर अपनेको श्रेय्य बनावा है। आन्ध्र विस्वविद्यालयन कक्षाप्रपूर्व की उपाधिम सम्मानित किया है।

दोनों कवियोंकी बाईं एमी अनुपम थी कि वेगनवालोंको आदरय्य हाठा या क्रिब दोनों एक है? या हममेंसे कौन प्रतिभावान है? इस विचित्र सम्मेलनकी व्याख्या करने हुए शास्त्रीजी बते हैं —

तिरुपति बैतबकवेनो मतिप्रतिमामहिमद् बैकट
इवयकु बैकटइवपनि बन्तने बैदिलो या मरुत्समुल्
तिरुपति; तत्रिबेकमु निलिपुल् सैतयेकपतिहुं
तिरुपति बैकटइवस्त तेगुव वाकवसयनतुरे

[तिरपतिसे आया हो बेकलघका यह अति प्रतिभाकी यहिमा मा बैकलरसे ही तिरपति महिमाभित हुआ है। पर यह खूबस तो बेबता भी नहीं जानत। तिरपति-बैकल कवियोंका यह साहस कृकवियोंको कविमात्रोंकी कहसि कल्प्य होया।]

एता वा उमका परस्परका लीहार्त ।

अपन अलघाली एवं रचनाओं द्वारा एक अर्द्धशती तक समय आन्ध बेसको प्रभावित किया है इस कविमूगने। प्राचीनता और नवीनताके अन्धि-स्वरूपपर खड़ ही इन कवियोंने कविताको कल्पप्रिय बनाया है।

उच्चर अहिजियतकी बाहु और उच्चर पण्डितोंके प्रीङ्ग-भाषाके पक्षपात के बीचने पड़ पिछलबाध तैकुगु साहित्यको नव जीवन दे नव उत्साहसे भरनेबासे ये कवि भाओं कात्तिदास और अकभूति ही हों।

इस प्रकार नव्य कविताकतरनके मगौरन बन आन्ध साहित्यको एक अपूर्व बीधिते प्रकाशमान बनातबासे तिरपति-बैकल कवि तैकुगु साहित्यमे अन्नर अमर कीर्तिके पात्र है।

अवन्ति ते मुहुरित्तो रत्तकिङ्गा कवीस्वरा ।



तिरुपति-वैकट कवुलु

[काव्य-सङ्ग्रह]

[तिरपतिसे आया हो बेंकटेंसको यह अति प्रतिभाकी महिमा या बेकटसरसे ही तिरपति महिमान्वित हुआ हो। पर यह खूब तो बेवता भी नहीं जानते। तिरपति-बेंकट कवियोंका यह छाहस शुकवियोंको कविमार्गको कहीसे कम्प होगा !]

एसा वा उनका परस्परका सौहार्द !

अपने अक्षरार्णो एवं रचनाओं द्वारा एक अर्द्धशती तक समय मान्य बेसको प्रभावित किया है इस कवियुग्मने। प्राचीनता और नवीनताके सम्य-स्वल्पपर खड़ हो इन कवियोंने कविताको सत्प्रिय बनाया है।

उत्तर अंग्रेजियतकी बाह और इधर पच्छिमकी प्रीत-भापाने पसापात के बीचमें पड़ पिछनबाक तेज्जु साहित्यका नव जीवन दे नव उत्साहसे भरनेवासे य कवि मार्गो काश्चित और भवभूति ही हों।

इस प्रकार मध्य कविताकतरबके भवीरव वन मान्य साहित्यकी एक अपूर्व शीष्टसे प्रकाशमान बनानवाके तिरपति-बेंकट कवि तेज्जु साहित्यमे बजर बजर कीतिके पात्र है।

अपन्ति से मुहुक्तिनो रससिद्धा कवीवरता ।

• • •

तिरुपति-चैकट कवुल्ल

[काव्य-सङ्घप]

१ बुद्ध चरित्रम् (सुर्षपोषाख्यानम्)

राजगृहामिधाननगरम्बु गरम्बु स्वघमपद्धति
 बेजम्बु तप्पकुड मवनीपतिये तगु बिम्बिसारु डे
 ले जनम्बु स्तुतिप ललि मेकुचुनुडे गुल्लोनुत्तन रा
 राजुल माडिक मन्नुलु तिरम्मुग सुत्थिति देस्सुचुडगम् ॥१॥

रत्नगिरि कःबरम्मुन राजपुम्बु
 डोकडु राज्यम्बु विडिबि मिधुक्कुनि पगिदि
 नचगि युष्सा, डतडु महामुष्सा
 डनियेडु बबन्ति राजगृहम्मुन बबले ॥२॥

अनब योकर्तु तप्पगरम्बु बसिचुचुनुडु, बानिकि
 बगुनु डोकडु बाडुपबननुन पुम्मल्लवाडु बिम्बिका
 टुनकु गतासुड अनितडु ल्लेत्थिकाडु रम्ब येनि य
 अनितकु देस्सि, राये पेनुवत्त मरत्थगलेक यत्तयुम् ॥३॥

कोडुकु पामु कत्तन गुल्ल नचबोडु जेर
 बोयि नीब मेत्ति मोडुकोनुचु
 'नम्बु बिडिबिपोते ना कुलाधारब
 ना तनुल यनि मनमनु बोगिति ॥४॥

बेडियु डुरस्त बिस्तामरबापलेक यप्पापत्तिसबबुपे बडि पिटसु
 बित्तपिणे ॥५॥

कटकट येत्तवेनि भोक कट्ट मेरपक नीयु माकु ग
 स्सुटकु मनबवीवमुल मोलिघ जगम्मुलु मेक्कगटि नी
 बिटिपोटि मेनु गाड गरधे वेनुभूतमु बोले नेत्त य
 बटिकमु सेनपोये गोडुक्का । कडकोक्कडि काम सर्पमो ॥६॥

१ सुख-घरित्र (रात की कहानी)

स्वधर्म पद्धतिके अनुरूप तेजस्वी त्रिम्वहार, जनताकी प्रशंसाओंका पात्र हो राजगृह नामक नगरपर कुलीन राजाओंकी भाँति, मन्त्रिगणस्य राज्यकी सुस्थितिपर परिचय पाते हुए शासन कर रहा था ॥१॥

उस राजगृहमें एक अफजाह उठी कि रत्नगिरिकी गुफाओंमें एक राजकुमार अपने राज्यको छोड़ भिक्षुकी तरह रहता है जो बड़ा ही महिमायुक्त है ॥२॥

एक जनाय स्त्री उस नगरमें रहती थी, उसका एक पुत्र था। उपवनमें धूमते समय उसे साँपने डस लिया और वह मर गया। उसके मित्रोंने तुरन्त माताको इसकी खबर दी। वह इस महा दुःखके मारे—॥३॥

रोती-पीटती वहाँ गई जहाँ साँपके डसनसे विगतप्राण होकर बन्धा पड़ा था। हे मेरे कुलाधार! हे मेरे तनय! हाय! मुझे वक्रेकी छोड़कर चल वसे! ऐसा कहकर वह बिसरने लगी ॥४॥

फिर तुरन्त विन्ता भारको सह न सकनेके कारण उस वक्रेके शवपर गिरकर वह इस प्रकार बिलाप करने लगी ॥५॥

हाय विना किसी कष्टके मुखसे रहनवाली मेने पुत्रकी इच्छासे अनेक देवताओंकी पूजा कर शोकको प्रशंसा प्राप्त हुए तुम्हें जन्म दिया। हाय पुत्र! यह कहींका काससर्प महामृतके सम आ घमका जिसने निर्दय हो तुम्हारे मर्दे शरीरको डस लिया ॥६॥

तोडि बालुरस्तो गूडि नेडु वेमि
 गेळिमे मुल्लबेळ निश्लेस करबे
 नट्टनडि पूल्लस्तोट फणाघरबु ?
 पामु गाबडि नातोळिबामु गानि ॥७॥

कोडुकु कळेरमु पयि
 बडि पिट्टु सेस्तेति येडु पडति गनगा
 बडबाटुन जानुवेचिरि
 बडिबडि मा पिट्टुपोट्टु बाडल्लबुक् ॥८॥

गोळगोण नेबियो गोणुगुणु गेरु सा
 रिचि भाबनुळ मज्जिबुबाद,
 बिपमु बो मन्नुळु बिपबस्तुबुसे यडु
 नूरि कस्केमु गटपूळबाद,
 वनपत्रमुळु वेचिचि पत्तद गिप्पेम्बीति
 मुळुबेबुस मोक्कित्त पोयुबाद,
 पुरबेचशाळुकु मरिगि भेयजनीर
 मुळु वेचिचि गळमुन मोळुकुवाक,
 मेचटि प्रायमु ! सेचिपोमिन बटु
 गोडल्लकोट्टुकु येडुबुळ विरिचिकोमुणु
 हुट्टुट्टु लविचु कमीद हुडिचिकोमुणु
 मट्टुबाळुन भेरि तत्परजनडु ॥९॥

इट्टसनेडु स्नेक प्रकारम्मुस बिपनिवर्तमोपायम्मु लालोचिचि
 योनर्बुचु मूतपुत्रपणु मायम्म मोबाबु चुरंत मरि कोबद ॥१०॥

ई नगरसमीपार
 प्यानि गृत्नगिरिकबरांतरमुन म
 म्युमानुभाबु डोक म
 तीनुंडुप्राबतबतीत्रियुडेडुनु ॥११॥

साथी वासकोंके साथ प्रेमके साथ फुस्यारीमें खेसते समय,
मुम्हें बसनेवासा वह साथ नहीं है बल्कि वह ता मेरे पूर्वजभका
पाप ही है ॥७॥

पुत्रके धवपर गिरकर जोर-जोरसे रोनेवासी उस स्त्रीको
देखनेके लिए, पड़ोसके लोग धवड़ात हुए दौड़े आए ॥८॥

गुनमुनाते हुए, हाथ फेंकाकर मार्जनमन्त्र पढ़नवाले,
विपकी दवा बिप ही है कह दवा घिसकर, औखोंमें
छ्यागनवासे कुछ जगली पत्ते लीकर रस निकालकर भाक-बाममें
डासनेवासे नगरकी वैद्यशासा जा दवाईकी पानी ला, गलेमें
डासनेवासे बरे, कहाँके प्राण? वे तो कभीके उड़ गए।'
कह आपसमें निराशा सूचक बातें करनेवासे, उस नगरके जम
टपकते औसू पोंछत हुए चल गए ॥९॥

इस प्रकार कुछ लोग कई प्रकारसे विप निवर्तनके उपाय
करत हुए मृतपुत्रवासी उस स्त्रीकी सान्त्वना दे रहे वे तो
कुछ लोगोंमें कहा — ॥१०॥

इस नगरके समीपस्थ अरण्यमें रत्नगिरिकी क्यरारोंमें
महानुभाव और अतीन्द्रिय यतीस्वर रजते हैं ॥११॥

आप्यमयोहकु नोमृत
 कायमु मोनिपोम्मतद्द करुणामरपुं
 डायु बोसय समर्धुद्द
 पापयिदि पनुषु देसुप नापेसु गडकन् ॥१२॥

बुलमु पयि मृत पुत्रकळेबरमु इग बर्वुम मोमुषु मे
 नासगजलाडग गमुल बाप्यपु गास्वसु मोसुन गारग न
 क्तज मेव निषु विकारमुन गोडुका ! कोडुका ! कोडुका !
 यनुषु
 गुलमुस नीडलकुं समुचुं जने गूरिनवस्त विगुल्लडुचुम् ॥१३॥

कुमुम पेशालमीन पतिपापमुपुपै
 असजस गभीर आर्धु बानि,
 'निट ममु विडिचि नीवेगिते हा पुत्र
 हा पुत्र' यषु मिट्टडसु बानि,
 'ना पापकसमु फजाघरमे निषु
 गरबेरा कोडुक ! यबोरसु बानि,
 'मपकारमेमि मे नाचरिचिस्ति माल
 रेवुनि ? कवि सारे विट्टुबानि
 'ना सुपुनि त्तिक्किचु पुष्य प्रचार
 जेप्यगबरम्म बेगमो जेट्टुसार !
 यनुषु ना यो नगंयुस नडुगुबानि
 गनिये सिद्धार्धुडेत्तयु गरणमोसय ॥१४॥

कवि 'नी बेवते, बेकत
 मुन इमपुंडीसो, गहममुनकु जमुडे
 चिन कारणमे, मनि या
 चिन मामेसु बेस्सुग डुरटिस्सुचु बसिरेन् ॥१५॥

उनके पास इस मृत देहको र जाओ। ब दयालु महारमा
 वायु देनेमें समर्थ हैं। पुत्रकी जीवित करनेका यही उपाय है।
 तब वह उस प्रयत्नमें ॥१२॥

कन्धेपर मृत पुत्रको धावको रख उस भार-बहनसे शरीरके
 कौपमेपर, बाँधोंस बाँसुओंकी धाराभाक वहते हृदयका आदर्चमें
 और विकारसे भर बनेवाल स्वरमें 'हे पुत्र! पुत्र'
 कहते बूझोंकी छायाओंमेंसे होते हुए, दुःखभारसे बिलके
 टूटते-टूटते, बर्ही गई ॥१३॥

फूल-से उस नहँ धन्वेको कन्धेपर रख और वहानवाली
 'हाम मुझे यहाँ छोड़ कहीं चले हो पुत्र! कह त्रिलोकनवाली
 'मेरे पापका फल ही सर्प बनकर तुम्हें डस गया रे मेरे लाल!'
 कह रानवाली 'उस निगाड़े भगवानका मेने क्या विगाड़ा?'
 कह बारम्बार भगवानकी कोसनेवाली और हे बूझो! मेरे
 पुत्रकी बचानेबाह पुष्य प्रचारका पता शीघ्र बतहा दा न!
 पूछनेवालीकी विद्यार्थने वड़े करुण भावसे देखा ॥१४॥

देखकर पूछा—'तुम कौन हो? किस कारणसे तुम्हाय
 पुत्र मर? इस जगलमें आनेका कारण क्या है?' वह
 और भी अधिक रोती हुई बोली ॥१५॥

पतिबानि वामु वनमुम
 गस्मिस्तगे प्राकु धीडोकड सुतुंडी
 निसुर्बुं व्रतिकिपयल त
 पति कलडिगिरि मटचु वस्किरि पौदल् ॥१६॥

तदर्थं ना वच्छुट, यस्म्यह्मत्सु नेरियिनिबे नानतिम्मनि
 मंवनशोकम्मुन मल्लुडुरुचु वन मुवर जालु नानि गाधि
 भूतवयापारीचुडगु मा-तंविद्लनिये ॥१७॥

'पौस्सु मीडु जेपिन तपस्विनि मेनचुमी, मनोहरा
 काव भवत्कुमाव इटिकासमुतं व्रतिकिनु गानि मी
 पूरिकि बोयि सपयमुलोप्यन वैम्मोक बोधि, पुनु नि
 जारणि मुंशु मेनु सविद्यम्मुन नीययि काचु चुडेवन्' ॥१८॥

मरियु नोकक विनेधंशु गल्लु विमुमु, वानमीजनक पतिपुत्राहुल
 मरलम्मुन नेधंशुनु मापमुलु गानि पौस्सयिटिकि जनि
 पावलु गार्चिचि तेवलयु जमी ! यमु सर्वार्थसिद्धिनि वचमंशु
 लमदानम्ब संशोहकु डेववुन बुवयिपजेय पुमाव मट गूतलवारिधि
 जेसि मरसि राजपुहम्मुन नोक मुहम्मुन करिणि कलत्तेरमु
 मोडिचिन ना यिटि मुतैडुव तनयोन्जीवनत्परायमाण मानस
 ययु नाये विद्लनिये ॥१९॥

वतनंशु म्परचकु जम्मुबुलकु स्वशामाविक, म्मेरिजे
 शिन्निसंजीने ? सुषडुन्नेकडिवि तल्ली ! येटि केडादिपै
 ननु पात्तेनु प्रयोञ्जकु म्मुवनमंवारंशु जेटुतवा
 निनि डुंशु रियन्धिवि रायिकरणि म्मीचिचि विद्लंशुने ? ॥२०॥

मायलकु नेमि भाग्यमु,
 कावलसिन गोमुमदभ, गमीव कुच
 प्राधारमु वडुपग जनि
 या बीयि मलट्टि गृह्णितुलवर नडियेन ॥२१॥

'बच्चेको मनमें साँपने बस लिया। यह मेरा इकलौता पुत्र है। सोगोंने कहा कि इस गिरिपर मेरे बच्चेको जीवित कर सकनेवाला तपस्वी है' ॥१६॥

उसी महात्माके लिए मैं आई हूँ अगर जानते हो तो बता दो। पुत्रसोकसे दुखी और अपने पैरोंपर पड़नवाली उस स्त्रीको देख मूतपमानिरत उन्होंने कहा—॥१७॥

सोगोंने जिस तपस्वीकी घास तृपसे कही है वह यही हूँ। मैं तुम्हारे अति सुन्दर सुशौच पुत्रको पलभरमें जीवित कर सकूँगा। पर अपने भाँब जाकर थोड़ी-सी राई लाओ। पुत्रको इस धरतीपर छिटा दो। मैं तुम्हारे समान इसकी रक्षा करूँगा ॥१८॥

पर एक खास बात है। माता पिता, पति-पुत्रादिक मरणसे आपन्न न बननवाले सोगोंके घरसे राई माँग लाना है! 'सर्पायें सिद्धके बचनोंसे मनम अमन्द मानदके उत्पन्न करनेसे उस स्त्रीने पुत्रको भूमिपर छिटाकर फिर राजगृहके एक घरमें जाकर सारी हास्य बतलाई तो उस घरकी मुहागिनम तनयोज्जीवितस्वरायमाणमानसा (तनयको पुनरुज्जीवित करनेकी उतावली रखनेवाली) उस स्त्रीसे कहा ॥१९॥

'जन्म और मरण तो अस्तुओं (जन्म लेनेवालों)के लिए स्वाभाविक है। कस किसके किण सरय है? सुख ही वहाँ है बितिया! वर्षभर भी नहीं हुआ कि कृदास और सुजनमन्दार, हट्टे-कट्टे पुत्रको निगसकर हृदयको पत्थर बनाकर जीवी नहीं रही? ॥२०॥

राईकी क्या कमी है? जितनी चाहिए ले लो। तब उसने आँसुओंमें आँसुओंके भिगोते भिगोते उस मुहस्तेकी सब गृहिणियाँ जा पूछा ॥२१॥

कन्नविडडलनेस्स गंपपासोनरिच्चि
 बलिकिन परम निर्याप्युरीङ्गु,
 बाह्यमव मर्तसु पेइनिङ्गु र
 षडसिन वुरड्ढबस्तुरीङ्गु,
 जिरकासमुमकु बन्धन चूळु गोस्पोयि
 बन्तणे गुन्नु चूर्लेतराङ्गु,
 बसितनम्मून मारिकसिमसंपिन तस्सि
 बङ्गुस कड्ढु स्वतागुरीङ्गु,
 यानि येङ्गुनु नडगिन करणि इमकु
 बस्यु सिद्धार्थमु सोसुगुबार पुरमु
 मत्ताडल गामरारैरि नात्तिकास्म
 शिधुमरजदुःखवार्धि सुष्किपञ्चेय ॥२२॥

तनकै यावल निम्म
 च्चु मडिगिन बेळदि पुत्रशोकानि रचि
 स्सेनु बावतनपीरी ह्हु
 यनसकगुप्ताघन शोकह्लचूचडुन ॥२३॥

तन्नगरनिधेतनमुस
 कर्त्तितिकि मरिमि सुतुनकोपयमनि या
 पञ्चुसु तामेन्नडु गा
 कुन्न कुट्टुबिनुळु वेरक नोकरनु सेमिन् ॥२४॥

क्षिन्नयमुच्चु राजपुत्राधिष्ठितं बगु पिरिकडरडुनकु जनि कनि
 श्लोक्क कडविन वृतांतमु बेस्सिन नात्तडत्तकन नगुच्चु मम्म
 गव छिट्तल्लित्ते ॥२५॥

समस्त सन्तापको गंगार्म बहाकर, जीनेवाली अभागिनियाँ
 साक्ष्यमें ही पतियोंके मरनेपर भी जीवित नारियाँ
 बिरकासक बाद आई गर्मके छावसे दुखी स्त्रियाँ, बचपनमें
 ही काल-कवलित माता पिताओंके लिए बिरखनेवाली
 अनाथ नारियाँ पर नगरके घरों कोनों ऐसी कोई नहीं मिली
 जो सिद्धायके बचनानुसार राई से सके और उसक शिशुके मरण
 सभी दुखके समुद्रको सुखा सके ॥२२॥

अपने लिए राई माँगनेवासी उस स्त्रीकी पुत्र-शोककी
 अग्निने नगरकी स्त्रियोंके हृदयोंमें सुप्त शोक अग्निको प्रज्वलित
 किया ॥२३॥

उस नगरके सभी घरोंमें जाकर, कभी विपन्न न होनेवाले
 गृहस्थोंके हाथक औपचिकी याचना करनेपर उसे ऐसा कोई
 न दिखाई दिया ॥२४॥

घिन्न होकर वह स्त्री गिरिकन्दराममें रहनेवाले उस राज
 कुमारके पास गई और उसमे उसे नमस्कार कर, साथ
 वृत्तान्त कह सुनाया तो वे मुस्कुटाकर बोले ॥२५॥

' मरुत्तं बु सव सामान्यं बु बुत्तं बु
 गांघनिबाद लोकमुन सेर,
 निजनिबि यनुमाट मीयत मीकृ गो
 चरमुगा मी मुक्ति ससिपिनाब,
 मीबुस बादन खेबम्मुरुकृ पत
 मेद्वियो तेस्मिय मेषि मेनु,
 बिस्वुचुनुभाड बेसिम्युटके प्राण
 मैननु पिडुचु साहसमु कस्य
 टंनु बोधिचि पुरमनु कापे नपि
 ररमयिदि सामुबुस्यब राजसुतुडु
 प्राग्गति वसिधुचुनु ॥२६॥

मरण तो सर्वसाधारण है। दुखी न होनेवाले इस संसारमें कोई नहीं है। यह सच है। तुम्हें समझानेके लिए मैंने यह सब उपाय किया है। इस जैसे दाह्य खेदोंके कारणको जाननेके लिए ही मैं इस तरह घूम रहा हूँ। जाननेके लिए ज्ञान भी देने लैयार हूँ। इस प्रकार समझा बुझाकर उसे भेज दिया और यथापूर्व रत्नगिरिकी कन्दराओंमें रहने लगा ॥२६॥

२. धुम शरित्रमु (नगर वर्णन)

सरियु नद्वियेड बेवतलम्येडकु वण्चि तबेकमोचरुलै ॥१॥

एडुलकुं वनिचिसि, मरेमि योमचुंनुनुटि, बी जग
बहु नक्षिस्त येस्तेडसु व्याप्तमोनर्पुमु, राज्यपालन
बहुनु निद्विसौख्यमुत्तर्पुमु मुम्पक व्यर्षमैम बे
रुक बिग्रावनि बैळमुपकारमु सोकुलकुं वोनपुमा ॥२॥

अनुचु प्रतिपदंनुनु धोधिचुंनुंड सिद्धार्थुडोवकमाडु प्रपच बिसेयम्मुस
नेरिगि तहुपकृतिकि यस्तिनप बलचि चिप्र यनु लोकवासि नदिगिन
मय्यवि
'महत्तमा ! यी यवि वचिप मा बोटि बोटि देट्सु साध्यबा ? यी
विसेयंनुकु बेबर वनि कम्मिन देटतेस्तंनुनुगु ' ननुडु मतडदल काक
यनि चेनुडनु सारयि विसिचि ॥३॥

ऊरतपु गनुगोनबले
बेरायत्तं वोनचि तेम्पन नूरी
कारंबनि वाडरिगिन म
हाराडुनकुन्बधिचेनदि येस्ल वडिम् ॥४॥

राजुबिनि कोडुनुमकदि राज्यकासि
या बलचि पुरम्मधिकम्मुया न
संकरिपंग जाटिचे धोडुमुग म
सकरिचिरि पीरलिसववात्त ॥५॥

२ बुद्ध चरित्र (नगर दर्शन)

फिर ऐसे समय स्वता लोग वहाँ आकर उसे ही दर्शन देते हुए—॥१॥

जन्म क्यों किया? फिर कर क्या रहे हो? इस प्रश्नमें अहिंसाको परिब्याप्त करो। राज्यपालन और इतर सुखोंमें मन न लगाकर, इन व्यर्थ विलासोंको छोड़कर धीरही सोवका हित करो' ॥२॥

इस प्रकार प्रतिपदपर प्रतिवाचित करते वख ससारकी बिधेपताओंको जानकर ही उसने उपकार करनक प्रयत्नके लिए सिद्धार्थन एक दिन चित्रा नामक दासीसे पूछा। उसने कहा—'ह महारमा! मुझ जैसी म्त्री उनका वर्णन क्या कर सकेगी? आप स्वयं जाकर देख लें तो सबकुछ मालूम हो जाएगा। उसने भी उचित ममज्ञाकर 'चन्न' नामक सारथीको बुलाकर कहा—॥३॥

'सारे नगरको देख खाना है रख तैयार करो। सिद्धार्थकी आज्ञा मानकर, उसने धीर गतिस जा महाराजको हमकी सूचना दी ॥४॥

राजाने यह सुनकर सोचा कि यह पुत्रकी राज्यकी भावना है। उसने नगरको समस्तहत करनकी घोषणा करवाई। नागरिकोंन भी राजाकी आज्ञाका माम नगरको बुद सजाया ॥५॥

गुडिडवाङ्गुनु गुष्टरोगुम्नु गुंति
 वाङ्गु रिषतन्ननुमु प्रोक बभ्नुसादि
 गा गल्लु बारसेय्येडगामि वीषु
 लंनु गाम्पिंपुड राजानतिप्पे ॥६॥

कन्नसपडुबो गति वगं बुरमिट्ठसल्लंकरिप, ना
 चेमुडु वेद नायित्तमु चेमुडु, रासुतडत्तं बट्टनं
 बुध्नसुबकलंगनग बूणतरोत्तवमीप्प नेगि कां
 चे त्रप्पल्लुगत्तोडु विष्णेपमुल्लम्मविकेत्तुनत्तुम्पम् ॥७॥

इटसु कौतवडि वीक्षिचि मरत्ति स्वस्वानबुनकरिगि मुत्तवुडे ,
 माटिनिशौबम्मून शुद्धोदनुनत्तु स्वप्नम्मूनत्तिट्ठकल्लनय्ये ॥८॥

भानुडुनु तिस्रच्चारुपुसोन गम्पु
 मोक्कपताक यनिल्लम्मून मोरगि नेल्ल
 बडिन्न पौबड सम्पासिबड्डु वामि
 पोनि अमिरि तूर्पु विक्कुत्तुत्तु गडंगि ॥९॥

वक्षिणघटापघम्मून
 नल्लतगत्ति वडिगजम्मूसदगप मम्भुं
 वडतगल्लतोत्ति येम्पुनु
 दिक्षिच्चुच्चु नेक्कि अनिये तिष्ठापुंङ्गु ॥१०॥

हरल्लोक मासुगु गडु स
 त्तरमुनसागग जनु रयम्मून वा सु
 त्तिरुडु तिष्ठापुंङ्गु तुं
 वरमूर्ति मुबम्मून अनिये वनयन्त वेसन् ॥११॥

सोवगु चित्रमुत्तेडुमच्चुसनु इल्ल
 गल्लमयमुत्तु मागिबय सच्चित्तमुत्तु
 मगु मरमुत्तोप्प लल्लद रषांपमोक्क
 डोवडुयेड नाप्प मत्तुसकक्कजमुग ॥१२॥

राजाने आदेश दिया कि राजमार्गोंपर कहीं भी मन्धे कुष्ठ रोपी, लंगड़े, दरिद्री, दुःखी जन न दिखाई दें ॥६॥

इस प्रकार नगर नेत्रानन्दकर रूपसे सजाया गया। चेतक रथ तैयार कर लानपर, राजकुमारने पूर्ण-उत्सवसे जग-मगानेवाले नगरको मानव लोककी शिक्षेपताओंपर ध्यान देते हुए देखा ॥७॥

इस प्रकार षोड़ी देरतक वेब सिद्धार्थ फिर अपने महृष्टमें जाकर सुखसे रहने लगे। उस दिन रातको शुद्धोदनने एक स्वप्न देखा ॥८॥

सूर्य और इन्द्र घनुष्य मुक्त एक पताकाके जमीमपर गिर पडनेपर, कुछ संयासी जन उसे ले पूर्व दिशाकी ओर गए ॥९॥

दक्षिणके राजपथपर बेरोक टोक दस गज ही गये होंगे कि वहाँ कामदक्ष प्रथम गजराजपर शासन जमाते उसपर बढ़कर सिद्धार्थ चसते बने ॥१०॥

चार घोडोंसे नीघ्र गतिस थीचे जामेवाले रथपर सुस्थिरतासे बैठ सुन्दर आकारवाला सिद्धार्थ प्रसन्न होकर चल ॥११॥

सुन्दर चित्रोंसे युक्त किनारां और स्वर्ण-भाणिक्य खचित आरास युक्त आदर्च्यप्रद एक रथ-चक्र दिखाई पडा ॥१२॥

गुडिबर्वाङ्गु गुष्टरोगुस्तु गुटि
 बाङ्गु रिस्तजनुस्तु वीक वस्तुसादि
 गा गल्लु बारस्त्र्येडगानि बीडु
 ल्लु गान्निपकुड रानानतिज्जे ॥६॥

कधुलपडुबो गति बग बुरमिद्लसंकरिय, ना
 चेमुडु बेद मायितमु चेमुडु, रामुतडंत बट्टन
 बुभसुबंकसंगनग बूर्धतरोस्तबमोप्य नेगि कां
 चे ध्रस्त्रुगल्लोडु बिशोयमुसन्मबिक्केत्तुलद्लुगम् ॥७॥

इदुमु कोतबदि बोदिधि मरुत्ति स्वस्वानंबुनकरियि सुषांबुडे ,
 माटिनिशीथम्मुन सुडोबनुनकु स्वप्नम्मुनतिद्लुकननप्ये ॥८॥

भानुडुनु मित्रचार्यबुसोम गल्लु
 मोकपताक यनिकमुन मोरगि नेल
 बडिन गौबद सभ्यासिबस्सु दानि
 गोमि अनिरि तूर्नु बिक्कुलकुनु गर्डेगि ॥९॥

बलिगधंटापधमुन
 नलतगति बबिगजम्मुलकमग मन्नुं
 बलतगस्सोत्ति येन्नुन्
 शिभिचुचु नेक्कि कमिये सिट्ठार्पुडुन् ॥१०॥

हृदलोक माल्लुगु गडु स
 रबरमुनकागग जनु रथम्मुन वा मु
 स्त्रिकड सिट्ठार्पुडु सुं
 इरमुत्ति मुबमुन अनिये इतयन्त येसन् ॥११॥

सोवगु बित्रमुसंदुनंबुसनु इतद
 गनवमयमुस्तु मागिब्य द्दचित्तुत्तुनु
 नगु मरमुलोप्य नसर रथागमोस्तु
 डोवकयेड नाप्य गनुसककजमुप ॥१२॥

उबाने आदेश दिया कि राजमार्गोंपर वहीं भी अच्छे कुठ रोगी, सेंगड़े, दरिद्री, दुखी जन न दिखाई दें ॥६॥

इस प्रकार नगर मेत्रानन्दकर रूपसे सजाया गया। चेतक रथ ठीमार कर छानपर, राजकुमारने पूर्ण-उत्सवसे जग-मगानवाले नगरको मानव लीककी बिद्योपसाभोंपर ध्यान देते हुए देखा ॥७॥

इस प्रकार थोड़ी बेरतक देखा सिद्धार्थ, फिर अपने महलमें आकर सुषसे रहने लगे। उस दिन रातको सुदीदनने एक स्वप्न देवा ॥८॥

सूर्य और इन्द्र-धनुष्य मुक्त एक पताकाके जमीनपर गिर पड़नेपर, कुछ संमासी जन उसे ले पूर्व दिशाकी ओर गए ॥९॥

दक्षिणक राजपथपर बेरोक टोक दस गज ही गये होंगे कि वहाँ कायदस प्रथम गजराजपर शासन बसाते उसपर चढ़कर सिद्धार्थ बसते बने ॥१०॥

चार मोहोंस जीघ गतिसे खींच जानवाले रथपर सुस्थिरतासे बैठ सुन्दर आकारवाला सिद्धार्थ प्रसन्न होकर बसे ॥११॥

सुन्दर चित्रासे मुक्त किमारों और स्वर्ण-माणिक्य खचित आरोंस मुक्त आश्चर्यप्रद एक रथ-यन्त्र दिखाई पड़ा ॥१२॥

शोक गिरिबग्नुमग्नु दोस्पोडु मोक्क
 भेरिक नयोमयबगु पेह्करं
 गरमुनगोनि डांकुति गडकुकोनय
 नदटे कोदुदुधुनुडे सिद्धार्थुडेसमि ॥१३॥

पोडबुन बमर्षु मोक्क गोपुरपु सिद्धर
 मन्दु गूर्षुडि पबमुकु हस्तमुकुनु
 नाधि योकङ्गु ररमम्मुकु धस्स प्रिम्ब
 नेरिकोमुचुडिरोक कोरिबलमवस ॥१४॥

शोक यागुड बनसोकबो
 बिकलरबनु मोगमुसुनु येलाडय ड
 डकु कोरिडिकोडु नबसा
 रकसुपिताकुसुयि येगसागिरमबसै ॥१५॥

इटसी येडु कललंपीधि मेस्काधि शुद्धोबनुडु बमर्षु गोडु मूडुनमि
 शांकुडुसु गोस्वुकूटंमुनकु बडिच सभासडुस नबसोकिचि स्वप्नवृतातडु
 बडिचिनि नबोक विद्वांसुडु राजा । नो स्वप्नबुलकु फलंबुलिट्टिबि
 यनि क्रमयुग जेप्य बोडैगे ॥१६॥

सूपबिबमुयंठि संशुदुडोकडु
 टेक्कमुनु बोस्मिन्सभेस मुक्कु मिगुकु
 बाकिस्थताचारमडिचि प्रबसग जेयु
 मधि याधारयुनु धुबि मधितयुग ॥१७॥

मा परिवयम्मुसम बुट्टिकगु तेस्सुनु ,
 मोबट्टिकरि मेक्कि येगुटप्यदि तेडुसुस
 यडु सत्यमागम्मुनयंहु बडिचि
 येगु शोकसिद्धुडुनुटु मुर्षोशमीळि । ॥१८॥

एक पर्वत श्रेष्ठपर घोषित नगाड़ेको लोहेका एक बड़ा डण्डा हाथमें लेकर सिद्धाय बना रहे थे जिससे बड़ा डमकी बड़ी आवाज निकल रही थी ॥१३॥

एक ऊँचे गोपुर शिखरपर बैठकर हाथ-पर पसारे कोई रत्न बिछोर रहा था। नीचे जमीनपर इधर-उधर खड़े लोग उन्हें घुन रहे थे ॥१४॥

एक जगह कोई छः लोग जिनके चेहरोंसे विकसता टपक रही थी दाँत पीसते हुए आँसुओंकी धारासे कलुषित मेथ वाले और अनाथ दशामें जा रहे थे ॥१५॥

इस प्रकार इन सात स्वप्नोंको देख हानिनी आकाशसे शूङ्गेयन समामें आए और समासदोंको देख स्वप्नवृत्तान्त कह सुनाया। तब एक विद्वान उन स्वप्नोंके फलका क्रमसे विवरण देने लगा ॥१६॥

सूर्यविम्बके समान समुद्र एक व्यक्ति पताकाके समान चारों दिशाओंमें परिभ्रमण हो प्राचीन आचार्योंका दमन कर, अच्छ और पवित्र संप्रदायका प्रचार करेगा ॥१७॥

वे इस गद्द बुद्धिके इस भाग हैं। पहले हाथीपर चढ़ने का मतलब है उन दसों मार्गोंमें मत्स्यमार्गपर एक गिद्ध पुरप बस पड़ेगा ॥१८॥

भरबभुनु कागु मासुगु
 हृसगतुपोटिबधिप । यवि ज्ञानपु बे
 स्तुर जूपु जतुबगमु ,
 परिपाटिग जूहु बीनि भाबबेस्सन् ॥१९॥

नाना चित्रमुतमु र
 रानातीक स्वगितमुतगु मल चचरें
 सेनीतिरीतिकि जप
 जानून विशेषमुसकु व्यक्तक मधिपा । ॥२०॥

मी कोहुकु भेरिगोद्दुहु मीहु गान
 बहुट कर्बु बेस्वेर बाबिबेद्र ।
 लोकमुसकेस्स वेस्मिग 'भेकमेब
 यनेडि भुतिनि जाटिभुट घरपुमेडर ॥२१॥

गोपुरमु ज्ञान ज्ञास्त्र मगोपुरम्मु
 नुंदि रत्नमुळ जिम्मुटोइस केस्स
 बानि नुपबेसमोसगुबिधम्मु रत्न
 निकरमेस्ट प्रहिंयिचु नियति यधिप । ॥२२॥

मोगमुसु बाडग नापुर
 योगुस्ट तन मतमु बोब भूबाबारा
 नुगति जपतिकि बेस्सुचु
 नेगहु गुस्सुसेहुधुटयनि येरुगु मधिपा ॥२३॥

भनि जेपिन मप्यत्तुसुस चन्दम्मु बिनि पी येहु स्वप्नबुसकु
 वयपसितापम्मु तनूजुंहु सग्यतिभुटका यनि हुतनिपचपुंहु ॥२४॥

रथको खींचनवाले चार घोड़ोंका देखा है न राजन् ।
 व ज्ञानक प्रकाशको दिखानेवाले चतुर्वर्ग हैं । यह भाव तो
 सम्प्रदाय सिद्ध है ॥१९॥

माना बिजोंसे युक्त रत्नमि बडा हुआ वह चद्र तो
 नीति-रीति और ससारके अनून बिघापोंका मूचित करने-
 वासा है ॥२०॥

मुनी राजा ! तुम्हार पुत्रके नगाडा बजात दीखनका
 अर्थ बतलावैगा । वह तो सार ससारमें एकमेव' वाके
 धुनिकी घापणा करना है ॥२१॥

गोपुर तो ज्ञानगास्र है उस गोपुरसे रत्नाको बिखेरनेका
 अर्थ है उस ज्ञानका उपवम देना । उस रत्न-समूहको चुन
 सेनका मठलव है उस ज्ञानोपयोगको ग्रहण करना ॥२२॥

उदास बेहरे सकर छह जनोंका हुन्नी होना अपने-अपने
 धर्मोंके परास्त होनेकी स्थितिका ज्ञान कराते हुए इन धर्म-
 गुरुओंका रोना है जो प्राचीन आचारोंका उपवम दते हुए
 उच्च दयाकी प्राप्त किए हुए थे ॥२३॥

इन बचनोंका मुन, इन बात स्वर्जोंका परिणाम तो
 मरे पुत्रका संन्याम ग्रहण करना है । यह समझ और
 हृत्निश्चय हाकर—॥२४॥

अरबमुनु भागु नाल्पु
 हृष्टमगनुगोटिबधिप ! मवि ज्ञानपु ये
 स्तुर चूपु चतुषगमु ;
 परिपाटिग ब्रुडु बीनि भाकवेस्सम् ॥१९॥

माना चित्रमुतमु र
 त्नानीक स्वगितमुनगु नल चकबे
 तेनीसिरीसिकि चप
 चानून बिशेषमुसकु ध्यजक मधिपा ! ॥२०॥

मी कोडुकु चेरिगोटदुचु नीकु गाम
 बडुट कर्बु वेस्वेद बाधिबेद !
 कोकमुलकोल वेस्मियप 'नेकमेव
 यनेडि श्रुतिनि जाटिचुट यरपुमेडद ॥२१॥

पोपुरमु ज्ञान शास्त्र मग्गोपुरम्मु
 मुडि रत्नमुल जिम्मुटोडन कोल
 बानि नुपवेशमोसगुबिधम्मु रत्न
 निकरमेष्ट ग्रहिण्यिचु नियसि धधिप ! ॥२२॥

मोगमुकु बाडग नार्नुव
 पोगुमुट तम मतमु घोष बूर्वाधारा
 भुगति जगसिकि वेस्मुचु
 नेमडु गुस्कुलेटुचुटयनि येरु मधिपा ॥२३॥

अनि चेषिज मप्पलुकुल चम्बम्मु बिनि यी येडु स्वप्नबुसकु
 बर्षयसिताधम्मु तनुगुडु सग्गसिचुटवा यनि कृतमिशचपुडं ॥२४॥

रथको खींचनेवाले चार घोड़ोंका देखा है न राजन् !
य ज्ञानक प्रकाशको दिखानेवाले जगदुर्वर्ग हैं। यह भाव तो
सम्प्रदाय-सिद्ध है ॥१९॥

नाना चित्रोंस मुक्त रत्नासे जडा हुआ यह चक्र तो
नीति-रीति और ससारके अनून विधियोंका सूचित करने-
वासा है ॥२०॥

सुनो राजा ! तुम्हारे पुत्रक नगाड़ा बजात दीखनेका
कप बटाऊँगा। वह तो सारे ससारमें 'एकभव' वाले
युतिकी पापशा करता है ॥२१॥

पापुग तो ज्ञानशास्त्र है उस गौपुरसे रत्नोंका विखरनेका
अर्थ है उस ज्ञानका उपदेश देना। उस रत्न-समूहकी पुन
सेनका मतसव है उस ज्ञानोपदेशकी ग्रहण करना ॥२२॥

उदाम बेहने छकर छह जनोंका दुग्धी होना, अपने-अपने
धर्मोंक परस्त्र होनेकी स्थितिका ज्ञान कराते हुए इन धम
गुहर्मोंका जेना है जो प्राचीन मानारोंका उपदेश देते हुए
उप्य दगाकी प्राप्त किए हुए य ॥ ३॥

इन बचनोंका सुन इन सात स्वप्नाका परिणाम तो
मरे पुत्रका संशाम ग्रहण करना है। यह समझ और
वृत्तनिश्चय हाकर—॥२४॥

मुनपटिकप्रनु मेरुकुडु
 जनुल गापुचि पूर्वसदतदुन नं
 धनु मुडकोसे , मेनु
 जतकुनकु शुभु विदुव सम्मतभगुने ॥२५॥

भासिद्वार्पुडु पूर्वरीति मरुताडा जेमुनि गूडि प्रो
 कास गम्गोनुचुनु मूर्ति गनु जनु, प्राचनु सेयबुगा
 गासि जेवेडु बानि, बेरुकुगु रोपवुस्म्यथ गुर्प स
 भास बेरिडुबानि वा पनि मरि वापप्रकोपबुनन् ॥२६॥

केसलनुप्र जेनु नडिगि कीडु मेनु
 कासम बट्टिटकुकोमुषु नटसदग मरुग
 बेरोकट कुट्टु बन्नुगुस्वेविक बेविक
 येड्व वण्णेडु सवमोक्कडेडुए पडिमे ॥२७॥

कोमरु डगिगु गुडुगु गोनि नडुबग
 बवप्रमोक्कित गन्पटट वस्त्रसबु
 सवुगा जेति पाडे पै दग बरुड
 वेट्टि मन्नुव बहिपिप वेडसे सवमु ॥२८॥

पडपडि ककुमुपमुक्तपसिसभाकुलमुन्दिवारवा
 स्पदमु ननेक बाहुक सव प्रचुरम्मुनु मेन वस्सका
 टि बरिनि वेट्टि या सवमु डेप्परम धनु वहुनि पास्य बु
 डिदयगुडु मुपास्सुगुडेडु चन्वमु मिप्रमिप्रमे ॥२९॥

विबगंबगुटपु जेमुनि
 नयलोकिचि 'मनमिट्टु लगुडुम ? घन, वा
 डु वसुडु सिद्वार्पुनिकि ग
 सविधं बिप्पगिरि वा गसंगडि मरितोन् ॥३०॥

पहलसे भा अधिक संख्यामें रोगोंको रखवालीपर नियुक्त कर, पहलसेके महलमें ही पुत्रके रहनेका प्रवन्ध करवाया। कहीं भी पुत्रस विलग होना पिताको अच्छा लगता ह ॥२५॥

सिद्धार्थ भी पहलके दिन की भाँति उस दिन भी बेलके साथ नगरको उत्सुकतापूर्वक देखन लगा। भरते हुए एक आदमीको मरणके सिवा अन्य सभी कष्ट उठानेवालेको अनेक रोगोंसे पीड़ित, सत्रस्त एक ब्यक्तिको देखा। उससे मनके सापके अधिक होनेपर—॥२६॥

निकटस्व बेलस पूछकर, भस्मे-बुरेक ज्ञानको प्राप्तकर, पात-जाते एक और जगह रोते-पीटत रिस्तेदारोंसे घिरा एक सब सामने दिखाई पडा ॥२७॥

पुत्रके हाथमें आग और घडा लेकर चलते मुखक सिवा सारे शरीरको वस्त्रसे ढाँपे हुए, जनाजेपर लिटा चार ब्यक्तियोंसे ढोए जात, वह सब निकल पडा ॥२८॥

तदुपरान्त कंक (उकाब) गीघ आदि पशियोंसे घिरे हुए, स्वारोंके निवास-स्नान और अनेक बाहुक और शवोंसे भरे हुए समदानमें उस शवको जसकर रख बनते देख उस राज कुमारके दिलक टुकड़े-टुकड़े होने लगे ॥२९॥

बिबग मनसे बेलका देखकर सिद्धार्थने पूछा—'क्या हमारी हास्य भी ऐसी ही हागी? ब्याकूस मनसे बयान कहा—॥३०॥

४ सन्ध्या-वर्णन

अधरिपु मनतरबन्धन्यु
 नदु रागातिशयमेकश्रुष्टं चोसंगे
 स्वगतुङ्गु हरि वला गौर गमकिचु
 लभाम्हु गल रक्ति बेस्पमोयनम ॥१॥

अंहुजलपुद्गु पूर्णत
 रव ययमयि कौतराणिजिमु सु
 क्मवे तगुडिबमुन प्र
 महुगवा पविचमादि भादुन करिगेन् ॥२॥

हरिबदपुद्गु तन गृहमुन
 कद्वेचे नटंभु पविचमादिधिममुस्म ।
 यरमुन गानुकोसंभ व
 बरुमच्छदि बोस्वे मनग नदणुडेसगेन् ॥३॥

पविचमाचलमुन यान्ति परिठविस्ते
 यानि तुस्सु गौड रिक्तबसनवे,
 मोकदु चेडिपोषु वै गानि मोकदु बागु
 पदटसे बनि ननुसादुपल्लु निरामु ॥४॥

वारकाम्तनु बरलि यंमोदहापु
 डरिपिनन्तन यद्धानि मटुकोनग
 बममपुगुबेचे, वारकान्तल्लु बयिन
 वाद् यीडिन दुरवस्य बच्छुटस्वे ॥५॥

३ सन्ध्या-वर्णन

धुनिए। उसके बाह अम्बुज-बन्धु (सूर्य) में राग (प्रेम, अरुणिमा) अधिक होने छाया मानों मनमें हरिको बर (प्रिय) के रूपमें चाहनेवाली रक्षणाकी रक्षिता (प्रेम काशिमा) को प्रकट कर रहा हो ॥१॥

अम्बुज-बन्धु पहले पूर्ण फिर आधे बन कुछ शोभा दे, फिर सूक्ष्म बने बिम्बमाले ही सनै सनै परिपम पर्वतकी आडमें बसे गए ॥२॥

हरिकेश्य (सूर्य) अपने यहाँ पधारे, इस प्रसन्नताके मारे पश्चिम सागर अपन करकमलोंमें मणियोंके उपहार से उपस्थित हुआ। मानों उन मणियोंकी रक्षिता (अरुणिमा) से सूर्य चमक रहा था ॥३॥

अस्तावसपर प्रकाश फेछ गया परन्तु उदमात्रल कान्ति हीन बना रहा। 'एकके विगडनेपर ही दूसरेका फायदा होता है।' बनताके इस क्षणमें सत्य है ॥४॥

वारकान्ता (दिन रूपी स्त्री) को छोड़ अम्बोसू-आण्ड थस दिए तो उसे ग्रहण करने तम (अन्धेरा) आया। किसी योग्यके छोड़ देनेपर वारकान्ताओं (वेश्याओं) की दुर्गति होनेमें आश्चर्य नहीं है ॥५॥

अंबुजमुत् चान्तिषे, बतगाबलि गूळळुळु खेरबन्धे, बी
 - रंबुल मुंडि बिप्रुसु करबुकुर्बुगु नीठ काबि ब
 रंबुल संपुटंबुसु पोसय गृहबुलकोपुबेधि, र
 परबुन संज तगो, बिरबारे बरंबु क्कमबुगा बेसल् ॥६॥

कोंडससियु गादुक कोंडसप्ये
 खेट्टु क्कियु ओकटिबेट्टु सप्ये
 बंडुससियु मेरेडु पंडुसप्ये
 नेभनगावळु बामसीदीमसबु ॥७॥

कलज कलजबन्धु शारबन्धुसुस्यदु
 पकुगु रागनेसुल गसिसि जार
 कारिणी मम प्रघारबु पाबिप
 बोळु सेक्युप्र बोबुटेदुसु ॥८॥

गगनमनु यति पेकसिधि कालपुदुपु
 इंडुगल बन्धुसुल बयिनमरबेदुदु
 बुध पौलिक प्रममुगा मोषकटोकिटि
 गा बकाशिषे शारकस्त्रामुलुगट्टि ॥९॥

बेस बेस बारे डूपु बेस वेचिळुळोपिनमीड गसिणी
 ससज मोगबु बोसे, शुभसस्त्रण ससितुडे दिगंगना
 तिलकमु सोंपुनम् बगि प्रसिषण्यबद्धित कान्तिसंपबळ
 बेसगग बंडुदंडु बोडिषेन सगपासु तर्मबडपणम् ॥१०॥

ककुवसपासिटि पुमेसु
 कुसुळु बबाराडुपालि कोरिक गबर्बो
 गसपासिटि मृत्युबु बे
 प्रेत्तरायडु बेसिगे बिरहिणी दात्रुड ॥११॥

जन्मुत्र विचलित्तु हुए, पक्षी समूह अपने नीहोंमें आ गया । नवीतीरोंसे विप्रजन हाथोंमें हल्के साछ रगके कपड़े लिए (सन्ध्या स्नान कर) घर लौट पड़े । आवाशमें सन्ध्याका प्रकाश कम होता गया और धीरे धीरे चारों तरफ अँधेरा छा गया ॥६॥

तामसी (रात्रि) की सामर्थ्यकी बात क्या कहें ? उसके पराक्रमसे सभी पर्वत काजलने पहाड़ सभी वृक्ष तमारु वृक्ष और सभी फल जामुन बन गए ॥७॥

अरुज और जसजवन्मुसे प्रकाशित सरत् कासके मेघोंका सारा राग (अरुणिमा, प्रेम) कहाँ चला गया ? हाँ, जार-जारिपीके मनमें यह (रागप्रेम) सञ्चार करने गया होगा । बरन् और कहाँ जाता ॥८॥

भारों भगनकी जामसे सारकरूपी हीरोंको कास-पुरुष निकाल-निकालकर सजा रहा हो, तारे क्रमसे समूहोंमें प्रकाशित होने लगे ॥९॥

पूरे दिशा ऐसी फीकी पड़ गई जैसे उकौनोंके बाद मर्मबतीका मुख हो । शुभलक्षण संयुक्त हो दिम्बधूके सलाटके तिरुके समान प्रतिक्षण वदित कान्ति सम्पतिवाले चन्द्रका उदय हुआ जिससे अन्धकार आघा कम हो गया ॥१०॥

भारों उत्पलोंका भाम्य हो बिरासिनी मुबतियोंका अभी-प्सित हो भोरोंके लिए मृत्यु हो और विरहणियोंका धनु हाँ, इस प्रकार चन्द्रिकाओंका राजा प्रकाशित हुआ ॥११॥

केरे अकोरमुलेस्त , वि
 आरम्भुन मुनिगे अकर्षपतुस्त अस
 बूरेभेतरास्तन् ;
 बूरेन् बपतुस्तकिपु , बोस्तकुस्तु सेरेन् ॥१२॥

पद्मिनीकान्त तनु ब्रूचि पबस्तु नम्ब
 रात्रिनगसागे बानि गैरबिचि बेलमि
 घेरिकेनियु नमवसयेगुमीब
 राभनेसपेडि पुमम राकपोवु ॥१३॥



अकोराकी घन आई (आर पकठने लगे) चन्द्रवाक
 दम्पति दुखी बन । चन्द्रकान्तगिस्तार्गे रममय धनी दम्पतिमाक
 हृदय रममय (प्रमत्त) बन । सुगोबरका जल एकदम फिर हो
 गया ॥१२॥

दिनके समय पद्मिनीकान्ता परिहास कर तो अब
 उत्पत्तिनी उसे देखकर हँसने लगी । किसीके लिए भी अमा-
 बसके बाद सोमामुक्ता पूणिमा आकर ही रहगी ॥१३॥

दीनिकगीरिचितिबेनि मधु
 गैकोनि रमिपुमभेदि यस्कलिकिमिभ
 प्रतिम वेदुराव बोरवि चपट्टि बानि
 यल्लि कीडिबे मोक कोमि बरसरमुसु ॥७॥

तत्कटिस्पर्कमनु बबिसि बित्तमु घरा
 बलपम्मु वै मास गोलुपड्ये,
 बानि नूपाक वै बबिसि बित्तमु कलि
 बेतबुनुट्टु बाध्दिवड्ये,
 तद्वचस्तसक्ति बबिसि बित्तमु काभ्य,
 कलना बिनोडबु बरुपड्ये,
 बानि कौगिटियम्मु बबिसि बित्तमु परा
 डैत भाबबु वै बारड्ये,
 मधुर ! येमनु मप्युडरबुनि चरित,
 मल्लिस मूर्बगिये यनि यल्लड यानि
 घममपबु मोक्षबु बरुपड्ये
 यामुकुस कम्यसगतुस गानबडुने ? ॥८॥

पुर्यमुडीनृपुड्यु न
 नर्मळ रामातिसवमुनन् मरनि पुन
 निर्पममेदगक पूर्वशि
 स्वगम्मुनु बरचेन् ॥९॥

बारसिड्युद न
 मुधयतड
 सोडरीमणि
 पसिको गय्यबुसुनु

अगर तुम्हें ये बातें स्वीकार हैं तो मुझे स्वीकार कर आनन्दसे रहो ।”

उस मनोन्नत युवतीकी बातोंको इनकार करनेमें अपनको असमर्थ पाकर उस राजाने बातें स्वीकार कीं और मनपूर्वक सभी प्रतिज्ञाओंका पालन करते हुए प्रेमपूर्वक कुछ वर्षोंतक आनन्दसे उसने जीवन बिताया ॥७॥

उसका मन उसकी कटिकी कमनीयतापर इतना अधिक आकृष्ट हो गया था कि उसकी रोमावलिके सौन्दर्यने तलवारकी हाथमें रखनके बीर धर्मको भुला दिया । उसके बचनोंके प्रेममें मग्न मन काव्य-कला विनोदकी बात सोच न सका । उसके आश्रममें लगे चिसको अद्वैतके श्रेष्ठ मार्गोंपर ध्यान नहीं रहा । महा ! क्या कहें पुरुरदाके परित्रकी बात ! वह उर्वशीको ही सब कुछ समझता रहा पर धर्म अर्थ मोक्षकी बात सोच न सका । ठीक है कामियोंको बूसरे बिपर्योसे क्या लगाव ? ॥८॥

इस राजाकी सगति कष्ट-साध्य है यह समझकर उससे अनन्य प्रेमकर, मोहाविषयमें बँध उर्वशी फिर वापस जानेका मार्ग न जान स्वर्गको और इन्द्रको भी भूलकर रही ॥९॥

जब वे दोनों इस प्रकार थे, तब इन्द्र उर्वशीको वापस बुला भानेकी इच्छासे, प्रभुतापुत्र वाणीसे गन्धर्वोंसे बोले ॥१०॥

रममोदरुग नप्सरोरमपुलुभ
 पारसंनगु मूर्बंशी बमित सेक
 युप्रकारणमुन स्वयमुप्रदिपुडु
 चन्द्रकळ संनि यंजरस्पलमु पगिदि ॥११॥

कावुन मेवेनि योक नेपम्मुन बुरुरुबु बॉबिनि गोरियस
 नपहरिचिन पार्यम्मु पोसगुननि चेष्वि पचिन ॥१२॥

गन्धर्बुसु रतिकेळी
 बन्धुखडगु नृपति केरुगबडकुडंय घी
 रघयपटिम गोरियस
 नघतमसमंनु ओरुसं हरियिपन् ॥१३॥

आयुरनम्मुक मेमे
 मे यनि रोब सेय बभिमिल्लमेरिगि सी !
 सी ! यनि रोयुबु मृपुतो
 ना यूयशि दोक्तप्लयं पिदसुनियेन ॥१४॥

कोबुकुल वल्ले बेंबुकोनुबुभ ना पोरि
 यल्लु ओरुसिस्टटुसपहरिप
 नाडुबानिकरु नघमुंडबै पूर
 कुट पुवतमगुने ? कुबसयेस ! ॥१५॥

रसिचेदपीवंचुनु,
 पेक्षयोर्नचित्तिनि यानि येक्षयनयित्ति मी
 बलस पिट्टिदि यनि यो
 कुभिभर ! निम्मुगुडि कुत्तितर्नतिम् ॥१६॥

“रम्भा आदि द्योष्ठ अम्बरामोंके रहनेपर भी जो उर्वशीकी अनुपम्यतिमें कास्तिहीन ही बना हुआ है, यह स्वर्ग-चन्द्रकला रहित अम्बरके समान है” ॥११॥

अब पुस्तरवाकी घोषा देकर अथवा अन्य कोई-न-कोई उपाय करके वहाँसे उर्वशीकी भेड़ोंको पुरा लाओ तो हमारा काम बन जाएगा। इस प्रकार आदेश देकर भेड़ोंपर ॥१२॥

रतिकेसी बन्दुर उस राजाक शानके विना ही घुरघुर पटिमावासे से गधबं अन्धकारमें उन भेड़ोंको हर ले गए— ॥१३॥

उन भेड़ोंकी आवाजका शोर-गुल सुनकर तथा उसके कारणको जानकर उर्वशी ‘छि! छि!!’ बरती हुई, शोकसतप्त होकर, इस प्रकार बोली ॥१४॥

पुत्र समान पास्ति मेरी भेड़ोंको चोर इस प्रकार हर ले गए। हे राजन्! ऐसी स्थितिमें स्त्रीका-सा डरपोकपन क्या तुम्हें घोभा देगा? ॥१५॥

यह सोचकर कि तुम तो रखा करोगे ही मैं भी सापर-बाहू बनो रही। मैं नहीं जानती थी कि तुम्हारी सामर्थ्य इतनी-सी है। हे कुक्षिभर! तुम्हारी सपत्तिसे मैं भी कुक्षिवा हो गई ॥१६॥

इदु कटकद बडि तधुं
 बेटिनिपडबिदुतुधुन प्रिमुरासिकि न
 ककटिकमु ब्रुपुटके नि
 धपटुई तत्ककल बेट बडि परगिडियेन् ॥१७॥

नन्नुई बज्जु नृपति बरम्मु नूर्म
 धीबनित केरुय बडग धेयुनिक्क
 कबलाकान्नुसु मेरपिन्बिरपुडु
 धरबीबति वेह्महु गधर्बपतुत्तु ॥१८॥

अन्त ॥१९॥

उरवाम्मुक गौधु बिय
 बरुई तोसेधु नृपति बरिक्किचि बिय
 क्कर बारबनित यातनि
 बरपनुककु म्पोक्कि पसिके साध्वसमेसगन् ॥२०॥

धेपिपति गाबे ? मुधु नृपसेकर ! नाहु प्रतिशत , दानिकि
 बपिन पट्टि मीहु बरिबापुन गापुरमट्कोनतु ? ने
 निपुडपोबलेन् गरुपयिधुक नापयिनुंभु ; मय्ययो
 तप्यकतोक्के ! बिधिबिधानमु तपिन पट्क गूकमुक् ? ॥२१॥

अनि यूरडिचि ॥२२॥

पार्थिवोत्तमु बसवतपामु धेति
 धरिधे नृबशि निदिचस्तर्षे तनगत
 स्वगमुननुंदि बन्धिन वरुधुगाक
 यम्मरो ! धेत्क ! सजेस नम्मबगुने ? ॥२३॥

इस प्रकार दुखी वन, भला-बुरा कहनेवाली प्रियतमापर
बया दिखानेके लिए, राजा नंगा ही चोरोंके पीछे दौड़
पड़ा ॥१७॥

मन्त्र दशार्मे आनेवाले मृपतिबो उर्वशीके घुट्टिमत
करनेके लिए, गन्धर्वराजामोंने भरणीपतिके गृहको चञ्चलाकी
कान्तिर्योसे भर दिया ॥१८॥

तब ॥१९॥

भेड़ोंको ले मन्त्र दशार्मे आनेवाले राजाको देख, वह
वियन्धर बेध्या (देव बेध्या) उनके चरण छूकर सहमें हुए
स्वरमें बोली ॥२०॥

हे राजन् ! अपनी प्रतिज्ञाके बारेमें मने तो पहले ही
कह रखा था। तुमने उसका पालन नहीं किया अतः उससे
वञ्चित होनेवाले तुम्हारे साथ अब मैं कैसे रह सकूंगी ? मुझे
अभी ही क्षमा जाना चाहिए। मुझपर कृपाभाव बनाए
रखो। हाय ! जब विधिका विधान न रहे तो प्रेम भी छूटे
विना कैसे रहेगा ? ॥२१॥

इस प्रकार सान्त्वना दे कर ॥२२॥

पृथ्वीसको दुःखोंमें डाल निश्चिन्त भावसे उवशी चली
गई। स्वर्गसे ही उतरकर क्यों न आई हों पर बारबिसासिमियों
पर भरोसा कैसे रखा जाए ? ॥२३॥

तनुविडनाडि पूर्वशि यथागति मेग, ब्रुवरधुंनु चि
 तनुगोनि, वेरिदूनि, मतिबप्पि, तबीय बिलास बंसरन्
 मनमनु मेवुनुन बिपयमगत जेनुधु सोम गुडुनु
 कनि धमि काबे मरुवटुनबास कठाभयतिन् गुणभितिन् ॥२४॥

धुधिनन्तम मातमि लोचनम्मु
 सतुस्त्रिबस सन्तोयगति भेसगे
 बिरविरह सगनुसकु नेरुबेकिनि गनुट
 कस वेरोडु माम्यदु मरुदे तसप ॥२५॥

भदस कनि डगारि करुमरसबुट्टिपड गडुमरमरुडुड इदुसमिये ॥२६॥

कितिसियेरुपमेदुनु गीडोमरिधियेरुग, नोडु वा
 सुमिगतिसुट्टिगानि योरुचो नयितन् इति जेप्पसेनु, मी
 पतिचिम कायमेप्पुडु नेपबिडि धेयक युंडसेनु, हार
 मनु विडनाडि पोतिबिदि मायमे ? नोडु मुरगसोचना ॥२७॥

मोसो ! बुर्मागुरास ! मन्नीर्ताडिचि
 तेनि योमेनु मे भरिरीयिप जाल
 मा मनमरिगिमुनु गठितत्वमुन
 इलपु बूनेववेतटिबानवययो ॥२८॥

बलचि मनुगस्यनेटिकि ?
 मरुसि इदुस विडिचि वेट्टुगानेटिकि ? नो
 बलपु सतमधु गम्मिति,
 पसिकी ! नमुजिन्त पालुगा जेमुडुधे ॥२९॥

उर्वशीके द्वारा इस तरह परित्यक्त होनेपर पुरूरवा चिन्तित हुए । उसकी विश्वास-बद्धरियावा ही ध्यान करत करते पागल बन उठे । उन्हीं विषयोंमें मग्न हो मनमें दुखी होते इधर उधर घूमत घूमते, क्रुद्ध-देशमें उन्होंने बच्चल एव सुन्दर चितवन वाली (उर्वशी) को दखा ॥२४॥

देखते ही उसकी आँखें अतुलित आनन्दसे ज्योतिष हुई । चिरविरही बनाके स्थिमे अपने प्रियतमको देखनके अतिरिक्त और सौभाग्य ही क्या हो सकता है ॥२५॥

उस दख निकट आकर उमडत करण रसस गद्गद स्वरस व बोले ॥२६॥

कभी तुमस दृष्ट नहीं हुआ कभी तुम्हारा बुरा (हानि प्रद) नहीं किया । सदा तुम्हारा दासकी तरह रहा कभी तुम्हारी बातको टाला नहीं । कोई यहाना बनाकर तुम्हारे बहे हुए कायको करनेसे नहीं रहा । हे कुरग लोचनी ! फिर भी तुम मुझे छोड गई हो ! यह कहाँका याय है ॥२७॥

ह तुष्ट ! मुझस घुणा करोगी तो इस शरीरको धारण नहीं कर सकूँगा । मरे मनका जानकर भा इतनी कठोर बन रही हो ॥२८॥

मुझम प्रेमकर मेरे पास आई ही क्या ? मुझस मिलकर इस प्रकार मुझे क्या त्याग दिया ? मैं ता ममसता रहा कि तुम्हारा प्रेम सत्य है । हे मनाहारिणी ! मुझे चित्तप्रोंमें डुबा दागी ॥२९॥

रमणि ! नी यास्मिन्ननु चोप्यङ्गमिनाङ्ग
 रात्रुलेस्सनु शिवरात्रुसाये,
 पुत्रोडि ! नीडु ताङ्गुस्समम्भमि नाङ्ग
 विनमुस्सेस्सनु हरिदिनमुसाये,
 तेरव ! नी केम्मोवि तेनेस्सम्भमि नाङ्ग
 ऋतुवुस्सेस्सनु प्रीप्प ऋतुवुसाये,
 कसिक्कि ! मत्तो बोत्तुगसिगियुडमि नाङ्ग
 क्षणमुस्सेस्सनु गतक्षणमुसाये,
 लल्लन ! नी नेल्लगवु वेत्तेस्सङ्गु जोक्कु
 भाव्यमम्भमि नाकेस्स पणमुत्तु
 गुम्भपक्षम्मुसाये, श्रीरीति गोप्पु
 कालमेगति वेगित्तुने ? स्ताङ्गि ॥३०॥

अनिबद्धविद्यमुक्क विरुत्ति
 च्चु नृपालोत्तमुनि पाञ्चि सुमूतगति म
 ध्वमित्तामणि यत्तनि विर
 न्तुनि ज्ञेसि मरस्सु तस्सपुतो निट्ठनियेन् ॥३१॥

बेलपाङ्गेक्कड ! गुमुस्सेक्कड ! बयाविदवात्तभावम्मुसे
 क्कड ! सोसो बस्सपोयनेरकिट्टु मौर्ह्यं बुनगा ज्ञेस्सुने ?
 कस्सोनेननु वारकामिनुक्क सांगल्प्यञ्चु वाट्टित्तुरे ?
 कस्सडे सुत्तमु पट्टिनट्टि मगडोक्कडञ्चु मा जातिकिन् ॥३२॥

जनितस्स्येड ओदस्स्येड
 जनपासुञ्च विद्वत्तिपजनददुगालन्
 ननु बस्सञ्चि विचारिपक
 च्चनि राज्यंवेस्सुकोनुमु जननायमणी ॥३३॥

हे रमणी ! तुम्हारे आच्छिन्नके अभावमें सभी रात्रियाँ मेरे लिए शिवरात्रियाँ बन गईं । (जागरण करता रहा ।) हे कुमुम-शरीरे ! तुम्हारे हाथोंसे ताम्बूलके न मिलनेसे सभी दिन हरि दिन (एकादशी) हुए । हे नारी ! तुम्हारे अघर-मधुके न मिलनेसे सभी ऋतुएँ ग्रीष्म ऋतु-सी हुई । हे मनोहारिणी ! तुम्हारी सगतिके बिना मेरे लिए सभी क्षण विगतक्षण (सुख) हुए । हे विद्यासिनी ! तुम्हारी मृदु हास्य चन्द्रिकाओंमें प्रसन्न बने रहनेके सौभाग्यके अभावमें सभी पक्षवारे कृष्णपक्ष ही बने ।

हे छटांगी ! तुम्ही बोलो कि इस प्रकारके समयको मैं कैसे बिताऊँ ॥३०॥

ऐसे बहुबिधसे विनाप करनेवाले नृपोत्तमको देख तत्त्व बोध करते हुए, उसे विरक्त करनेकी इच्छासे उसन इस प्रकार कहा ॥३१॥

'कहाँकी बेश्या और कहाँका प्रेम ? उनमें क्या-विश्वास के भाव ही कहाँ ? ऐसा न समझ इस प्रकार मूर्खतापूर्ण आग्रह करना कहाँ तक ठीक है ? स्वप्नमें भी बेश्याओंकी संगतिको नहीं चाहना चाहिए । जातिका मगलसूत्र बाँधनबाधा नहीं एक पति हो सकता है ? ॥३२॥

राजाओंको स्त्रियों और चोरोंका विश्वास नहीं करना चाहिए । अतः मेरी चिन्ता छाड़कर, अपने राज्यके शासन भारको देख लो ॥३३॥

मनुषु मोप्यजेपि यरिगेमायूवसि
 मनुजविमुहु बानि मरुत्सेक
 वस्त जेदे, नेतबाडेन चारका
 तसन्नु जेरबीपवसु वसु ॥३४॥

इस प्रकार समझाकर वह चली गई। पर नरनाथ उस उर्बंसीको भूल न सकनेके कारण दुखी हुए। कितने ही वडे क्यों न हों, वेत्याबोंको निकट नहीं आने देना चाहिए ॥३४॥

[रेणी भागवतसे]

५. राजनीति

तनया । धर्मम्मुन बु
 द्विनि निरुपन् बलमुनेषु बु द्विजवर्यस म
 सन सेपबस्यु बजसन्
 बनुमुलबसे बोजबस्यु नरनापुनकुल ॥१॥

धनमु न्यायागतबयितनरुटोरुटि
 पनुतमु गासुबेट्टमियुमु नमार्ग
 गामि गाकुट सपसुरु नोमुठयुनु
 बरमधर्मम्मुलिय्यवि पाबिबुनकु ॥२॥

इत्रियनयवु पूजयुल नेरुगुटपुनु,
 मरुगुप्तियु ओरुस मबमडबुट,
 शत्रुसेपवु सेपमि, सच्चिबु नन्य
 सस्तु जेर्पमि पतिकि पशस्कारंबु ॥३॥

सप्रुमिमुसइरुपमुस् चारमुसुनु
 बसन नेरुगुटयुनु सुष्कवादिपामि
 बुष्टसगबु बोसमुट यिष्टुसुकुनु
 बूजयसकुनीगियुनु बिधि मूप्सुसकु ॥४॥

यागमुस नोमबुट मृग
 यागति नतिरक्ति सेमि यमतसंबु
 योगमुस बिश्वसिपमि
 यागमविहितमुनु नृपतुसुगुवारसुकुनु ॥५॥

धृतमुन बानि नाडेडि नोतिरहितु
 नबु मधम्मुनबु चारंगनाज
 नम्मुनबुनु बरबुगानम्मुननु
 विमुसुडे प्रज नदसोनरिपबस्यु ॥६॥

५. राजनीति

हे पुत्र ! राजाको सदा धर्मरत रहना चाहिए । ब्राह्मण-
श्रेष्ठोंका आदर करते हुए, प्रजाका सन्तानके समान
मालिन-पालन करना चाहिए ॥१॥

पृथ्वीपतिके लिए, सम्पत्तिका यामसे कमाया जाना,
अनृतसे दूर रहना कुमागगामी न होना और तपस्वियोंकी
रक्षा करना ये परम धर्म हैं ॥२॥

इन्द्रिय-दमन, पूर्य पुरुषोंका ज्ञान मात्रका गुप्त रखना,
शौरोंके मदका दमन करना दात्रशेषको न रखना अन्त्यासक्त
मन्त्रीकी स्थान न देना, ये काम नृपतिके लिए यद्यत्कर हैं ॥३॥

सन्धु और मित्रोंके कार्योंको गुप्तचरोंके मुखसे जानना,
दुष्कवादी न होना (व्यर्थकी बातें न करना) दुष्टोंकी
सगतिसे दूर रहना इष्ट जनों और पूज्योंके प्रति दानक्षीलता
ये राजाओंके कर्तव्य हैं ॥४॥

यज्ञ-याग करना, सिकार खेलनेमें अति आसक्तिका न
होना स्त्री-जनोंका राजकाजमें विश्वास न रखना राजाओंके
लिए ये आगमविहित धर्म हैं ॥५॥

कुर्तसे जुधा खेलनेवाले नीतिरहित जनोंसे मद्यसे,
बेभ्याजोंसे संगीतसे प्राय स्वयं विमुख हो प्रजाको भी विमुख
रखना चाहिए ॥६॥

अरति ब्रह्ममुहृतमुनयु लेधि
स्नानमोनरिधि निपसुड शक्ति पूज
मक्ति मोनरिपमावले प्रतिबिनम्मु
अम्मसाफल्यमुनु गोड चतुरमतिकि ॥७॥

ओकसारिधेम मप्पर
महुपानिधि नव गोलिधि मधन बत्प
बकमल जसङ्ग प्रोसिम,
सुहृत्तिकि जम्मम्मु सेडु सु निष्कमुगन् ॥८॥

बश्यमगु जगमक्तिस्सम्मु देवदेधि
ओवुडीशबद्धमु गूड देवदेधि
यनि विनिश्चितारमुडगु ननघमतिकि
मत्तुक्तितानम्बमेत्तप्युडुनु घटिष्णु ॥९॥

प्रातः कुर्यमुसन् पयोधितगति आदिधि कोत्सुंदि वि
घातंभमुस विप्रुसन् बिलिधि शास्त्रार्थम्मुल ज्वारिधे
ब्रुतुंदि विनि पात्रुसै तमर मा भूवेवता श्रेष्ठुसन्
ओतिन् बानमुसिधिध पुञ्चवस्युम् वृष्णोसुडेत्तप्युडुन् ॥१०॥

विनु भूर्भुसैन द्विजकुकु
घनमीबस विञ्जेनेनुबर पोपणकुं
गनिपेट्टि यीवलयु सं
घनमोनरिधेपबगडुगा घममुसन् ॥११॥

अनघुसम्मिदेवतस नत्यमत्तात्मुल मधुडेनियुन्
अनवयमानम् गोसुप सत्रकुरुम्मुल कम्महामहुस
जनकूस , आरि यतिनिकिनि, सप्रिय आतिक्ति विप्रजाति सो
हनिधुकुन् शिकूस अनकत्तास्पदमुल् विधिओरितम्मुगन् ॥१२॥

जमनी सफरस्ता बाहूनवाले चतुरमति राजाको ब्राह्म
 मुहूर्तके समयमें जायकर, स्नानकर, नियत हो नित्य ही
 मस्जिदके साथ शक्तिकी पूजा करनी चाहिए ॥७॥

दिनमें एक बार तो उस परम कृपानिधि माताकी शर्चना
 कर, उसके पदकमलोंके बरफको पीनेवाले सुकृतिका वास्तवमें
 पुनर्जन्म नहीं है ॥८॥

अधिम दुःख जगत्को जीव और देवदेवीमय
 समझनवाले बिनिरुचितात्मा पुण्यात्माको सदा ही अतुलित
 आनन्द प्राप्त होता है ॥९॥

पृथ्वीपतिका यथावत् प्रातः—कृत्योंसे निवृत्त होकर,
 सभाका आयोजन कर विद्यातन्त्रके विप्रोंको बुला उनके
 सास्त्रार्थोंको श्रुत पवित्र हो याम्य ब्राह्मणोंको सप्रेम शानादि
 देकर तृप्त करते रहना चाहिए ॥१०॥

इस बातपर ध्यान दो कि मूख ब्राह्मणोंको धन मत देना ।
 अगर दिया ही तो पटभरने मात्रके लिए देना चाहिए, क्योंकि
 धर्मका उत्कर्षण नहीं करना चाहिए ॥११॥

अनभ और अति अमल आत्मावाले भू-देवताओंका कभी
 अपमान नहीं करना चाहिए । वे महिमाय ब्राह्मण
 क्षत्रिय कृष्णके जन्मदाता हैं । विद्याताकी रचनाके अनुसार
 पानी आमका विप्र जाति क्षत्रिय जातिका बिलगएँ सोवैकी
 आमकी जन्मदात्री हैं ॥१२॥

६ रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सबद्वीप षतंस चात्कवितामस्सीप्रसून सुबे
 बामीलाय रवीन्द्रनाथकवये कुर्मन्मुभासंसनम ।
 हेला निर्मितयाऽपिकाभ्य सुघया भाषान्तरी भूतयाऽ
 प्यामोत्रम् बितनोति यस्सुमनसाम् सर्वप्रपञ्चेऽयुना ॥१॥ श्लो ॥

ठकुरबेभाबुधि पूर्णचन्द्रो
 बेवेन्द्रनाथस्य सुतो महर्षे
 यगाळहूनामरवेशभाषा
 मिधि पुरोभाति रवीन्द्रनाथः ॥२॥ श्लो ॥

संडे संडे नगर्यामिपिच जनपदे देशभाषास्वमूक्तम्
 पुष्यादेकाप्रचिस्ता पुलकित वपुषो यस्य काव्य पठति
 वाग्देवीयस्य वाचिशिपति मयुझरीं शीतसां भूतघात्री
 सर्वेषामक्षियुष्म सपदिबितनुता मातिघेयं रवीन्द्र ॥३॥ श्लो ॥

६ रवीन्द्रनाथ ठाकुर

[सन् १९२० में जब विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरलाहा में पधारे थे तब उनके स्वागतमें कहे गए पद्य ।]

सभी देशोंमें घेष्ठ सुन्दर कविता प्रसूनाकी सृष्टि करनेवाले गिराक ऐसे प्रभु रवीन्द्रनाथ कविकी हम सोग शुभ कामना करते हैं, जा अनायास रवी गई अपनी कविता मृधाका अनुबादके रूपमें भी, आधुनिक सत्कारके विद्वानोंको अतीव आनन्द प्रदान करते हैं ॥१॥

ठाकुर वधाम्बुधिके पूर्णचन्द्र महर्षि देवद्रमाथने पुत्र वगला दूषा (अंग्रेजी) अमर (संस्कृत) भाषाओंके विद्वान रवीन्द्र हमारे सामन बिराजमान हैं ॥२॥

जिसके काम्यका अपनी-अपनी भाषाओंमें पुष्पके कारण प्राप्त एकाप्रतामें पड़कर, दस-ज्योक्त नगरोंकी ही नहीं ग्रामीण जनता भी पुलकित होती ह। जिसकी गिराओंमें जगत्की रक्षा करनेवाली माता बाण्डी धीतस मधुको प्रवाहित करती हैं वे रवीन्द्र हमारी आँधामें समाकर हमारे आदरके पाद बनें अर्थात् उनके दर्शन पात रहकर हम अपनी कृताभ करें ॥३॥

अस्मित्वेषा समुच्चयवेण बहुमति
 गणितिचे ने सुरि कौशलबु,
 रसबत्कथामक प्रसरथाबिर्भूति
 कस्मिचे ने कवि कल्पनबु,
 भरतबंधमु कविप्रभु जम्भलमि यन्न
 क्याति स्वापिचे ने धम्युनि वेव,
 सर्वं विद्यासापर अस्वरम्मुत्स्यबु
 बाडबं बाडे ने धम्यु कीति,
 मुकविता दास्ति नट्टि मासुरगुर्बुड
 बरुगुबंधितिबम्प ! मा प्रुरिकि पाकि
 नाड कीनाटिकि रवींद्रनाप मुकवि
 सार्वभौम ! यिरे मीकु स्वागतबु ॥४॥

घगराष्ट्रमु गर्वपकुनट्टुल्लु महर्षि
 बेबेइभापु बुत्रोकारेचे,
 भारतीमुसु सुष्टिपडग ‘मोबिलु प्रैनु
 रीकोने सरसमी कथनमहु,
 सर्वानुभवनीय सगतुस धोनुपुचु
 बपिचे वेवकृ काभ्यमुसु जगति,
 मग्यबडमुक बह्मोत्स्यम्मु विवरिचु
 गीताजमि रचिबि गीति बडसे,
 ज्ञानमुनपदे काक येवव्यमहु
 सतमु रक्षिचे भाग्य बिस्फीति मेरय
 नबमुयामूर्तिकि रवींद्रनापु कीति
 कम्पुबय मम्बुगत निरतरबु ॥५॥

अद्विष्ट वेष्टोंमें समुद्रत पुरस्कारको सूरिकं घुड़ि-कौशरु ने प्राप्त किया रसवत्-कथानक-प्रसरण जिस कविकी कल्पनाकी अतुराईने किया, इस महनीयके नामके 'भारत देशक कवि प्रभु-बन्म अमि' की स्यातिस प्रतिष्ठित किया? सर्व विद्याभार प्रांगणोंमें जिस घय-पुरुषकी कीर्ति परिख्याप्त हुई? सुकविता शक्तिमें ऐसे भासुर-गुणमुक्त तुम हमारे मगर काकिनाडा में आज आए। हे रवीन्द्रनाथ! हे सुकवि सार्वभौम!! यही तुम्हारा स्वागत है ॥४॥

षण्दशके गौरवके रूपमें महर्षि देवेन्द्रनाथके यहाँ उत्पन्न हुए, भारतीयोंकी सन्तुष्टिके रूपमें, सरस कविताके लिए, 'नोवस प्राज्ञ' प्राप्त किया सर्वानुभवनीय विषयोंका वर्णन करके कई काव्योंसे जगत्को भाष्मावित किया तथा ब्रह्मोक्त्य (वदान्त) के विवरण रूप 'गीताञ्जलि' की रचनाकर अन्य वेष्टोंमें भी कीर्ति पाई। ज्ञानमें ही नहीं, ऐश्वर्यमें भी बहूप्यन पाया। ऐसे नव सुधामूर्ति रवीन्द्रकी कीर्तिको सदा ही अभ्युदय प्राप्त हो ॥५॥

भीसारु बन्धन बालुसार ! यनि यम्मे प्यासु पाबिधि बस्
 बार्सि बोस्चेडिबारि बिस्वि सभलो बादम्मु लेके युप
 म्यासंबिचिचि 'मतम्मनंग नोक यद्वैतव यचुन् बगन्
 वा सिद्धांतमु सेयु धम्युडतडेतन्मात्रुडे चुडगन् ॥५॥



एम ए उपाधि प्राप्त प्रसिद्ध व्यक्तियोंको भी 'मसोंबाले बालको!' कहकर सम्बोधन करते और सभामें बिना किसी बाद-विवादके ही—आसानीसे—'घर्म है तो बस एक अद्वैत ही' कह कर सिद्धान्तका प्रतिपादन करनेवाले धर्म्य पुरुष सामान्य हैं ! ॥५॥

८ कौटिल्य-तक्षण

अट्टि कबलम्मु बम कम्बबनेडि बु-स
 मुन गुकबि सुकवि कबित यनि हसिष्णु
 नरमगु भार्यसेनिवाडम्य सुम्ब
 रोमभिनि योधि मगिनत्त नेमिपोषु ? ॥१॥

मत्तिसरसमुत्तति कठिनमु
 स्मितरमुत्तगु पद्यमुत्तु नृत्तिततुत्तदा
 रतुत्तुट बोसमे नाना
 गति विधिहत्त सृष्टि यंब कनबडुनु गवा । ॥२॥

मृत्तुत्तमगु पाक कठिन मै येसगु पाक
 सरसमगु पद्यमु मुबबोसगु मबिकि
 रसिक्कुडगुबानि कोक यघरबे मोड
 मिडुने, कुबयुगमवि मोबमिडक युप्ते ? ॥३॥

पेक्कु गुलमुत्तबे बन्नेकेत्तु कृतुत्त
 नस्पबोयंबु बिड्वांमुत्तरयबोड
 झासबिनु मेपु गन्निग रसिक्कुडेन
 गुमसि बेयुने तड्डीजमोत्तकडेन ? ॥४॥

सरसकबित्व तत्य गत्तिसारविक्कुत्त बसम्बूचि मेष्णु मा
 युिर मेरिमीड सत्कविततोव्यत्तुम्मेत्त सिरबुत्तु ना
 बरमुत्त बात्तु मासिक बुपागति गोत्तुरुत्तबेत्तबड्ड य
 टत्तरसिक्कुत्तैन बुमतुत्तुम्पद्रमुत्तनु मटिपिपकुत्तुत्तनु ॥५॥

८ कालिका स्वरूप

बैसी (उत्तम) कविता मूससे न बन पाएगी, इस बातका मनमें रंज होनेके कारण कुकवि हमेशा सुकविकी निन्दा करता है उसका परिहास करता है। वह व्यक्ति जिसकी पत्नी सुन्दर नहीं है यदि दूसरी सुन्दरी स्त्रीको देखकर हँसे तो क्या होमा ? ॥१॥

अति सरल, अति कठिन और न सरल न कठिन ऐसे पद्योंका कृति समूहोंमें प्रयोग करनेमें दोष कहाँ है ? वद्याकी सृष्टिमें माना प्रकारका वैविध्य क्या दृष्टिगोचर नहीं होता ? ॥२॥

मुमुक्षु हो (सरल शब्दोंसे युक्त) या अति कठिन हो जो कविता सरल होगी वह मनको प्रसन्न करगी ही। रसिक शमको अक्षर ही नहीं कुक्षुमुक्षु भी प्रमुदित करत है ॥३॥

कई गुणोंसे युक्त सुन्दर कृतियोंके अल्पदोषोंकी ओर, विद्वज्जन ध्यान नहीं देते। दाख या सकनेवाला रसिक क्या उसके बीजको बूक देमा ? ॥४॥

सरल कवित्त-शैलीकी पतियों जाननेवालोंसे प्रशंसित माधुर्यसे सम्पन्न कविता सुन्वार्योंके बेसी भारपर विरसित पुष्पमालाके समान है। यदि वह अरसिक और कुर्मतियोंके पस्से पड़े तो मानी पम्बरोंके हाथ पड़ी पुष्प मालाकी तरह व्यर्थ बनेगी। भगवान करे कि सरलकविताकी ऐसी दुर्गति न हो ॥५॥

चिश्रिबभ्रेलाडि चिभारि पोभारि
 गंटसोलयु काधिकारबन्मु
 पगिबि मुकबिकवित पडित ह्वयमुक
 विनिनयत मात्रमुन गरबु ॥६॥

अप्रपरभोक्तमेनवि यम्मु मुकवि
 कवित पडित ह्वयमुक मरगसेयु
 सहज लावभ्यनिघियन चान मगसु
 बास्पकुन्न नोपारबु तक्कुयौने ? ॥७॥

तनकु माल्यु निघदु पदमुकु वञ्चु
 मनुबु बदिमदिकिनि बेत्तियंग माब
 मूस पदमुकु गुप्पिन मुञ्चटगुने ?
 प्रति पदम्मुन रसमुट्टिपडिम गाक ॥८॥

कवितयु वनितयु वनय
 त बलचिवञ्चिन भुवबोदव जेयुनु, न
 ककुवलेक वसात्कार
 पुविघम्मुन वञ्चिनविय पो ! हुःअमिडुम् ॥९॥

छबीली विलासिनीकी मूपुर ध्वनिके समान ही मुकविता कानोंमें पडसे ही पण्डितोंके हृदयोंको मुग्ध कर देती है ॥६॥

सहज रूपमें उभत हो कर (सहज और स्वाभाविक रूपसे कही गई) भी मुकविता पण्डितोंके हृदयोंको मुग्ध करती है। सहज आनन्दयुक्त युवनी यदि भूपण धारण न करे तो उसके सौन्दर्यमें क्या कोई कमी होगी ? ॥७॥

मुझे वस पाँच कोशगत शब्दोंका ज्ञान है, इस बातका परिचय देते हुए अप्रयुक्त शब्दोंका प्रयोग करनेसे कविता सुन्दर बनती है ? उसमें प्रति शब्दका रस भी भरा होना चाहिए ॥८॥

यदि कविता और बनिता स्वयं प्रेमसे आएँ तो आनन्द देती हैं। बिना प्रेमके बबरवस्ती आएँ तो दुःख ही देती हैं ॥९॥



१. नाना राजसन्दर्शनम्

परदेश संपादनरति मीकृ नरेंद्र ।
 परदेश संपादनरति माकृ,
 कसदुत्तम पदाभिसाधमीकृ मरेंद्र ।
 कसुदत्तम पदाभिसाध माकृ,
 सकसन्तुत्य इलोक सक्ति मीकृ
 सकसन्तुत्य इलोक सक्ति माकृ,
 मनुमाल वर्तनबनुमु मीकृ मरेंद्र ।
 मनुमार्ग वर्तनबनुमु माकृ,
 मीकृ राजपदम् माकृनु शबिराज
 पदम् कसदिकेदु गोदव क्षेत्रे
 यान साम्प्रतिषिञ्च मार्गिषुटोप्यरे ?
 मुद्, कृष्ण माच भूवरैष्य ! ॥१॥

कठिनम्मसगु रास्तु करपिकट्टिम
 राममजनाक्यम्मसे पडककाये,
 शक्तिन मात्रान हनुवु करण जेय
 जालिन शक्तिनीटि स्मानमाये,
 मुदिकियुगुदकनि इदु बेदि मेलुदुसे
 याकोत्र कडुपु कडडमाये,
 जमुबिच्छे बेनुट पदियाधसनुमट्टि
 स्वप्नम्मसे धनार्जनमुसाये,
 शोनिनश्रिटि गोपालविभुदु शोर्षे
 भरस मीसाटिकृष्टमुम् माकृ इर
 तरमुसे युंइ जेयु मिततरिनि गीति
 साम्प्र ! श्रीमुद् इष्ण्य याचेंद्र भूय । ॥२॥

१. नाना राजसन्धर्मानसे

[एक बार कवि जब तेमगुके धर्मशालके पास गए थे तब उन्होंने इस प्रकारका विनय-पत्र लिख भेजा था।]

हे राजन् ! परदेशोंके सम्पादन (जीतने) की रति (आसक्ति) आपको है तो हमें परदेशोंमें सम्पादन (कमाने) की। उत्तम स्थाओंकी अभिलाषा आपको है तो हमें उत्तम धर्मोंकी। सबसे प्रशंसित नीतिकी इच्छा आपको है तो हमें सबकी प्रशंसाके पात्र क्षमोंकी। मनु महाराज द्वारा निर्धारित मार्गपर चलना (नियमोंके अनुसार कार्य करना) आपको उचित है तो जीवन-निर्वाहकी पद्धतिका अनुकरण करना हमारे लिए। आपको राजपद है तो हमें कविराज-पद है। फिर अन्तर किसी बातमें नहीं है। अतः हे मुद्गुङ्गण याचभूवरेण्या ! समानताका गौरव देकर, सत्कृत्य करना समुचित है न ! ॥१॥

।

कठिनतर पत्थर बिछाकर बनाए रामभक्तिका (पथरीला) फर्श ही हमारे लिए विस्तार बन गया। स्पर्श-मात्रसे शरीरको बका देमेवाले ठण्डे पानीमें स्नान करना और कन्धे-पकके गरम-गरम भातसे ही भूखे पेटको भरना पड़ रहा है। प्रभुने १११६ रुपए* ही दिए, ये ही स्वप्न धर्मार्जनके साधन बने। इन सब कष्टोंको प्रभु गोपालने दूर किया और ऐसे कष्टोंका सामना करना न पड़े ऐसा कर दो न हे कीर्ति-सान्द्र ! हे मुद्गुङ्गण याचेत्र भूपति ! ॥२॥

* आन्ध्र प्रदेशमें पुरस्कार देते समय ११६, १११६ या ५८ २९ रुपयोंकी रकम देनेका रिवाज है।

परबेशमुसु बिष्यतरबेशमुलगाप
 बरस प्राममुसु कापुरमु गाग,
 बरगेहमुसु सौख्यकर गेहमुसु गाग
 बरस यन्नमु बुष्टिकरमु गाग
 बरसञ्जनाबद्धुसु परम बन्धुसु गाग
 बरससपबसु सपबसु गाग,
 बरस कष्टमुसुसुम्भरमुबारसु गाग
 बरसेसुसु गार्थतत्पसु गाग,
 जेसि पुष्टिबिनट्टि जेजेस पेह
 पंडितप्रीति नोप्युमीबट्टि नृपति
 मयुसु कौरु सृजयिप मरबिपोये
 नेमननुमु ? मह, कृष्णेन्द्र ! बिधिनि ! ॥३॥

ए रामु कबिरामु नेनुंगु मेस्किबि
 मुरेगजेसे नी मुरियसु,
 ने रामु कबिरामु जे राजित बसा
 बघानम्मु जेयिबि पूने पीति,
 ने रामु येबान्त सार बोधक सुप्र
 बन्धमुसु रचयिबि यन्ने केकटे,
 ने रामु 'सर्बबिद्याराज' टबुनु ग
 धुलजे समुति गाबि मिचे,
 मट्टि विठ्ठलुमार भूपाप्रगथ्य
 पूर्वद्वैतपुष्परसि ! यो मुह कृष्ण !
 स्वागतबुग बघानबीगदय्य !
 धनत बिरपति बँकट कबुसकिपुडु ॥४॥

परवेष्ट ही हमारे लिए दिव्यतर देश बने, पराये ग्राम ही निवास-स्थान बने। परगृह ही सुखदायी घर बने और पराया भोजन ही पुष्टिकर बना। पराये सञ्जन ही परम बान्धव बने परायी सम्पत्ति ही सम्पत्ति बनी। पराये जन ही सुख दुःखमें हमारी देख-रेख करनेवाले और हमारे कार्योंमें सत्पर बने। इस प्रकार हम जैसे जनोंकी सृष्टि करनेवाला वह चतुरानन हाय! पण्डितोंपर प्रेम रखनेवाले आप जैसे राज ध्येष्ठोंकी सृष्टि करना भूल गया। क्या कहें उस विधासाको हे मुददुकृष्णेन्द्र ! ॥३॥

जिस राजाने इस नगरमें कविराजको करिराजपर बैठाकर जुस्तुन निकलवाया, जिस राजाने कविराजसे घाताघान करवाकर प्रसिद्ध पाई, जो राजा बेदान्तसार बोध करानेवाले प्रबन्धोंकी रचना कर प्रसिद्ध हुआ जो राजा 'सर्व विद्याराज' कहलाकर कवियोंसे प्रदासित हुआ ऐसे विद्वान् कुमार भूपति ध्येष्ठकी पूर्वपुण्य राशि बने हे मुददुकृष्ण ! स्वागत सहित इन तिरपति-बेकट कविको अब दर्शन दो न ! ॥४॥

कवुसबलन बभुवुसुक्कु ब
 मुबुल बसन गबुसकिस्नु सूरियशमु सं
 मबमहु गान गबुल ब
 मुबुलस्याबरमु तोड बूजिन्नु नुपा । ॥१०॥

ई बिययवतपु बम
 के बिशबमु बेरे सेप्पनेल ? ययिन मी
 ना बैदिक चावत्त
 बोबिघमुन चायनेसे निपुडु नुपासा ! ॥११॥

कवियोंसे प्रभुओंको और प्रभुओंसे कवियोंको मूरि यथा सम्प्राप्त होता है। अतः हे राजन् ! प्रभुजन, कवियोंकी अत्याघरसे पूजा करते हैं ॥१०॥

ये सब बातें तो आपको ज्ञात ही हैं। अतः उन्हें बार बार क्यों कहें ? पर हे राजन् ! हमारी वैदिकी छान्दसी प्रबुत्तिने हमसे इतना लिखवाया ॥११॥

१० नाम साम्यम्

कासुचोप्युन नितगा मार्बनमु चेषि
 तैतवेष्चिननु माकिस्तसेनु,
 गडगडत्ताडि निन् गामंग नेतेनु
 गान घोयिनमम्मु गांशुटरिदि,
 प्रीसितो नीकु नपितु रैतेन
 माकिस्तयिष्चि न्नेतुरैतोयनुषु,
 सेविधि नीकु बाधितमुक्तिगुह
 सेब काविधिननु माकु गासुनीद,
 बेयिमाटलफसमेमि ? पेदसौकक
 टैननु मवृष्टमुसु बेदलै चेलुंगु
 सरसतिरुपति बेकटेशवर कबीर
 शरण ! तिरुपति बेकटेशवर ! नमोऽस्तु ॥१॥

मासिचेबेलोको कासुसाजिपग
 शुद्धबाधि प बिस्फूति तगर,
 कसिचेबेलोको संघमिष्चिनवारि
 बलपातिविद्यम्मु बयसु पडग,
 द्विसिचेबेलोको क्कमिष्चि मूपकोटि
 बेदकोमटिसेट्टिविद्यमु दोप,
 बसिपिचेबेलोको पबताप्रम्मु पे
 बटसाडेडि घोयसाटि बैलिय,
 माकु निविपमियुनु नरवु नडकसञ्चु
 दोषु मोचितमुन कमि दोषु मोषको ?
 सरसतिरुपतिबेकटेशवर कबीर
 शरण ! तिरुपति बेकटेशवर ! नमोऽस्तु ॥२॥

१० नाम-साम्य

एक-एक पैसे (अधर्मी) के हिसाबसे इतना कमा चुके हो तुम, पर जितना भी कमा जाएँ, हमारे हाथमें एक पैसा भी नहीं है। लोग घर-घर बाँपते हुए, तुम्हारे दर्शनोंको आते हैं पर हम किन्हींके दगनक लिए आते हैं तो बिरलेके ही दसन मिलते हैं। तुम्हें तो जितना भी हो, सब सप्रेम समर्पित करते हैं पर हमें थोड़ा बेकर भी बहुत मानते हैं। तुम्हारी सेवा कर तुम्हारी अभीष्ट वस्तुएँ तुम्हें दते हैं सेवा करनेपर भी हमें एक पैसा तक नहीं वेते हैं। बहुत अधिक बातें कहनेमें क्या सार है? माम एक होनेपर भी अवृष्ट तो अलग-अलग हैं। सरस तिरुपति-बेकटेश्वर कवीन्द्रोंको धरण देनेवाले हैं तिरुपति बेकटेश्वर! तुम्हें नमस्कार है!!॥१॥

गुण शक्तिधकी बिस्फूर्तिके सोभायमान होतपर भी पैसे क्यों कमाना चाहते हैं? रिपकत देनेवालोंपर अधिक ध्यान क्यों दते हो जिससे तुम्हारे पक्षपातका विधान प्रकट हो? अरुण बेकर राजाओंको क्यों सताते हो जिससे महाबैश्यके गुण दिखाई दें? शिकार खेम्नवाले किरातक समान होकर, पर्वत शिखरपर क्यों रहते हैं? मुझे तो ये सब परिहासकी बातें मगती हैं। सरस तिरुपति-बेकटेश्वर कवीन्द्रोंको धरण देने वाले हैं तिरुपति बेकटेश्वर! तुम्हें नमस्कार है!!॥२॥

११ /समस्या-पूर्ति

‘ गानमुर्धटि विद्यनिकगानमु ।

ज्ञानविहीनुरु बनुपु भानुसबन्पुनु, रागशुम्पुसौ
मौमुक बन्पु, पूरफणिमडलि बन्पुनु सर्बपक्षिसं
ताममु बन्पु, गुरलन्नु बन्पु, मृगम्पुस बन्पु, हुनेष नी ।
गानमुर्धटि विद्य निक गानमु बेकटहुष्मभूकरा । ॥१॥

‘ रागमुससोन मेघमत्कारनग । ’

धेष्टमुकु मूहु बेकट हुष्मभूप ।
मायमुससोन नैरावण बनग ।
योगमुससोन कविका योगमनग
रायमुससोन मेघमत्कारनग ॥२॥

[शीपकके सम्बन्धमे भागु पद्य]

‘ ना सोबर्षुल दान धर्मपटिमन् ना तडि गाभीर्यवि
घा लपन्नतथे क्षयिचितिवि मेना मुभे नीकोत्तिथे
गासि क्षेचितिब्रोहु मनु क्षसि धी काकम्पुनन् शीपने
ता सविपवध्ने गन्योनुमु सीताराम भूपालका । ॥३॥

‘ दिव्ये वेसुंगुधुडिन गदिन् मनुबकल बोधे श्रीकटुस ।

‘ जघनमहु मोक्कडु पुजगुडु सैपगरानि वेहनस
निम्बटिकग मोहन तरुणीमणि गूचि जपिधुतुंड ना
जघनि येगुबेधे बिससत्कबरीभर नव्यकान्तिधे
दिव्ये वेसुंगुधुडिन गदिन् मनुबकल बोधे श्रीकटुस ॥४॥

११ समस्या-पूर्ति

‘गान-जैसी विद्याको देख नहीं पाएँगे ।

ज्ञानबिहीनोंको और ज्ञानियाको भी सन्तुष्ट करनेवाला रागशून्य मुनियोंको भी सन्तुष्ट करनेवाला क्रूर सर्प समूहको सर्वे पक्षि-सन्तानको, वृक्षोंको और मृगोंको सन्तुष्ट करनेवाली गान-जैसी विद्याको देख नहीं पाएँगे हे वेंकट कृष्ण भूपति ! ॥१॥

‘रागोंमें मेघ मल्हार है ।

हे वेंकट कृष्ण राजा ! वस्तुएँ तीन थोथ ह हाथियोंमें ऐरावत, योगमें मन्विकायोग और रागोंमें मेघ मल्हार ॥२॥

[वीपके सम्बन्धमें बापु पद्य]

मेरे सहोदरोंके (नक्षत्रों या मणियों) वान-धर्मकी-पटिभा को और मेरे पिता (सागर) को गम्भीर विद्या-सम्पत्तिसे हरा चुके मात कर चुक। तुम्हारी कीर्तिके कारण मैंने बड़ा दुःख पाया (बह कीर्ति) मुझसे बढ़-बढ़ गई। हे सीता राम भूपति ! यह कहते क्षिति इस समय वीप वन तुम्हारी सेवा करने आया है ॥३॥

वीपकके जलते रहनपर भी कमरेमें पारा तरफ अँधेरा छा गया ।’

मौबनके समय कोई बिट (चारपुख्य) अक्षय्य वेदनाओं से ध्यापित होते, किसी तरुणी मणिना नाम जपता रहा। उस युवतीके भानपर, उसक धामायमान नवरोधर (वर्षी) की नभ्यकान्तिपोंछ वीपकके जलते रहनपर भी कमरेमें पारों तरफ अँधेरा छा गया ॥४॥

‘मम्याहू मे शशिमण्डल कवन्तिं कूरात्मना राहुणा ।’

पद्मभूहमुपागते गुरुवरे तस्मिन्प्रबिष्टं रया

ञ्जूर पार्वसुत भघान गदया दौश्लासनि कूरया

बुध्वा तद्वन गदाविकन्ति प्रोचुमिथो निर्बरा

‘मध्याह्ने शशिमण्डलं कवन्ति कूरस्मना राहुणा’ ॥५॥



‘मध्याह्न समयमें ही राहुने शशिको कवसित किया।’

गुरुवरकी रक्षामें सम्पन्न पद्मव्यूहके समीप आकर उसमें प्रवेश करनपर पार्श्व सुत (अभिमन्यु) पर सद्यमणकुमारने क्रूरताके साथ गदा प्रहार किया। उस गदा प्रहारसे विकल अभिमन्यु कुमारके मुखको बखकर, देवताओंने सोचा कि यह मध्याह्न कालमें ही राहुने शशिको कसे कवसित किया ? ॥१॥
